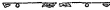




इतिहास-ग्रन्थमालाका २रा ग्रन्थ ।



नादिर शाह



गवेषणा-पूर्ण सचित्र जीवन-चरित्र ।



लेखक

श्रीयुत मथुराप्रसाद दीक्षित ।



प्रकाशक

रामलाल वर्मा, प्रोप्राइटर—

"वर्मेन प्रेस" और "आर० एल० वर्मेन एण्ड को०,"

१०१, अपर पीतपुर रोड, कलकत्ता ।



⇒ पौष, सं० १९८० वि० <

57

प्रथम संस्करण—२०००] १९९३ [मूल्य—१।।।] वसवा ।

छानहरी रेखनो किल्ड २।। वसवा ।



मुद्रक

राम लाल वर्मा

वर्षन प्रेस,

कलकत्ता



कैसे दिन थे ? योह ! उनको तो कल्पना करतेही सारा शरीर रोमान्ति हो जाता है ! छानो कहल बली है ! मयसे नहीं, वरन् पत्याचारोंकी कल्पना-मूर्ति देखकर । २०वीं शताब्दिके पश्चिमी भारतका इतिहास पश्चिमेके बाद, एक विचित्र चित्र हृदय-परपर खिंच जाता है, जिसका प्रत्येक स्थान, भारतके अव्योच वास्तवों और कोमलताओं ललनाओंके लला रससे रङ्गा हुआ है—जिससे इतिहासके पन्थे-के पन्थे सराबोर हो रहे हैं !

यह किसकी कस्तूर है ? भारतकी पवित्र भूमिपर ऐसा पिघाच-काण्ड किसने किया है ? यह गद-रक्त-पिघाच मानव-पिघाच कौन है ? नादिरशाह ? गडेरिफेकी औलाद नादिरशाह ? नहीं, नहीं, बाहोंका बाह नादिरशाह !

नादिर तो हुसैनसिंह था ? उसने तो अपने मस्तकपर, पशुपाल-व्यापिनी कठोर सापनाके बाद, सफलाका मुकुट पहना था ? नहीं, उसका जीवन एक दुर्बोध्य पेशी है । यदि एक चोर बह, उद्योग द्वारा, छुड़से महान् पनता है, तो दूसरी ओर मद्रासके प्रधान-गुण, समर्पिता और उदारताको, पैरेनि हुकराकर अपनी पार्थनिक प्रवृत्तियोंको परिहार्य करता है । लोगोंने उसे चर्चर कहा है, पश्चिमोंने आत्माचारी बताया है और इतिहासकार ? इतिहासकारोंने तो उसे, कभी न हल होनेवाली समस्याका अवतार बताया है ।

इतिहास ? आह ! इतिहास बड़ा धारा विषय है ! हमारी आँखोंके सामने, आसीतकी बालें लाकर, यह, जीवन-पथपर अन्नसर होनेसे पहले, हमें

सावधान और सतर्क कर देता है। सतरेकी आईमें गिरनेसे बचा लेता है और पद-पदपर चेतावनी देता है। इसके सिवा, इतिहास, सबसे बड़ा उपकार यह करता है, कि संसारके भूलपूर्ण लक्षणोंके गुरु होनेवाले आदर्श व्यक्तियोंकी विषय विद्वान्मालीपर प्रकाश डालकर, हमें, अपने जीवनको उन्नत बनानेका सहायता रास्ता दिखाता है। हमारे मानस-क्षेत्रमें उच्चाभिलाषायों और महदाकांक्षाओंकी जड़ उमरता है।

❀ ❀ ❀ ❀

इसो इतिहासकी कृपासे आज हमें नादिरकी याद आती है। वह विधर्मी और विदेशी था; पर इससे क्या? वह आदर्श तपस्वी था। एक दिन, वह बचपनकी अवस्थामें, दोनातिथीन और दाने-दानेके लिये मुहताज बना हुआ "कजवीन"की गलियोंमें भटकता फिरता था, कि सहसा उसके कानोंमें उसकी सो तथा बच्चोंका आर्त्तकन्दन सुनाई दिया। वह सो रहा था, सहसा जाग पड़ा! अब क्या था? उसी समय कमर फल और ताल टोककर, वह, अन्तिके अखाड़ेमें कूद पड़ा। थाभार्त्त आर्यो, बिस्वत वदन बनाये अनन्त आश्चर्यों भी आर्यो; पर वीर नादिरने किसीको न गिना। अन्तमें जीत उसीकी हुई। वह धनका दरिद्र अथथ था; पर उसकी यह पहली दरिद्रता, उसकी आन्तरिक दरिद्रताकी घोटक नहीं थी। उसके हृदयमें संसार-चासिनी आकांक्षायें भरी हुई थीं। समय आया, कि वे उभर उठीं। उसके पिता था नाते-रिस्तेदारोंने कमी दस बातका अनुमान न किया था, कि एक दिन सारा हिन्दोस्तान, बलूचिस्तान, अफगानिस्तान, ईरान और अरबिस्तान, इस नगरथ नादिरके नामसे थराया करेंगे, और वह इतनी विराट् जन-सख्याका भाग्य-विधाता बनकर, उनका शासन किया करेगा।

नादिर कापुष्य नहीं था। वह वीर था और अपनी नोरताके लिये आदर्श था। उसने अपने जीवनको निरन्तर उद्योग, अथिराम परिश्रम और अथल आत्म-विद्यासके आधारपरही, इस सामान्य परिस्थितिले, इतने ऊँचेपर पहुँचाया था। उसमें कितनेही सद्गुण थे।

❀ ❀ ❀ ❀

पर जहाँ अच्छाई होती है, वहाँ बुराई भी कम नहीं होती। दुःख है, नादिरने अपने इस महती उन्मत्तिका सदुपयोग नहीं किया। उसने अपने बाहुबल, बुद्धिबल और मनोबलसे, पार्थिव जगत्पर तो विजय पाही थी; उसने, लोतेजी, अपने किसी शत्रुको सिर तो न उठाने दिया था; पर अपने आन्तरिक शत्रुओंपर विजय पानेकी उसमें कमला व थी। उसने अपने मनकी दुर्बिनीत प्रवृत्तियोंका वचिष्ठ रूपसे दमन नहीं किया था। इसीसे जब उसकी क्रोधान्नि प्रवृत्तिसहित हो उठती थी, तब उसका संवरण करना अश्लाभ्य हो जाता था। क्रोधान्ध नादिरसे जो बच रहा, नहीं गृणीमत है। अन्धका उसने अभर्ष और अत्याचार भी कम नहीं किये। युद्धकी आँखें विकलता सेना, चाचाकी हत्या और किलनीही निरपराध आत्माओंका खून करा आसना उसके परिपक्वी कारिमाके कभी न मिटनेवाले बड़े-बड़े घण्टे हैं।

पर कवि-गुल्ल-सितक योस्यामी गुलसीदासजीने कहा है,—

“जड़-चेतन गुण-दोषमय, विश्वकीन्द् करतार ।

सन्त-ईस गुण गह्विं पय, परिहरि वारि-विकार ॥”

ठीक इसी दृष्टिसे, नादिरकी शीवनीसे, हमें उसके गुणोंका मूल्या और दुर्बुद्धोंका त्याग करना चाहिये; परन्तु दुर्बुद्धोंका त्याग करनेका अर्थ यह नहीं है, कि हम उन्हें भूल जायें, वरन् उन्हें सदा स्मरण रख, उनसे सावधान रहें। भूल जानेसे जो सम्भव है, कि दोष हमारे अन्दरही प्रवेश कर जायें; पर वाद रखनेसे, हम कभी उन्हें अपने पासतक न फटकने देंगे।



साम्-भाषाके भाषकारमें, तिस प्रकार, प्राचीन अथवा अर्वाचीन, वैज्ञानिक अर्थोंका सर्वथा अभाव है, उसी प्रकार ऐतिहासिक अर्थोंकी भी कमी है और यह कमी क्या किसी लङ्कम और हिन्दो-सेवीको अक्षरती व होगी? हम अपनेको इस भाषाकारकी कमी-पूर्ति करनेवाला हमी तो नहीं कहते, पर इतना अवश्य बर्देगी, कि हमारे परिश्रमसे यदि मातृभाषाकी कुछ भी सेवा हो सके, तो हम उससे कभी विरुध नहीं होंगे। इसी

विचारसे प्रेरित हो, हमें भी ऐतिहासिक ग्रन्थोंका अभाव जुरी तरह खलता है। हमने अथवाक 'फनाथ-केवरी राजा रघुवीरसिंह,' 'मुस्लिम-महिला-रत्न' 'कमाल-पाशा' आदि कई ऐतिहासिक पुस्तकें प्रकाशित की हैं। नादिर-शाह सम्बन्धी एक सर्ना ग सन्दर और प्रामाणिक ग्रन्थ प्रकाशित करनेकी हमारी बहुत दिनोंसे बड़ी अभिलाषा थी। अतः हमने इस कामके लिये अपने मित्र श्रीसुत मथुरा प्रसादजी दीक्षितसे अनुरोध किया। उन्होंने भी बड़े सहर्ष स्वीकार कर लिया और बड़े परिश्रमसे यह ग्रन्थ तैयार कर हमारी अभिलाषाको बहुत खर्चोंमें पूर्ण कर दिया है। परन्तु इतिहास-ग्रन्थोंकी कमीको हमारा यह प्रयास कुछ पूर्ण कर सकेगा, यह कहना विटम्बना है, तथापि इसमें कोई सन्देह नहीं, कि पुस्तक योग्यतापूर्ण सिद्धी गयी है। लेखक महोदयने इसके लिखनेमें, विषयकी प्रामाणिकताके लिये काफी ज्ञान-बोध की है। लिखनेका ढंग भी अच्छा है। भाषा प्राणजल है। नादिरके ऊपर, वैदेशिक इतिहासकारों द्वारा लगाये हुए कलङ्कोंको, बड़ी योग्यतासे खसिटा किया गया है। तथापि हम कुछ न कहेंगे। इसकी अच्छाई-बुराईके निर्णयका भार मर्मज्ञ समाजोचकों और अविज्ञ पाठकोंपरही छोड़ा जाता है।

आशा है, इतिहाससे प्रेम रखनेवाले हिन्दी-पाठक, इसका समुचित आदर कर हमारा कृतज्ञाह बक्ष्येंगे।

निवेदक

—रामलाल वर्मा।

नादिर शाह



श्रीमान् अमार्वाधीश ।

राजा हरिहरप्रसाद नारायणसिंह बहादुर, ए० वी० ई०

Burman Press, Calcutta.

पुष्प प्रसादी

श्रीमान् अमोबाधोरा

राजा हरिहरप्रसाद नारायणखिंद वडाडुर
जो० पी० ई० ।

मान्यवर !

“राजा प्रजारण्णनात्”—यस, थापने इसी
एक मुद्रपर मुग्ध होकर, इन पक्षियोंका लेखक,
आपके कमनोय कर-रजतोंमें, प्रस्तुत पुस्तक
समर्पणकर, प्राया करता है, कि प्राय थापने
व्याभाविक वीक्षण-रुनेदले इले सदर्प फजोकर
करेंगे ।

विनीत,

मशुराप्रसाद दीक्षित ।



जामुना

महली परिवेद ।

जन्म और वंश-परिचय ।

पश्चिम महामहादेशके पश्चिम भागमें 'पश्चिमिया' नामक एक देश है। इतिहासमें यह देश 'ईरान' और 'फारस'के नामसे भी प्रसिद्ध है। इसीके अन्तर्गत 'खुरासान' नामक एक परम प्राचीन एवं प्रशस्त प्रान्त है। इसी प्रान्तके 'अहवाज़' नामक नगरके कुल उत्तर, 'कजवीन' ग्राममें इस ग्रन्थके नायक, खुरवीर, साहसी एवं दृढ़-प्रतिष्ठ 'नादिर कुली'का जन्म, सन् १६८७ ई० में हुआ था ।

नादिरके पिताका नाम 'इमाम कुली बेग' था। वह अहवाज नगर-निवासी 'अबामवलनास' नामक कुलका

एक बहुत ही साधारण व्यक्ति था। पर 'शेख अली हाजी' लिखित नादिरके इतिहासमें, यह बात लिखी हुई है, कि नादिरका पिता, 'पोस्तीन शेख' अर्थात् मोची था। पर इस कथनपर सहसा कोई विश्वास नहीं कर सकता। कारण, शेख अली हाजीको नादिरके साथ द्वेष था। इस द्वेषका कारण यह था, कि शेख अली हाजीका जन्म शाहके मन्त्री-कुलमें हुआ था। किसी विषय-विशेषके सम्बन्धमें नादिरके कोप-भाजन-धननेके कारण शेख अली हाजीके कुलका बह पद जाता रहा। वहीं तक नहीं, पर बात इतनी बढ़ गयी, कि शेख अली हाजीको, परशिया छोड़ना पड़ा। सदाके दीन-रक्षक, अतिथि-पोषक भारतमें उसे भाग खाना पड़ा।

'मिरजा मेहदी'ने नादिरकी जो तयारीख लिखी है, उसमें उसने लिखा है, कि "नादिर एक साधारण गढ़ेरियेका लड़का था।" शायद इसी कथनके आधारपर कतिपय अङ्गरेज इतिहासकारोंने भी नादिरको 'Shepherd-boy' अर्थात् गढ़ेरियेका लड़का लिखा है। बंगला 'विश्व-कोष' के प्रणेता-बादू नगेन्द्र नाथ बसुने भी नादिरके पिताके सम्बन्धमें लिखा है, कि "वह भेष-पालक था"। सम्भवतः इसी कथनके आधारपर उन्होंने अपने 'विश्व-कोष' में यह भी लिख दिया है, कि अपने पिताके कतिपय भेष बेचकर उसने कुछ सेना संप्रदा की थी। पर जेम्स क्रोजर-रुत 'हिस्ट्री आफ नादिरशाह' में, जो नादिरशाहके सम्बन्धमें एक बहुत बड़ा प्रामाणिक ग्रन्थ माना जाता है और जिसका निर्माण, नादिरशाहकी मृत्युके छः वर्ष

पूर्व ही, अर्थात् १७८१ में हुआ था, इस बातकी कहीं भी चर्चा नहीं पायी जाती है ।

आख्यर्चकी बात तो यह है, कि जहाँ शेर अली हाजी तथा मिरजा मेहदोसे लेकर नादिरशाहके आज तकके सभी जीवनी-लेखकोंने प्रायः सर्व-सम्मतिसे इस बातको स्वीकार किया है, कि अपने प्रकृत-पिता इनाम कुली बेगकी मृत्युके पश्चात् कलात गढ़के अधिकारी 'बाबा कुली बेग'ने नादिरकी माँसे निकाह कर, नादिरको अपने साथ रख लिया, वहाँ जेम्स फ्रेज़र-हल 'हिस्ट्री आफ़ नादिरशाह' में इस बातकी कहीं चर्चा तक नहीं । उसने बाबा कुली बेगको ही नादिरका प्रकृत पिता लिखा है और वहाँसे उसकी जीवनी आरम्भ की है । इससे मालूम होता है, कि नादिरशाहके मूल-वंशके सम्बन्धमें उसे तनिक भी ज्ञान नहीं था और न कभी उस ओर उसका ध्यानही गया । यदि ऐसी बात नहीं होती, अर्थात् यदि वह जानता होता, कि फ़ारसी भाषाकी, नादिरशाहके सम्बन्धमें प्रायः सारी तथ्यात्मिकोंमें, नादिरका बाबा कुली बेगका वृत्तक-पुत्र होना लिखा हुआ है, तो कम-से-कम, पण्डित-स्वरूपमें ही सही, उसने इस बातका ज़िक्र तो उद्धर कर दिया होता । पर वह ध्यानमें रखते हुए, कि नादिरशाहके सम्बन्धमें उसकी 'हिस्ट्री' एक बहुत पुरानी और अङ्ग्रेज़ी भाषामें सर्व-प्रथम पुस्तक है, उसका वह 'मीनावलम्बन' क्षम्य है ।

परशियाके बादशाह 'शाह इस्माइल अफ़्ग़ानी'के राजत्व-कालमें तुर्कीकी सात जातियाँ, तुर्कसे निकलकर ख़ुरासान-प्रान्तमें चली आयी थीं । उन्हीं सात जातियोंमें 'अफ़्-

सर' जाति भी एक थी। यह जाति अहवाज़ नगर तथा इसके पार्श्ववर्ती ग्रामोंमें बस गयी थी। अहवाज़ नगरके निकट 'कलात' नामक एक सुदृढ़ दुर्ग है। खुरासनपर तातारियोंके बार-बार होनेवाले आक्रमणोंको रोकनेके लिये इस दुर्गका निर्माण हुआ था। यह दुर्ग इतना सुदृढ़ तथा सुरक्षित था, कि बीस-बीस हजार तातारियोंके आक्रमणको, इसमें रहनेवाले, पाँच सौ योद्धा, सहजमेंही टाल दे सकते थे। बाघा कुली बेग इसी दुर्गका अधिकारी, अर्थात् अफसर था।



दूसरा परिच्छेद ।

बाल्य तथा किशोरावस्था ।

इससे पहले बात पहलेंही कही जा चुकी है, कि नादिरके प्रकृत
अपिताका नाम इमाम कुली बेग था । वह परम दरिद्र
और दाने-दानेको मुहताज था । बहुतेरे इतिहासकारोंके मतानु-
सार वह मेड़ोंको पालता तथा उनकी आयसे अपनी जिनगी
बसर करता था । अतएव नादिरको भी भाग्यसे ही किसी
दिन भर पेट भोजन मिल जाता । पर यह दरिद्रिय सदा दृष्य
नहीं है । दरिद्रताकी गोद प्रायः उर्वरा और उपजाऊ देखी जाती
है । सुप्तकी सुकोमल गोद जहाँ मनुष्यको सुपुति व्यवस्थाकी ओर
ले जाती है, वहाँ दरिद्रताका अक्षुभ्य मनुष्यको सज्जन और सचेत
बनाता है । यदि यह बात न होती, तो निर्बल नेपोलियन, साधन-
हीन मिन्वाजी, कमज़ोर कलाह्व तथा बलहीन वाशिंगटन आदि
इस विराट् विश्व-चाटिकामें अपनी कीर्ति-छत्रिका इस प्रचुर
रूपमें, प्रसार करनेमें कदापि समर्थ न होते ; प्रस्तुत पुस्तकका
नायक, नादिरशाह भी ऐसेही व्यक्तियोंमें एक था । जिस समय
एक ओर, जीवनके प्रारम्भिक कालमें, उसकी दीनता, दरिद्रता
और भरण-पोषणके लिये उसकी औरोंकी मुहताजगीकी ओर हम
विचार करते हैं, तथा दूसरी ओर उसके जीवनके अन्तिम भागके

कुछ पूर्वही, तुर्किस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, परशिया और हिन्दुस्तान के एकाधिपत्य-दण्ड उसके हाथोंमें देखते हैं, तब सहस्र चित्त विस्मित तथा हृदय निस्पन्द हो जाता है। कहना पड़ता है, "ईश्वर तेरी लीला विचित्र है; तेरी गति अनवगत है! राजासे रङ्ग और रङ्गसे राजा बनाना तेरे वार्ये हाथका खेल है!"

शैशव कालमें नादिर बड़ा साहसी, दुष्ट, जिलवाड़ और हठी-प्रकृतिका बालक था। सारा दिन वह भेड़ोंको चराता, लड़कोंके साथ खेलता-कुदता, गाली-गलौज, दङ्गा-फ़साद और मार-पीट करता था। जिस बातके लिये वह हठ करता, उसे पूरा करके ही छोड़ता था, कभी-कभी अपने अप्रतिम साहससे वह अपनी औकादसे चौगुना काम कर बैठता था। जिसको वह, क्रोधके वशीभूत हो, मारना-पीटना शुरू कर देता, उसे बड़ी निर्दयता और क्रूरतापूर्वक मारता-पीटता था। पर स्थायही अपनी चिकनी-चुपड़ी बातोंसे, हेल और मेलसे वह लोगोंको अपने क़ाबूमें लानेकी करामातको भी खूब जानता था। जोवनके आदि कालसेही उसमें कुछ ऐसे विलक्षण तथा विशेष गुण थे, जो उसके समुद्रज्वल और सुविशाल भविष्यके परिचायक थे। जो सब गुण अथवा लभाव उसके जीवनके आदिकाल बाल्यकालमें थे, यह देखा जाता है, कि वेही सब गुण उसके जीवनकी प्रौढ़ावस्थामें भी विद्यमान थे। हाँ, उनमें कुछ शिष्टता तथा सुधार अवश्य हो आये थे।

नादिरके निर्धन पिताका देहान्त, उसके बाल्यकालमेंही होगया। इस दुर्घटनाके पश्चात् उसकी विधवा माँसे, अहवाज़

नादिरशाह

नगर-निवासी कुलांत दुर्गके अधिकारी, बाबा कुलीने निकाह कर लिया और उसको अपने घर ले आया। बालक नादिर भी अपनी माँके साथ हो लिया तथा बाबा कुली उसे अपनी पहली स्त्रीसे उत्पन्न पुत्रकी दृष्टिसे देखने लगा। वस, वहींसे नादिरके भाग्य-चक्रने पलटा आया।

यहीं नादिरका विवाह हुआ और उसके बादसे उसके भाग्य-चक्रमें परिवर्तन आरम्भ हुआ। नादिरकी प्रतिभा, पराक्रम, तथा शौर्य और वीर्यपर विमुग्ध एवं आश्चर्य-चकित हो, बाबा कुलीने अपनी प्रथम स्त्रीसे उत्पन्न पुत्रीके साथ नादिरका विवाह कर दिया। वह कन्या 'शाह सुल्तान हुसैन शफ़ी' की पौत्री थी। इस स्त्रीसे नादिरको एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसका नाम 'रजाकुली बेग' रखा गया। दिन-रात निपट निर्धनतामें पड़े हुए नादिरके लिये यहाँसे उन्नतिका द्वार खुल गया। उसके दारिद्र्यकी दुःखद रात्रि सुख-सूर्यके उदित होते ही विलुप्त होगयी। नादिरके दिन अब सुख-बैगसे चलने लगे! इसी बीचमें बाबा कुली बेगका देहान्त होगया। इसके थोड़ेही दिन बाद नादिरकी स्त्री, रजा कुली बेगकी माँका भी देहान्त होगया। कुलांत गढ़पर अपना 'पकाधिपत्य' बनाये रखनेके लिये, अर्थ-लोलुप नादिरने बाबा कुलीबेगकी दूसरी पुत्रीसे निकाह कर लिया। इसके गर्भसे 'नसिरुल्लाह' नामक एक परम प्रतापी पुत्र पैदा हुआ। उसीकी शादी हिन्दके शाहनशाह 'मुहम्मदशाह' को लड़कीसे हुई थी। परमात्माकी अपरिमेय लीलाका पता यहाँपर पूर्ण रूपसे मिलता है। कहीं तो निर्धन नादिरका

पुत्र और कहाँ भारत-सम्राट्की पुत्री ! “कहाँ राजा भोज और कहाँ भोजवा तैली !” इस परस्पर विरोधी सम्यन्धका संगठित होना हम यहाँ सम्यक रूपसे देख रहे हैं ।

नादिरके बाल्यकालीन बातों और घटनाओंका विस्तृत उल्लेख प्रायःकिसी भी इतिहासमें नहीं मिलता । और मिले क्योंकर ? कौन जानता था, कि निर्धन नादिर—गलियोंका भिखारी और दाने-दानेका मुहताज नादिर, अपने अपरिमेव पराक्रम, सविशेष साहस और कुछ संयोगिक सहायतासे एक दिन एशिया भरका भाम्ब-विधाता बन बैठेगा ? और विशेषतः नादिरका बाल्य-जीवन तो प्रायः भेड़ोंके चराने और जङ्गलोंमें, ग्रामीण बालकोंके साथ खेलने कुदनेमें बीता ; जिन घटनाओतक इतिहासकारको दृष्टि दौड़ना कठिनही नहीं, असम्भव है । हाँ, यह जानते हैं, कि नादिरका जन्म किसी गगनचुम्बी अट्टालिकामें, सुख ऐश्वर्य्य-सम्पन्न कुलमें, हानी और विद्वानोंकी मण्डलीमें नहीं हुआ था ।

बंगला विश्व-कोषके रचयिता वाचू नगेन्द्रनाथ बसुने नादिरकी बाल्यकालीन एक घटनाका उल्लेख अपने विश्व-कोषमें अवश्य किया है । उन्होंने लिखा है, कि “नादिर जिस समय सत्रह वर्षका था, उस समय ‘उजकल’ नामक एक व्यक्तिने उसे गिरफ्तार कर अपने यहाँ बन्द कर रखा । नादिर चार वर्षोंतक बन्द रहा । चार वर्षोंके बाद वह अपनी चालाकीसे वहाँसे निकल भागा ।” फ़ैदखानेसे निकल भागना नादिर जैसे चालाक और साहसी पुरुषके लिये कोई असम्भव बात नहीं । विशेषकर जब शिवाजीका, औरङ्गजेबके फ़ैदखानेसे तथा नियोलियनका, सेंट

एल्ल्याके टापूसे निकल भागनेकी बातें हमारे सामने हैं। पर यह स्मरण करते हुए, कि नादिरका बाल्य-काल केवल अहमदाबाद नगरमेंही व्यतीत हुआ, तथा वहाँके अजबल नामक किसी सत्ता-धारी व्यक्तिकी चर्चा भी हम कहीं नहीं पाते, इस अटनापर सहसा विश्वास नहीं होता है। पर यह अटना क्य हुई ? सम्भव है, जब वह अपने प्रकृत-पिताके साथ हो, उसकी निर्धनता एवं इच्छिताका अनुचित लाभ उठा, किसी 'अजबल'ने, नादिरकी दुष्टताके कारण उसे अपने घरमें बन्दकर रखा हो। पर यह भी चार वर्षोंतक, जब नादिरकी अवस्था २२ वर्षकी होजाती है !— कुछ असम्भवसा प्रतीत होता है। नादिरके बाया कुलोके घर जाने पर तो ऐसी अटना बढही नहीं सकती थी। ऐसी हालतमें, सम्भव है, नादिरके जीवनके आदिकालमें, जब वह अपने प्रकृत-पिताके साथ होगा, उसकी स्वाभाविक दुष्टता एवं क्रूरताके कारण किसीने उसे अपने घरमें कुछ कालके लिये बन्दकर रखा हो * और किसी "दरबारी" इतिहासकारने इस अटनाको 'तिलका टाक' बना दिया हो। शिब-कोषके रचयिताने 'अजबल' को एक व्यक्ति लिखा है। पर यह सरासर भूल है। सच तो यह है, कि 'अजबल' नामक तातारियोंकी एक जाति थी, जिनका आक्रमण खुरासानकी जातियोंपर सदा होता रहा था। यदि उनके द्वारा नादिर गिरफ्तार किया गया हो, तो यह सम्भव है।

* सर जेम्स रॉयने अपने "नादिरशाह" नामक ग्रन्थमें सर १७०४ से १७०८ तक नादिरशाहके कैदमें रहनेकी बात लिखी है।

बीसरा परिच्छेद ।

आशा और निराशा ।

बाबा कुलीवेगसे सम्बन्ध होने तथा उनकी दोनों पुत्रियोंसे अविवाह कर लेनेसे, नादिरकी मुहताजगीके दिन तो कटही गये थे, साथ-ही-साथ उसके दिलमें और भी नये मनसूबे पैदा हो गये थे । पर उसके इन मनसूबोंपर थोड़े दिनोंके लिये एक प्रकारसे पानी फिर गया । आशा, निराशामें परिणत होगयी । बाबा कुलीवेगका देहान्त, नादिरकी जिशोरावधामें हो होगया था । नादिरको इस अवस्थाका अनुचित लाभ उठा, बाबा कुलीके भाईने, जिसे अपने भाईकी सम्पत्तिपर हाथ फैलानेको कोई भी आशा नहीं रह गयी थी, क़त्लात दुर्गके अधिकार एवं प्रबन्ध अपने हाथोंमें लिवा । एक ओर तो वह नादिरसे कहता, कि "तुम्हारी अवस्था छोटी है । काम-काज देखने तथा प्रबन्ध करनेका तुममें अभी अनुभव नहीं । जब तुम इसके योग्य हो जाओगे, तब मैं तुम्हारी सम्पत्ति तुम्हें लौटा दूँगा ।" और दूसरी ओर वह अफ़सरोंको भड़काता तथा उनसे कहता, कि "नादिर जैसे अभिमानी, क्रूर, निर्दय, दाम्भिक और घातक व्यक्तिमें इतनी योग्यता कहाँ, कि वह तुम्हारे जैसे वीर, साहसी, कुलीन, सम्य, दयालु और सर्वप्रिय व्यक्तियोंपर शासन कर सके ? वह अपने अयोग्य बर्तावोंसे

तुम्हारे ऊपर शासन करेगा और तुम उसे बैठे-बैठे सहन करोगे ; वह तो मुझसे देखा न जायेगा ।” चूँकि नादिरका चाचा अधिकारपर था और वह अपने प्रपञ्च तथा कूटनीतियों द्वारा अपने अधीनस्थ लोगोंके हृदयपर फ़ावू करनेमें सफल हो सका था, इसलिये अफ़सर जातिके लोग उसीकी बातोंका समर्थन कर देते । पर नादिर इसे कब पसन्द कर सकता था ? कुछ दिनोंतक, अथवा वह किशोर था, उसने इसे किसी प्रकार सहन किया । ज्योंही जवान हुआ, उसने अपना पद अपने चाचासे लेना चाहा । पर उसके चाचासे, यह कहकर उसको, क़त्लात गढ़का अधिकार देनेसे इन्कार कर दिया, कि “तुम बड़े मारी क़ूर और अत्याचारी हो । शासन करनेका तुममें तनिक भी अनुभव और योग्यता नहीं है । अफ़सर जाति तुम्हारे शासनको ज़रा भी पसन्द नहीं करती । ऐसी अवस्थामें तुम्हें मैं यह अधिकार नहीं दे सकता ।”

यह सुनकर नादिरका चित्त व्याकुल हो उठा । उसकी भुजाएँ फड़फड़ाने लगीं । मन-ही-मन वह विचार करने लगा, कि “ये तो (चाचा) शासन करें, और मैं, जो इस दुर्गका प्रकृत अधिकारी हूँ—सर्वतोभावेन जिसका इसपर स्वत्व है—इसकी अधीनता कुबूल करूँ ? नहीं, कदापि नहीं, ऐसा हो नहीं सकता । सूर्य पश्चिममें उदित हो, चन्द्रमा गरल उगले, पर नादिर अपने स्वत्वसे कदापि बाज़ नहीं आवेगा ।”

यह विचारकर नादिरने अपना धर, अपने चाचाका सज़्ज़ छोड़ दिया और मशहद* चला गया । वहाँ पहुँचकर वह

* क़ुरासान प्रांतमें मशहद नामका एक शहर है । यह स्थान इमान-

बिगलर बेगकी* फ़ौजमें एक साधारण सिपाहीके पदपर नियत होगया। आरम्भमें तो इसे केवल दस सवारोंकी जमादारी मिली। पर आगे चलकर बिगलर बेगने इसके साहस, पराक्रम और हृदतासे बहुत प्रसन्न हो, इसे एक रिसालेका सर्दार बना दिया। इसके बाद बिगलर बेगके साथ तातारियोंके जो छोटे-छोटे युद्ध हुए, उनमें नादिरने अपनी पैसी वहादुरी दिखाया, कि बिगलर बेगने उसे 'मीमख़ास'†की उपाधि दे, एक हजार सवारोंका सर्दार बना दिया। इस पदपर वह लगभग पैंतीस वर्षकी अवस्थातक रहा और बड़ी वहादुरी तथा हृदतासे अपना काम करता गया। जो लोग उसके गुण और स्वभावसे परिचित थे, वे तो उसकी बड़ी प्रशंसा एवं सराहना करते; उसे प्यार और पसन्द करते थे। पर जिन्हें उसके गुणोंका परिचय नहीं था, जिन्हें उससे बोलने और मिलनेका मौक़ा नहीं मिलता था, तथा जिन्हें उससे दूरही रहना पड़ता था, वे उससे असन्तुष्ट रहते थे। इस समय बादिर किसी विशेष अव-

अज्ञी रजाकी राजपुरी होनेके कारण प्रसिद्ध है। शाह अब्बासने इसे मुल्तानोंका तीर्थन्धान बनाया था। इसलिये इसकी हेरान्तो भी अधिक प्रशस्ति परसियामें है।

* "बिगलर बेग"—एक ख़िताब है। तुर्की भाषामें इसका अर्थ राजा-सोंका राजा है। "आन खाना" और "अमोर वल उमरा"के अर्थसे इसका अर्थ मिलता-जुलता है।

† "मीमख़ास"—तुर्की भाषामें इस शब्दका अर्थ एक हजार सवारोंका सरदार है।

सरकी प्रतीक्षा कर रहा था। समुचित समय उपस्थित न होनेके कारण, वह अपना मतलब किसीपर प्रकट होने नहीं देता। इस बीचमें सबको सन्तुष्ट रखना, किसीके मनमें किसी प्रकारका सन्देह उत्पन्न होने देनेका अवसर न देना, वह अपना कर्त्तव्य-कर्म समझता था।

सन् १६२० ई०में तातारी उज्ज्वकोंने * वारह हजार घुड़-सवारोंकी पलटन ले, खुरासानपर एक-व्य एक-आक्रमण किया। यह देखकर खुरासानाधिपति विगलर बेग बड़ाही चिन्तित हुआ। उसके पास उस समय केवल चार हजार घुड़सवार और दो हजार पैदल-बल्लन थी। ऐसी विकटदशामें सुगमता-पूर्वक उद्धार पानेके लिये उसने अपने कर्मचारियोंकी एक सभा विठलायी। उस समय उसने उक्त सलाहकारोंसे पूछा,—“ऐसे समयपर क्या करना चाहिये ?” सभाके प्रायः सभी सदस्योंने अपने परा-जयकी पूर्ण सम्भावनाका अनुमानकर यह सम्मति दी,—“शत्रुदलकी संख्या हमलोगोंसे कहीं अधिक है। अतएव उनका मुकाबला करना हमारे लिये किसी प्रकार भी लाभकारक नहीं होगा। यदि करेंगे, तो जान-बूझकर अपनेको विपत्ति-जालमें फँसा लेंगे। इसलिये शत्रु दलपर आक्रमण न कर, हम सब साई और मोर्चेके द्वारा नगरकी रक्षा करें। रहे भाग, सो भाग अपने परिवारके साथ दुर्गके भीतर वास करें।” पर नादिरसे वे कायरता और भीक्तापूर्ण बातें नहीं सुनी गयीं। लेकिन एक साधारण सरदार होनेके नाते उसको वे अधिकार कहीं

* “उज्ज्वक”—तातारी लोगोंकी एक जातिका नाम है।

प्राप्त थे, जिनके बलपर वह विगलर वेगके सामने, भरी सभामें, वड़े-वड़े ओहदेदारोंके रहते हुए, अपना मुँह खोल सके? पर तो भी सबसे आखिरमें, बड़ी हिम्मत बाँध, और हाथ जोड़कर, उसने, अति विनम्र भावसे विगलर वेगसे प्रार्थना-पूर्वक कहा,—
“ग़रीब परवर! मेरे तुच्छ विचारमें तो दुश्मनको कभी पास न आने देना चाहिये। अगर इस दासको आज़ा मिले, तो वह अपने बलसे, समस्त शत्रुओंको कुलही देरमें धराशायी बना सकता है। अन्यथा इस दासका सिर आपके हाथमें है।”

विगलर वेग नादिरके शौर्य-बोध्य और पराक्रमसे पहलेसेही पूर्ण परिचित थे। अतएव नादिरके इन उत्साह तथा वीरता-पूर्ण बचनोको सुनकर, हृदयमें किसी प्रकारकी भी शङ्का न करके, दिना सोचे-विचारेही उन्होंने कहा,—“हम तुम्हारे वीरत्वसे बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं। जाओ, शत्रुओंपर शीघ्र आक्रमण करो। अब क्लिप्त करनेकी तनिक भी आवश्यकता नहीं है। आज तुम्हें मैं अपना अस्थायी सिपाहसालार बनाता हूँ और यदि तुम इस युद्धमें विजयी हुए, तो यह पद तुम्हें खदाके लिये मिल जायेगा।” पर साथ-साथ विगलर वेगको अपने अन्याय उच्च पदस्य अधिकारियोंकी मान-मर्यादा तथा सम्मानका भी विचार था। नादिरके अधीन रहने और काम करनेमें उनके अपमानका अनुभवकर विगलर वेगने उन लोगोंसे कहा,—“आपमेंसे जिन लोगोंकी इच्छा हो, वे नादिरके साथ जायें और जिनकी इच्छा न हो, वे घरही रह सकते हैं।”

खामीकी आज्ञा पातेही, अपने अधीनस्थ, सारी सेनाओंका

सत्काल संग्रहकर, मरने और मारनेके लिये, नादिर नगरके बाहर निकल पड़ा। शत्रु-दल, मशहदसे चार मजिलके फासलेपर पड़ाच डाले लड़ाईके लिये तैयार जड़ा था। नादिरने अपनी सेनाके समस्त विभागोंको एक ऊँचे टीलेके पास ले जाकर बड़े उत्साह-बर्हक शब्दोंमें उनसे कहा,—“हमारे शूर-वीर, साहसी होरो ! आज तुम्हें अपने शीर्ष्य और पराक्रमकी परीक्षा देनेका अपूर्व अवसर प्राप्त हुआ है। समझ रखो, ये सिपाही तुम्हारा कुछ भी नहीं कर सकते। दस हजार बकरियाँ सिंहके बच्चोंका क्या बिगाड़ सकती हैं ? तुम जानते हो, मैंने हजारों बार इनका मुकाबला किया और हजारों बार इन्हें परास्त किया है। उस समय जब वे बकरे हमारे सामने पड़तेही पीठ दिखलाकर भागते और हमारे हाथोंके भालोंका शिकार करते थे, तब वे इस समय ही हमारा सामना किस वृत्तेपर कर सकेंगे ? शत्रु-दलकी जिस भारी ताकदावकी तुम देख रहे हो, वह तो कुछ भी नहीं। क्योंकि दस हजार आदमियोंमें, आधेसे अधिक तो अपने तल्लुके मालकी निगरानीमें लगे हुए हैं और बाकी आधे, हमलोगोंपर अपनी सँख्याका प्रभाव जमानेके लियेही इधर-उधर छितरे हुए हैं। इसलिये रणधीरो ! साहस करो, आगे बढ़ो और इन बकरोंका शिरच्छेद करके खुरीसे चित्रयका टट्टा बनाओ।” यह कहकर नादिरने अपने घोड़ेको एक बँड़ लगायी और बात-की-बातमें सवके आगे जा खड़ा हुआ। उसे आगे जाते देख, उसकी अधीनस्थ फौज भी उत्साहसे भरकर उसके पीछे-पीछे खड़ी। बात-की-बातमें दोनों ओरकी सेनाओंमें मुठभेड़ हो

गयी। अन्तधोर युद्ध हुआ। दोनों दलके योद्धा जी-जान देकर लड़े। रण-क्षेत्रमें लहूकी नदियाँ बह गयीं। विजय जिसकी होगी, यह दोनों दलोंके देखनेवाले लोग देखकर, कुछ भी निर्णय न कर सके। अन्तमें नादिर अपने योद्धाओंको इकट्ठाकर, उनके साथ, शत्रु-दलको क़त्लरको बीचों बीचसे चीरता-काड़ता और उनका शिरच्छेद करता हुआ, शत्रु-दलके सेना-नायकके पास जा पहुँचा। पहुँचतेही विजय-विह्वल नादिरने उसका शिर धड़से जुदा कर दिया। इस दुर्घटनाका समाचार सुनकर शत्रुदलके पाँच उखड़ गये। वे निराश हो, अपने-अपने प्राण लेकर समर-क्षेत्रसे भाग चले। इस अवसरपर नादिर और उसके सिपाहियों-ने शत्रु-दलका खूबही संहार किया। यहाँतक, कि युद्ध स्रम होते-होते शत्रु दलके लगभग छः हज़ार सिपाही धराशायी हो गये; आधेसे कमही अपने घर लौटे। और उनमेंसे भी कितनेही लोग पकड़े जाकर गुलाम बना लिये गये।

तातारियोंको परास्तकर विजय उड़ूा बजाता हुआ, आनन्दमें मग्न, नादिर अपनी सेनाओंके साथ मशहद वापस आया। किंग-लार बेगने नादिरको उसके इस महान् कार्यके बदलेमें चुरासानेका नायब सिपहसालार बनानेकी सिफ़ारिश परशियाके शाहसे की। किन्तु परशियाके तत्कालीन शाह, सुल्तान हुसेन शफ़ीने, जो सदा आसो-प्रसो-मेंही अपना जीवन व्यतीत करता था, नादिर-की इस वीरताकी कुछ भी क़द्र नहीं की। वरन् उस जगहपर एक अनुभव-शून्य, नौजवान व्यक्तिको बहालकर भेज दिया और इस प्रकार उसने नादिरकी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया।

राज्यके अन्याय अफसर, जो नादिरको सदा ईर्ष्याकी दृष्टिसे देखते थे, शाहके इस व्यवहारसे बड़ेही प्रसन्न हुए और बात-बातमें अब नादिरका तिरस्कार करने लगे । नादिर इस घटनासे बड़ाही दुःखित और लज्जित हुआ । साथही उसे क्रोध भी हो आया ; पर अपने क्रोधको रोककर विगलर बेगसे उसने निवेदन किया,—

“जहाँपनाह ! पुरस्कार स्वरूप सिपहसालारका पद मुझे स्थायी रूपसे मिलना चाहिये था और इसके लिये भाव वचन-बद्ध भी हैं ; पर मैं केवल उस पदसे हटाही नहीं दिया गया, वरन् मुझे और भी बेइज्जती और जिल्लत डैलनी पड़ रही है ! मेरे साथ यह सरासर अन्याय किया गया है । मेरी जगहपर एक ऐसे नौ-जवानको बहाल किया गया है, जो केवल अनुभव-शून्यही नहीं है, बल्कि ज़नानेमें बन्द रहने लायक है ।” विगलर बेग नादिर शाहका यह सत्य, पर अग्रिय वचन सुनकर बहुत क्रुद्ध हुआ तथा उसे नौकरीसे बरफ़वास्त कर जूतोंकी ठोकरीसे शहरके बाहर निकालनेका हुक्म दे दिया । द्वेषी अफसरोंकी चालसे बेचारा नादिर लात-जूते, और धक्के-मुक्के खाकर, मशहदसे बाहर निकाल दिया गया ! अमागा नादिर भी इन सब अपमानोंका सहनकर शहरसे बाहर निकल पड़ा ।



बौधा परिवर्द्ध

चाचाकी इत्या ।

कुछ थिगलर बेगके दरवारसे जूतोंकी टोकरोसे निकाला हुआ
नादिर संसारमें कोई भी सहारा न देख, निराश-चित्त
हो, फिर अपने चाचाको शरणमें भरपर वापस आया । चाचाने
तो पहले उसकी बढ़ी खातिर-वात की, उसका रघोचित्त
आदर-स्वागत किया । पर नादिरके हृदयमें इससे कोई भी परि-
वर्त्तन नहीं हुआ । उसको सदा यही धुन बनो रहती, कि कबोकर
कुलातमदका अधिकार प्राप्त हो । अपने इस भावको वह बहुत
दिनोंतक छिपाये नहीं रख सका । कुछही दिनोंके बाद उसका
यह मनोभाव उसके चाचापर प्रकट होगया । फिर नादिरके प्रति
कहाँका आदर और कहांका सत्कार ? चाचाके हृदयमें प्रेमके
स्थानमें द्वेषका संचार हो आया । नादिरकी पहली प्रतिष्ठा
अब जाती रही । फिर दृष्टिताने भा, उसे धर दबाया । दाने-दाने-
के बिना बेचारा मारा-मारा फिरने लगा । उसने अपने कधु-कपोंके
बीच यह निर्धन, अपमानित, लाञ्छित और तिरस्कृत जीवन
व्यतीत करना कदापि उचित न समझ, अपने चाचाका सहयोग
त्याग कर दिया और जङ्गलोंकी शरण ली ।

जङ्गलमें पहले उसने दो-तीन हई-कहे, धनहीन साहसी

व्यक्तियोंको अपने साथ लिया। उन लोगोंको मददसे उसने रास्तेमें तीन ऊँटोंपर लदा हुआ माल लूट लिया। इस लूटकी वामदनीसे उसने पहले अपने जोबिका-निर्वाहका प्रबन्ध किया। पञ्चदश वन्ही रुपयेकी मददसे उसने और बीस-पच्चीस अवारोंको अपने दलमें मिला लिया।

इस वार अपने इस दलकी सहायतासे उसने एक भारी काफिले पर आक्रमण किया। इस काफिलेके ऊँट और खच्चरोंपर व्यापारियोंका पूरा-पूरा माल लदा हुआ था। इस लूटसे भारी रकम उसके हाथ लगी, जिसके कारण वह लड़ाईका सारा सामान, भस्त्र, शस्त्र, आदि ज़रीन्देमें समर्पण हो सका।

अस्तु ; शस्त्र बहानेमें उसे एक बातसे और सहायता मिली। शहरके व्यापारियोंके अवारे और लुब्धे लड़के उसके पास अपने यहाँसे भस्त्र-शस्त्र लेकर आते तथा उन्हें नादिरके हाथों बेचकर, उसके बदले रुपये लेते थे। अब तो नादिरका दल गिरफ्तार करने लगा। बात-की-बातमें उसने पाँच सौ बीजवान, हथ पुर सिपाहियोंका एक दल संगठित कर लिया तथा लूटकी वामदनीसे उनकी तन्ख्वाह देना और उनका पालन-पोषण करना शुरू किया। घोड़ेही दिनोंमें इर्द-गिर्दमें नादिरका रोष छा गया और उसमें भयसे लोग “जाहि ! जाहि !!” करने लगे। सिधरही वह एक गज़र फेर बैठा, उधरही तहलका मच जाता था। लूट-मारसे नगरके लोग तथाह कर दिये जाते थे। नगर-निवासियोंमें इतनी शक्ति न थी, कि नादिर जैसे उदारहीर, चढमार और लुटेरिका सामना करते। अतः नादिरका आतङ्क लोगोंके हृदयमें इतना

जम गया, कि यदि किसीके पास वह एक साधारण चिट्ठी भी लिख भेजता, कि 'इतने रुपये अभी भेज दो', तो लोग चलुशी आकर उसके हाथोंमें उतने रुपये नज़र कर जाते। ऐसी हालतमें किसकी हिम्मत थी, जो उसकी मर्जी और शानके खिलाफ़ चूँतक कर सके।

हाँ, यदि शाह चाहता, तो नादिरकी यह बल-वृद्धि तथा उठाईगिरी रोक सकता था और नादिरकी इन बुरी हरकतोंके लिये पूरी सज़ा भी दे सकता था। पर समय तो नादिरका सहायक है। इस समय बेचारे शाहको अपनी शक्तिकी रक्षा करनाही कठिन हो रहा है। "जिमि वसनन मँह जीभ विचारी" कीसी उसकी हालत हो रही है। वैसी हालतमें जब उसकी अपनी ही हालत ढाबाँडोल हो रही है, दूसरोको बचानेका वह क्योंकर प्रयत्नकर सकता था? सुतरां, नादिरके लिये मैदान लाफ़ मिला। इस अवसरसे नादिरने समुचित लाभ उठाया। इस समय शाह कितनीही भँकटों और लड़ाइयोंमें फँसा हुआ था। अफ़ग़ानोंकी एक पलटनने मीरबायज़के पुत्र महमूद जॉके अधीनमें चढ़ाईकर पाटनगर और इस्फ़हान जीत लिये और परशियाके दक्षिण-पश्चिम भागको अपने अक़्तियारमें कर लिया। तुर्कोंने भी आक्रमण कर परशियाके पश्चिम भागको ले लिया। रूसियोंकी मस्कोवीट नामकी एक जातिने गीलन तथा कास्पियन समुद्र तक सभी जगहोंपर अपना अधिकार कर लिया। ऐसी परिस्थितिमें परशियाके शाहको इतनी, छुट्टी कहाँ, जो वह नादिरके प्रति आक्रमण करे ?

एसी चीजमें एक और घटना होगयी। पायल बंशका सरदार तथा गाहकी पल्टनका एक सिपहनाहार सैफुद्दीन खेय नामक एक व्यक्तिने किसी कार्यसे गाहके हृदयपर एक चडा भारी आघात पहुँचा। उसने दृष्यम दिया, कि सैफुद्दीन तथा उसके अधीनस्थ सारी पल्टनकी हत्या कर दी जाये। उसकी इस आज्ञाके अनुसार कुछ लोगोंका तो नाश भी कर दिया गया। इस घटनासे सैफुद्दीन बड़ाही भयभीत हुआ। उसने शाहका दरवार अपनी कुछ पल्टनके साथ त्याग दिया। अनेकानेक जगहोंपर गया, पर कहीं भी उसे शरण न मिली। अन्तमें अपनी पत्नहूँ सौ पल्टनके साथ वह नादिरकी शरणमें चला गया। नादिरने उसे, उसकी पल्टनोंके साथ, अपने पास रख लिया। सैफुद्दीनके इस सहयोगसे नादिरके कुछ दल-बलकी संख्या लगभग दो हजार होगयी। एन्हे लेकर नादिर सीमा-प्रान्तपर आक्रमण करता, लूट-भसोटे मचाता, लोगोंसे धन चसूल करता तथा बहुतेरे गावोंको अपने कब्जेमें भी करता जाता था।

नादिरकी यह चलती-बनती देखकर उसके चाचाके हृदयमें भी, जो कुलात्मक अधिकारी था, भयका पूरा संचार हो आया। उसने विचार किया, कि नादिरका यह काम किसी प्रकार रोकना चाहिये। पर बल-प्रयोग द्वारा उसके लिये यह काम एक प्रकारसे असम्भव था। अतएव उसने नादिरके पास एक पत्र लिखा। उसमें इस बातकी चर्चा की, कि अगर नादिर अपनी इन बेजा हरकतोंको छोड़ दे तथा अपने पिछले कुर्बानोंपर पश्चात्ताप करे, तो सम्भव है, कि परशियाके शाह उसके सारे

अपराधोंको क्षमा करके, उसे अपने राज्यमें कोई अच्छी नौकरी दे देंगे। नादिरने अपने चाचाके इस प्रस्तावको स्वीकार तो कर लिया पर उत्तरमें उसने निवेदन किया, कि “शाहके पास आपही पत्र लिखकर इन सब बातोंको तय कर लें।” फलतः उसके चाचाने शाहकी सेवामें एक बहुत लम्बा-बौड़ा पत्र लिखा। उसमें नादिरकी हरकतोंके लिये उसने यथोचित पञ्चात्ताप किया तथा अन्तमें क्षमा-भिक्षा माँगते हुए शाहसे इस बातकी प्रार्थना की, कि नादिरको फिर राज्यकी किसी एक अच्छी नौकरीपर रख लिया जाये। पहले तो शाह कुछ पसोपेशमें पड़ा। क्षमा-दान करनेमें उसने कुछ आना-कानी की। पर पीछे अपनी परिस्थिति तथा नादिरके आनेसे अनेकानेक कामका विचारकर उसने नादिरको क्षमा प्रदान की तथा राज्यमें एक अच्छी नौकरी भी दी। चाचाने इस बातकी सूचना तत्क्षणही नादिरको दी। नादिर अपने साथी सैफुद्दीनको लेकर, सौ ऊवानोंके साथ क़लातगढ़के लिये रवाना हो गया।

नादिर क़लातगढ़में पहुँच गया। तीन दिनोंतक उसके चाचाने बड़ी धूमधाम, और प्रेमके साथ उसका स्वागत किया। पर नादिरके मनमें तो किसी और ही विचारने बड़ा जमा रहा था। उसे एकही बातकी धुन सदा बनी रहती थी— और वह यह थी, कि “क़लातगढ़ फिर कैसे हाथ लगे”। इसी विचारसे तो वह आते समय पाँच सौ चुनिन्दे ऊवानोंको दूसरे दिन क़लातगढ़में पहुँचनेका हुजूम दे आया था। क़लातगढ़में पहुँचकर दो-चार दिनों तक तो वह बहुत आमोद-प्रमोदमें

संलग्न रहा। वह राग-रंगसे वहाँवालोंपर अपना प्रेम-राज्य संस्थापित करनेमें बहुत अंशमें फलीभूत भी हुआ। तीसरे दिन रात्रिमें जब वह अपने साधियोंके साथ नाच-रङ्गकी बहार ले रहा था, वहाँसे एक-ब-एक उठकर खड़ा हो गया। अपने चाचाके कमरेमें घुस पड़ा। वहाँ जाकर उसने अपने चाचाकी हत्या की। उसके पाससे क़लातमद्दकी कुञ्जी ले ली। फिर उसने एक सौटी बजायी। सौटीकी आवाज़ सुनतेही चारों तरफ़से लगभग पाँच सौ सिपाही हरे-हथियारसे ढँस होकर वहाँपर आ धमके। नादिरकी आज्ञाके अनुसार पहलेसेही वे क़लातमद्दके इधर-उधर आकर छिपे हुए थे। नादिरका हुकम पातेही वे क़िल्लेपर दूट पड़े। डेढ़ सौ सिपाही क़िल्लेकी रक्षाके लिये वहाँ मौजूद थे। पहले तो कुछ देर तक लड़ाई हुई। उस लड़ाईमें क़िल्लेके लगभग बीस रक्षक मैदान आये। बहुत घायल भी हुए। अन्तमें नादिरसे मुक़ाबिला करनेमें अपनेको असमर्थ जान, कुछ लोग तो भाग गये और कुछ लोगोंने आत्म-समर्पण कर दिया। नादिरने उन्हें क्षमा प्रदान कर अपने आश्रयमें रखा। यह घटना सन् १७२६ ई० में हुई थी।

अपने चाचाका बधकर, नादिरने क़लातमद्दका अधिकार अपने हाथोंमें ले, अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त किया। दूसरे दिन उसने वहाँके रहनेवाले सब निवासियों और सिपाहियोंकी एक सभा की; चिकनी-धुपड़ी बातोंसे उन लोगोंपर अपना प्रभाव डाला। कुछ लोगोंको सम्मान-दान द्वारा तथा कुछ लोगोंको नौकरियाँ दे, नादिरने सन्तुष्ट

किया। पञ्चास वर्षों की बाक़ी फ़ौजको भी उसने अपनी साबिक़ जगहसे बुला लिया। इस नवीन सङ्गठन द्वारा, नव-संगठित साधनोंके सहारे, उसने शाही सल्तनतके आस-पासके गावोंपर चढ़ाई करना और उनपर अपना क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया। वहुतेरे गावोंको—शाहबी लगभग ५० मीलकी सल्तनतको उसने अपने अधिकारमें कर लिया। उन जगहोंपर वह अपनी हुकूमत चलाने लगा तथा वहाँके प्रजाजनोंसे राज्यकर बसूल करने लगा। इस प्रकारसे मिथवारी नादिर एक प्रबल अधिकारी बन बैठा।



पांचवां परिच्छेद।

नादिरके पराक्रमका परिचय ।

नादिरके इस प्रकार अपने चाचाका बच करने और शाही गाँवोंपर अपना अधिकार जमा लेनेके कारण, परशियाका शाह बहुतही असन्तुष्ट हुआ । धूर्त नादिरोने उसके इस असन्तोषका अनुमान कर, उसके पास एक प्रार्थना-पत्र भेजा ; साथ-ही-साथ उस पत्रमें उसने इन बातोंकी भी चर्चा की, कि किस प्रकारसे तुर्कोंके बिरुद्ध, लड़कर उसने सुरासान प्रदेशकी रक्षा की ; किस प्रकारसे सुरासानके तत्कालीन शासकने, अपनी प्रतिज्ञाका पालन नहीं किया, उल्टे उसके साथ अन्याय और अत्याचार किये तथा उसके चाचाने किस प्रकारसे उसे धोका दे, उसकी पैतृक सम्पत्तिपर अपना अधिकार जमा लिया था ; और उसकी यही हुरकत उसके बधका कारण हुई ।

उसकी इस चिन्तीको पढ़कर शाहने इस बार बड़ी बुद्धि-मानीसे काम लिया । पर पैसा करनेके सिवाय और दूसरा बह कर ही क्या सकता था ? तुर्कोंके निरन्तर आक्रमण, क़सिबोंके प्रबल प्रहार और अफ़ग़ानोंकी बार-बारकी चढ़ाईसे एक तो उसकी जान यों ही हैरान परेशान थी, दूसरे अपनेही घरमें नादिर जैसे पराक्रमी और साहसी शत्रुको पैदा करना

अपनी जड़में आप कुजहाड़ी मारना नहीं, तो और उसके लिये क्या होता ? फलतः शाहने नादिरके सारे अपराध क्षमा कर दिये । और नादिरको अपनी पल्टनमें एक अच्छा पद देनेका बचन दिया और उसे अपने यहाँ बुला भेजा ।

इलातमदकी रक्षाके लिये पाँच सौ फौजी जवानोंको वहाँ छोड़कर और बाफ़ीको अपने साथ लेकर, सैफुद्दीनके साथ नादिर, शाह-परशियाकी सेवामें उपस्थित होनेके लिये खानः हुआ । वहाँपर पहुँच कर वह शाहके दर्शनके लिये दरवारमें हाज़िर हुआ । शाहने उसे देखकर, उसके भूतपूर्व अमानुषिक एवं असह्य अपराधोंकी ओर उसे स्मरण दिलाकर कहा,—“यद्यपि तुम्हारे अपराध, तुम्हारे राज-विद्रोह-सम्बन्धी कार्थ्य क्षमा-योग्य नहीं, तथापि यह आशा कर, कि तुम अपनी दुष्टताका त्याग कर, नेजा हरकतोंको छोड़कर तथा अपनी सारी कुटिलताको भूलकर, अपने स्वामी, राज्य और देशकी सेवा भक्तिपूर्वक करोगे, तुम्हारे भूतपूर्व सारे कुकर्मोंका कुछ विचार न कर मैं तुम्हें विशेष रूपसे पदवी, पारितोषिक और धन्यवाद देनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ ।” इसपर नादिरने बड़ी नम्रतासे शाहकी क्षमा-प्रार्थना की और सदा स्वामि-भक्त एवं विश्वास-पात्र बने रहनेका अपना वृद्ध संकल्प प्रकट किया । बात-की-बातमें वह एक हज़ार सैनिकोंका सरदार बना दिया गया ।

जबतक नादिर शाहकी फौजमें शरीक नहीं हुआ था, तबतक तुर्कोंकी पल्टन शाहकी पल्टनको सदा परास्त करती थी । शाहके गावोंको एक-एक करके अपने कब्ज़ेमें करती

जाती थी। उस समयके घटना-चक्रसे यह प्रतीत होता था, कि तुर्क और अफ़ग़ान आपसमें मिलकर शाहकी सारी सल्तनत-पर अधिकार कर आपसमें बाँट लेना चाहते थे, तथा शाहसे निरन्तर युद्ध कर उनकी हस्तीको सदाके लिये मिटा देना चाहते थे। पर नादिरके पहुँचतेही यह बिल्कुल परिवर्तित हो गया। जहाँ तुर्क और अफ़ग़ान फ़ारसवालोंपर सदा विजयी होते थे, वहाँ अब वे नादिरके अद्भ्य उत्साह, साहस और युद्ध-वीर्यके कारण पग-पगपर परास्त होने लगे—मुँहकी छाने लगे। उधर तुर्क-सेनामें तहलका मच गया। बहुतेरे तुर्की सिपाही, सेनासे अपना-अपना नाम कटवाकर अपने घरपर वापस जाने लगे और इस प्रकारसे तुर्कोंका बल दिन-प्रतिदिन घटने लगा। इधर नादिरके बार-बार विजय प्राप्त करनेसे उसकी कीर्ति-लतिका फैलने लगी। यत्र-तत्र उसकी प्रशंसा होने लगी। शाहके दरवारमें भी उसकी ख़ातिर-वात पहलेकी अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ गयी। शाही सेना भी बार-बारकी विजयपर उमङ्ग और उत्साहसे भर गयी। यह अब नये उत्साह और हुने बलसे दुश्मनोंका मुकाबला करने लगी। नादिर द्वारा प्रचारित नवीन सद्बुजने उनकी इस बल-वृद्धिमें जाहूँका सा काम किया।

नादिरके इन तमाम बहादुरी और जवाँमर्दकी कामोंसे खुश होकर शाहने उसे अपनी सेनाका नायब सिपहसालार बना दिया। नादिरको शाहके सम्पर्कमें सदा रहनेका अब बहुत भय हुआ अबसर हाथ लगा। अब उसको एकही हीसला था और वह यह—कि, “क्योंकर मैं सिपहसालार बन जाऊँ?” इस

समय फतेहउल्लाह झाँ, शाहका प्रधान सिपहसालार था। वह नादिरके कलेजेपर सदा काँटेकी तरह चुभता रहता था। नादिर अपनी पटुता, कार्य-कुशलता एवं धूर्तताके कारण, शाहको तो अपने झाबूमें लानेमें पूरा कामयाब हो गया; पर उसमें इतनी हिम्मत न थी, कि फतेहउल्लाह झाँसे खुल्लम-खुल्ला मुञ्जालफ्त करे। अतएव उसने "मुँहमें राम क्वालमें छुरी" वाली नीति-का अवलम्बन किया। फतेहउल्लाह झाँके सामने तो वह मीठी-मीठी बातें बजाता उसके मनके मुताबिक चर्चा चलाता तथा उसके मित्र और हित-चिन्तक बननेका दम भरता; लेकिन भीतरसे उसकी जड़में कुल्हाड़ी मारनेके प्रयत्नमें वह सदा लगा रहता था। सदा शाहका कान भरता था। फतेहउल्लाह झाँके विरोधियोंसे मिलकर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचता तथा जिस प्रकारसे भी हो, शाहकी आँखोंमें फतेहउल्लाहको गिरानेकी हमेशा कोशिश किया करता था। और अपने इस प्रयत्नमें वह सफली-भूत भी होगया। नादिरके भाग्यसे शाहका दिल फतेहउल्लाहसे फट गया। शाह उससे रुह और असन्तुष्ट हो गया।

संयोगवश एक दिन दरबारमें जब शाह, नादिर और फतेहउल्लाह, तीनों एकही साथ बैठे हुए थे, तभी शाहने सेना विषयक कतिपय कठिन प्रश्न फतेहउल्लाहसे पूछ दिये। नादिरको यह अच्छा मौक़ा हाथ लगा। प्रसंगवश उसने सेना-सम्बन्धी सङ्गठन, संचालन, बर्दी तथा वेतन आदिकी सारी बुद्धियोंको अच्छी तरह खोलकर बतला दिया। बल्कि उसने यहाँतक कह दिया, कि इस्लामी प्रजातन्त्रको ये अनिष्ट बुद्धियाँ किसी भी

इतिहासज्ञसे छिपी नहीं है। नादिरकी ये बातें सुनकर शाह फ़तेहवज़ाहपर बहुत ही क्रुद्ध हुआ। फ़तेहवज़ाहके प्रति उसका क्रोध तो पहलेसे था ही, उसपर नादिरकी बातोंने उसको क्रोधाग्निमें धीकी आहुतिका काम किया। शाहने फ़तेह-वज़ाहपर बहुत विगड़कर कहा,—“जो दोष तुमपर लगाये गये हैं, उनका समुचित समाधान यदि तुम बहुत शीघ्र न कर दोगे, तो तुम्हारा सिर काट लिया जायेगा।”

फ़तेहवज़ाहने शाहको इस प्रकार कोधित देख, कांपते हुए कहा,—“ग़रीबपरवर! मैं भी उन्हीं परिपाटियोंका अनुकरण करता हूँ, जो यहाँपर पहलेसे प्रचलित हैं।” फ़तेह-वज़ाहके इस उत्तरसे शाह सन्तुष्ट नहीं हुआ। अतएव उसकी (शाहकी) आशान्से फ़तेहवज़ाहका सिर धड़से उसी दम अलग कर दिया गया।

फ़तेहवज़ाहकी मृत्युके पश्चात् शाहने नादिरको सिपह-सालार बनाया। नादिर भी बहुत दिनोंके अभिलषित फलको पाकर आनन्दसे फूले भंगो नहीं समाया। हर्षके निस्सीम आवेशमें आकर, अपनी इस नयी नियुक्तिपर शाहके प्रति वह शिष्टाचारके समुचित नियमोंका पालन करना भी भूल गया। अस्तु; शाही सेनामें भर्ती होनेके कुछही दिनों बाद नादिर अपनी खालाकी, प्रपंच और उद्योगसे शाही सेनाका सिपहसालार बन बैठा। वह घटना सन् १७२७ की है।

सिपहसालार बनकर नादिर चुपचाप कब बैठनेवाला था? सेनाके संगठनमें, उसके समुचित संचालन और सुधारमें

नादिर सदा तत्पर रहता था। इसका परिणाम यह हुआ, कि सेना अच्छी तरहसे संगठित हो गयी। उनमें नवीन उत्साह और बलका संचार हो आया। पहले जो तुर्कों के वारसे सदा पीछेको पाँव हटातीं, वे आज तुर्कोंका मान-मर्दन करनेके लिये उत्सुक हैं। उनके ऐसा होनेका एक और प्रधान कारण था। जहाँ उन्हें पहले निश्चित समयके बहुत बाद तनफ़्बाह मिलती, नादिर सिपहसालार होतेही, जिस दिन खज़ानेसे तनफ़्बाह निकलती थी, उसी दिन अपने हाथोंसे उन्हें बाँट देता था। जहाँ बर्दोकी फ़िरकत उन्हें हमेशा बनी रहती थी, वहाँ नादिरके सिपहसालार होते ही उनका यह दुःख दूर हो गया। इसलिये सेना भी नादिरको जी-जानसे प्यार करने लगी और उसके हुक्मके पालनमें सदा तत्पर रहने लगी। नादिरके इस प्रबन्धसे शाह बहुतही प्लुश हुए। सेना-सम्बन्धी सारा प्रबन्ध उन्होंने नादिरके हाथोंमें छोड़ दिया। नादिरने भी इस अवसरसे समुचित लाभ उठाकर, जिन सिपाहियोंपर उसे अपने प्रति भविष्यवास था, उन्हें सेनासे हटा दिया और उनकी जगहपर उन लोगोंको बहाल किया, जो उसके विश्वास-पात्र और प्रिय थे।

पाठक यह जानते हैं, कि परशियाके प्रति अपने अविराम आक्रमणों द्वारा तुर्कोंने शाहकी नाकमें दम कर रखा था। शाहकी बहुतेरी जगहोंपर भी उन्होंने अपना कब्ज़ा कर लिया था। पर अब नादिरने अपनी नव-संगठित शक्ति द्वारा, अपने उद्भट बारह हजार योद्धाओंके सहारे तुर्कोंसे बदला लेनेका विचार किया। अपने सभी अनधिकृत स्थानोंको उनसे फिर लीन लेनेका

निश्चय किया। तुर्कोंको जब इस बातका समाचार मिला, तब उन्होंने शाह तहमाशके पास सन्धिकी सूचना भेजी और उसमें लिखा, कि जिसके अधिकारमें अभी जो स्थान हैं, वे वैसेही रहें। हाँ, यदि शाह अफगानोंसे उनके द्वारा अधिकृत अपने स्थानोंको फिर लेलेंगे, तो इसमें तुर्क लोग अफगानोंकी इरा भी मदद नहीं करेंगे। शाहने तुर्कोंको यह उत्तर भेज दिया:— “इस सम्बन्धमें कतिपय परमावश्यक प्रश्नोंकी पूछ-ताछके लिये मैं अपना राजदूत कम्मे मुल्तानके पास भेज रहा हूँ। वहाँसे उत्तर आनेपर, सन्धिकी शर्तोंपर विचार किया जायेगा। युद्ध, मार-काट और लूट-ससोट दोनों तरफसे बन्द रहे।” इधर उसने कूतको सिखला दिया, कि मुल्तानके वहाँसे वापस आते समय रास्तेमें तुम बीमारीका शहना कर कहींपरठहर जाना और वहाँ-पर कुछ महीनोंतक रुक कर रहना।

शाह तहमाशका तुर्कोंके साथ सन्धि करनेमें विलम्ब करनेका मतलब सिखाय इसके और कुछ भी नहीं था, कि वह तुर्कोंके साथ लड़नेके लिये मुहलत चाहता था। इसका कारण यह था, कि मशहदका गवर्नर मलिक काफूर शाहकी अधीनताकी चेड़ी तोड़कर बिल्कुल स्वतन्त्र हो, मशहदका खुदशर मालिक बन बैठा था। नादिरने शाहके साथ मलिक काफूरपर बारह हजार युद्ध-पदु घोड़ानोंको लेकर आक्रमण किया। मलिक काफूरको हराकर नादिरने उसे कैदकर लिया। काफूरके कोषमें जितना धन था, उसे लूटकर नादिरने शाहके हवाले किया और मशहदपर अपना अधिकार जमाया।

मशहदपर अधिकार कर अफ़ग़ानोंसे लड़नेके लिये नादिर आगे बढ़ा। अब्दुली नामक अफ़ग़ानोंकी एक जातिने साह हुसेनके समयमें हेरातपर अपना कब्ज़ा कर लिया था और वह एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर मशहदपर चढ़ाईकर और उसे अपने अधिकारमें ला, सारे खुरासान प्रान्तपर अपना इस्लाम जमाना चाहती थी। नादिरने अपनी वसी फ़ौजके साथ अब्दुलियोंपर आक्रमण किया। अब्दुलियोंके बल और पराक्रमका अनुमानकर, शाह पहले तो बहुत घबराया, पर नादिरकी उत्साह-भरी बातोंने उसके हृदयमें भी कुछ उत्साहका संचार किया। हेरातसे तीन दिनके धावेपर अब्दुलियोंने तीस हज़ार घुड़सवारोंके साथ नादिरसे मुक़ाबिला करनेके लिये आगेकी ओर प्रस्थान किया। नादिरको कुछ सिपाहिओंके साथ सामने देखकर वे बहुत खुश हुए और उन्हें पूरा यकीन होगया, कि वे नादिरको अवश्य पराजित करेंगे। पर बहादुर नादिर घबराने वाला थोड़ेही था। उसने अपनी फ़ौजको एक ऊँचे टीले-पर खड़ा कर दिया और वहींसे आगे बढ़नेवाले अब्दुलियोंपर बन्दूकें चलाये और तीरोंका वार करनेका हुक्म दे दिया। घोर घमासान युद्ध हुआ। अब्दुलिओंके पाँच हज़ार बहादुर मारे गये और पन्द्रह हज़ार नादिर द्वारा गिरफ़्तार कर लिये गये। विजयप्री नादिरकी हुई। अब्दुली पीछे हटे। अपने बचनेका कोई भी उपाय न देख, उन्होंने नादिरसे सन्धिके लिये प्रार्थना की। नादिरने इसे स्वीकार कर लिया। इसके द्वारा वह निश्चय हुआ, कि अब्दुली लोग सदा शाहको शासनके अधीन रहेंगे। हेरातका

गवनेर उनकी जातिकारी कोई-न-कोई व्यक्ति सदा बहाल किया जायेगा। साथही उन्हें कुछ वार्षिक कर भी देना पड़ेगा। अन्तमें उनसे राज-भक्तिकी शपथ ले, नादिर मरहदकी ओर वापस लौटा। शाह पहलेही लौट गया था। यह बात सन् १७२६ के मई महीनिकी है।

मरहदमें वापस आकर नादिरने सुना, कि अशरफखान नामक एक अफगान सरदार एक भारी दल-बलके साथ बसपर आक्रमण करना चाहता है। उसका यह आक्रमण भी शीघ्रही होनेवाला है। कारण, उसका (अशरफका) यह अनुमान है, कि अफ्गुलियोंके साथ घनघोर युद्ध करनेके पश्चात् नादिरकी फूटन थक गयी है। कितनेही योद्धा मारे भी गये हैं। नादिर इस सम्बन्धमें सोच-विचार करही रहा था, कि अशरफखानने अपने तीस हजार सिपाहियोंके साथ नादिरपर सन् १७२६ ई० के सितम्बर मासमें चढ़ाई कर ही दी। यह खबर पाकर शाह और नादिर दोनों घबराये। पर नादिर चुपचाप बैठनेवाला नहीं था। वह अपने सिपाहियोंके पास गया। उनके मनोभावको तोलकर देखा। पता लगा, कि गत युद्धमें आशातीत सफलता प्राप्त करनेके कारण उनके उत्साह और उमङ्गका कोई ठिकाना नहीं है। नादिरके हुकमपर संसारकी किसी भी शक्तिसे मुकाबला करने, मारने और मर मिटनेके लिये वे तैयार हैं। नादिर यह जानकर बहुत ही प्रसन्न हुआ।

वह शाहके पास वापिस आया और निवेदन किया, कि "हमलोग इन अफगानोंका मुकाबला जरूर करेंगे। युद्धमें

केवल सैन्य-संख्याका अधिक होनाही आवश्यक नहीं, युद्ध कला भी कोई चीज़ है ।” अस्तु २६ हज़ार सैनिकोंके साथ, जिनमें ‘रज़-दद’ भी शामिल थे, नादिर अशरफ़ज़ाँसे मुक़ाबिला करनेके लिये ख़वान: हुआ । दामग़ाँवके पास उसने सैनिक पड़ाव डाला । सैनिक दृष्टिसे यह ख़ान बड़े लाभ और कामका है । पहले आक्रमण करनेवालोंको सदा इस ख़ानपर मुँहको ख़ानी पड़ती है । अशरफ़ तो पहले नादिरपर आक्रमण करनेके लिये राज़ी नहीं हुआ । पर उसके अफ़सर और सिपाहियोंने अपने बलके मदमें आकर तुरतही आक्रमण कर देनेका प्रयत्न अनुरोध किया । यद्यपि यह काम अशरफ़के मनके माफ़िक नहीं हुआ, तथापि अपनी फ़ौजका यह प्रयत्न अनुरोध भी तो वह नहीं टाल सकता था; कारण लड़नेवाले वे ही थे । सुतरां, मुक़ाबिला हो ही गया । नादिरको फ़ौजने पूर्वाभिहत ख़ानका समुचित लाभ उठा, अशरफ़को फ़ौजको तितर-वितर कर दिया । अन्तमें भारी संग्रामके पश्चात् अशरफ़की फ़ौज हार गयी । उसके छः हज़ार जवान मैदान आये । नादिरके भी चार हज़ार आदमी मारे गये । पराजयके पश्चात् अशरफ़ज़ाँकी सारी आशार्थोंपर पानी फिर गया । अशरफ़ अपनी फ़ौज लेकर इस्पहानकी ओर भाग गया । बहुतेरे सिपाहियोंने उसके इस पराजयके पश्चात् तथा नादिरके भीषण प्रहारको सहन करनेमें असमर्थ हो, अशरफ़का साथ छोड़ दिया । नादिरकी इस विजयपर बाह्यवादीका ठिकाना नहीं रहा । शाह वहींपर मौजूद था ; उसकी प्रसन्नताकी कोई सोमा न रही । निदान, यह कहते हुए, कि “मेरे पास तो ऐसा कोई

पदायें नहीं, जिससे तुम्हारी इस सेवा और परिश्रमका बदला चुकाया जा सके, चाहते उसे 'सहमाय नादिर कुलीखानी' * उपाधि प्रदान की।

शाहजारा इस सर्व-श्रेष्ठ उपाधिको प्राप्तकर, नादिर दास-गाँवसे फ़ौरन इस्पहानकी ओर अशरफ़ खाँकी सौजमें रवाना हुआ। रास्तेमें बहुतेरे ईरानियोंको उसने सिपाहीमें बहाल कर लिया। बहुतेरे तो अपनी खुशीसे आकर उसकी सेनामें मर्तों हो गये। इसके दो कारण थे। पहला तो नादिरकी बेहद बलती-बनती और दूसरा सूदके मालोंमें शरीक होनेका लोभ। इस प्रकारसे नादिरके पास चालीस हजार घोड़ा हो गये। इसकी खबर जब अशरफ़को लगी, तब उसने बुर्जगदमें ३० हजार ख़ुने हुए अफ़ग़ानी सिपाहियोंके साथ नादिरका मुकाबला करनेकेलिये डेरा मिराया। यह अफ़ग़ानोंका अन्तिम मिङ्गल था। घोर-घमासान युद्ध हुआ। पर अशरफ़ हार गया और इस्पहानकी ओर लौट गया। रास्तेमें जितने ईरानियोंसे उसकी भेंट हुई, सबको आम तौरसे वह क़त्ल करवा गया। रास्तेके नाँवोंमें, जहाँपर ईरानी बसे हुए थे, सिर्फ़

* 'सहमायका' अर्थ है—बादशाह और 'कुलीका' अर्थ है—'शुलाम' इस लिये 'सहमाय कुलीका' अर्थ हुआ—बादशाहका शुलाम। शाहके दरबारमें यह उपाधि सबसे बड़ी सम्मती जाती है। कायदा अपने नामके पूर्व सहमाय शब्दका प्रयोग करनेकी आज्ञा शाहके राज्यमें किसीको भी नहीं है। वहाँ तक, कि शाहके निकट-सम्बन्धी, पुत्र-बौध भी, जबतक क़त्ल-नाशीन न हों, तबतक इस उपाधिका प्रयोग नहीं कर सकते।

औरतोंको छोड़कर, एक भी मर्द नज़र नहीं आता था। जब अशरफ़ इस्पहानमें पहुँचा, तो वहाँके नगर-निवासी ईरानियोंको भी उसने आम तौरसे क़तल कर देनेका हुक़म दे दिया। पर तब-तक तो नादिरशाह क़रीब-क़रीब इस्पहानतक पहुँच गया था। अशरफ़का दूत जब इस ख़बरको लेकर उसके पास पहुँचा, तो वह बिल्कुल बकरा उठा। अब उसको अपनी जान और मालकी फ़िक्र लगी। ईरानियोंको अब कौन क़तल करता है ? निदान ख़बर, ऊँट और छकड़ेपर अपना सारा माल लादकर, क़रीब-क़रीब वहाँकी सारी अफ़ग़ान जनताके साथ वह इस्पहानको छोड़कर शीराज़की ओर भाग चला। नादिरके पहुँचनेमें अब देर न थी, इसी समय मौक़ा पाकर इस्पहान तथा उसके इर्द-गिर्दके गाँवोंके लोग उन सब घरोंमेंसे सब माल ढो ले गये, जो ख़ाली पड़े हुए थे। सन् १७३० के तबम्बर महीनेमें नादिर इस्पहान पहुँचा। वहाँ उसने नगरको बिल्कुल ख़ाली देखा। बिना रोक-टोकके उसने उस शहरपर अपना क़ब्ज़ा जमा लिया।

वह एक सप्ताहतक वहाँपर ठहर गया। अफ़ग़ानियोंका पीछा करनेके लिये वह भागे नहीं बढ़ा। पहले तो उसके यहाँ ठहर जानेका रहस्य किसीपर प्रकट नहीं हुआ; पर अन्तमें उसने शाहसे यह प्रस्ताव किया, कि “यदि सैनिकोंको तनज़ाह देनेके लिये लगान और कर वसूल करनेका अधिकार शाह द्वारा मुझे प्राप्त होगा, तब तो मैं शाही फ़ौजका सिपहसालार हूँगा, घना मैं इससे अलग हो जाऊँगा।” नादिरके इस प्रस्तावसे शाह ग़ज़बके फ़तोपेशमें पड़ा। उसकी

तो बड़ी ज़ाहिर हुई, कि नादिर नौकरीसे हट जाये। पर इस विच्छेद कालमें शाह नादिरको नौकरीसे हटा ही फेंककर लपेटा था ? इसलिये नादिरका प्रस्ताव दिलसे, बिलकुल नामञ्चूर होनेपर भी, हार-मानकर उसे स्वीकार करनाही पड़ा। इस सम्बन्धमें मि० जे० फ्रांज़रका कहना है, कि नादिरको यह अधिकार देकर शाह मानों अपने आप तन्तसे अलग हो गया। वह नादिरके हाथोंका कठपुतला बन गया। चतुर शाह वीर नादिरको केवल यही अधिकार देकर सन्तुष्ट नहीं हुआ। चरन् उसने नादिरको खुरासानका 'किगलर वेग' भी बना दिया और अपनी भाङ्गी-की शादी भी नादिरके साथ कर दी। ये सब करने-धरनेके बाद, निम्न-बिन्दु हो, वह वहाँसे अपनी राजधानी तहमाशको वापस चला गया।

शाहद्वारा उपर्युक्त अधिकार, उपाधि एवं विभूतिको प्राप्तकर नादिरने अशरफ़ाबाकी खोजमें शीराज़की ओर प्रस्थान किया। शीराज़में नादिर और अशरफ़ाबाकी बीच फिर भी युद्ध हुआ। बेचार अशरफ़ाबा इस बार कुटे तख़्तसे हार साथी। वच्चे हुए केवल १५ सौ सैनिकोंके साथ वह कन्धारकी ओर भाग चला। इन वच्चे हुए १५ सौ सैनिक साधियोंमें बहुतोंने उसका साथ छोड़ दिया। अब उसके साथ केवल एक सौ सिपाही रह गये। वह कन्धारकी ओर बढ़ती रहा था,

• J Frazer—"In giving that power, he (in fact) parted with his Crown.—The History of Nadir Shah.

कि रास्तेमें बलूचियोंका एक दल उसपर दूट पड़ा। अशरफ़ और उसके सिपाहियोंने उसका मुक़ाबिला तो किया, पर वे थके-मारे, युद्धमें हारे हुए और पस्तहिम्मत हो गये थे; भला कबतक उन बलूचियोंके मुक़ाबिलेमें खड़े हो सकते थे? निदान ये लोग पराजित हुए। निर्दय बलूचियोंने इनके शरीरके टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

नादिर अब शीराज़में पहुँचा। यहाँपर एक महीनेतक उहरकर वह तुर्कोंसे मुक़ाबिला करनेके लिये हमदन और अन्यान्य स्थानोंकी ओर बढ़ा। इन स्थानोंको तुर्कोंने परशियाके शाहसे छीनकर अपने अधिकारमें कर लिया था। तुर्कोंकी धोरसे अबदुल्लाह अम्बासने उसका मुक़ाबिला किया। युद्धके पश्चात् अबदुल्लाह हार गया और करमनशामें भाग गया। लेकिन वहाँपर भी नादिरने उसका पीछा न छोड़ा। अपनी फ़ौज लेकर वह करमनशामें पहुँचा। वहाँ उसने अबदुल्लाहको परास्त किया। नादिर करमनशामें कुछ लोगोंको उस जगहको रखवालीके लिये छोड़, तैब्रीजकी ओर आगे बढ़ा। तैब्रीजको अपने कब्ज़ेमें लाकर वह अरदेविलकी ओर बढ़ा। नादिर उसे भी अपने अधिकारमें लाया, नादिरको इस अब्दुत विजयपर तमाम तुर्क घबरा उठे। उन्होंने नादिरसे सन्धिकी प्रार्थना की। इसी बीचमें नादिरको यह समाचार मिला, कि हेरातमें सब अब्दुली अफ़ग़ान विगड़ खड़े हुए हैं। अतः नादिरने तुर्कोंकी प्रार्थना स्वीकार कर ली।

अब नादिर अब्दुली अफ़ग़ानोंको सर करनेके लिये हेरातकी ओर बढ़ा। अब्दुलियोंने इसका मुक़ाबिला किया। पर वीरवर

नादिरके सामने वे कब तक टहरनेवाले थे ? सुतरां, नादिरने उनको हराकर हेरातपर अपना क़ब्जा किया और कुछ दिनोंतक वहाँ टहरा रहा । इसी बीचमें हेरात नगरमें एक भयङ्कर दुर्भिक्ष पड़ा । सब लोग—साथ-साथ नादिरकी फ़ौजके सैनिक, घोड़े आदि भी— दाने-दानेके बिना मरने लगे । नादिर विकट सङ्कटमें पड़ा । इस समय उसने एक बड़ाही विचित्र उपाय सोच निकाला ! वहाँकी जितनी अफ़ग़ान जनता थी, सबको उसने मरवाना शुरू किया और इस प्रकार उसने दुर्भिक्षके प्रकोपसे अपने सैनिकोंकी रक्षा की । वहाँके अफ़ग़ान गवर्नरको भी उसने मार डाला और अपना नया गवर्नर मुकर्रर किया । इन सब कामोंको करनेके बाद वह मशहद वापस चला आया ।

जब नादिर इधर मशहदमें ही था, तभी शाह-तहमाशने सुना, कि तुर्क लोग सीमा-प्रान्तपर हमला करना चाहते हैं । शाह अपनी अधीनतामें २० हजार जवान लेकर तुर्कोंसे मुकाबिला करनेके लिये रवाना हुआ । तैय्यीजमें आकर, वहाँकी रक्षाके लिये जिन लोगोंको नादिरने वहाँ छोड़ रखा था, उन्हें साथ ले, शाह आगेकी ओर बढ़ा । शाह इरवानमें तुर्कोंको पराजित कर करमनशाकी ओर बढ़ा । वहाँ अब्दुल पाशाके साथ शाहकी ज़ास्ती लड़ाई हुई । अन्तमें तुर्कोंकी हार हुई । उन्होंने शाहसे सन्धिकी प्रार्थना की । शाहने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली । निश्चय हुआ, कि अभी जिसके अधिकारमें जो स्थान हैं, वे अभी भी उसीके अधिकारमें बने रहें ।

ठठवाँ परिच्छेद।

बन्दी शाह ।

शाहस्य सखीकृत तुर्कों की सन्धि की शर्तों की शर्तें सुनकर, नादिर काथसे आग-बबूला होगया । ६० हजार खुने हुए फौजी जवानोंके साथ नादिर मशहदसे तत्क्षणही शाहके पास रवाना हुआ । शाहसे मिलकर उसने कहा, कि 'जो सन्धि आपने तुर्कोंके साथ की है, वह अपमान-जनक और निन्दनीय है । अतएव आप उस सन्धिको तोड़ दें तथा जिन लोगोंने आपको ऐसी अपमान-जनक सन्धि करनेकी सम्मति दी है, उनको पूरी सजा दें ।' पर शाहने उसके इस प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया ।

इसपर नादिरने कहा,—“जिनलोगोंने आपको तुर्कोंके साथ सन्धि करनेकी राय दी है, वे तुर्कोंसे मिले हुए हैं तथा आपकी हत्याकर इस राज्यपर वे अपना दृढ़ जमाना चाहते हैं । शाहने इस कथनको असम्भव जान, नादिरकी शर्तोंपर विश्वास नहीं किया । इसपर नादिरने अत्यन्त क्रुद्ध होकर, शाहके सामने पत्रोंके उन पुलन्दोंको फेंक दिया, जिनमें शाहके विरुद्ध पद्यन्त्र रचने, उसे अयोग्य ठहराने तथा उसकी हत्या करनेकी चर्चा थी । ऐसा करनेके पश्चात् वह दरबारसे विदा हो गया ।

वे पत्र शाहके दरबारियोंने नादिरको लिखे थे। उन पत्रोंमें उन लोगोंने शाहके प्रति पड़्यन्त्र रचने एवं उसका वध करनेका उपाय लिखा था। शाह उन पत्रोंको पढ़कर विलकुलही घबरा उठा। सोचने लगा, कि इस समय क्या करना चाहिये ? यदि इस समय वह उन पत्रोंके लेखकोंसे बदला लेता है, तो उसे फ़ौजके सारे अफ़सरोंका संहार करना पड़ेगा। ऐसी हालतमें सम्भव है, कि सारी फ़ौज बिगड़ उठे। तब उसे कहीं लेने-कै-देने न पड़ जायें। इन सब बातोंका विचार कर, उसने किसी अन्य समुचित समयकी प्रतीक्षामें इस समय चुपचाप बैठनाही पसन्द किया। अतएव सारे पत्रोंको उसने भागमें जला दिया। नादिर अपने प्रेरित पत्रके विचार-फलको जाननेके लिये बाहर ठहरा हुआ था। शाहको उन पत्रोंपर कोई भी विचार न करते तथा उन्हें अग्निमें जलाते देख, नादिरकी क्रोधान्नि और भी धधक उठी। वहाँसे वह फ़ौज वापस आया और सारे दरबारियोंकी एक गुप्त सभा की। सबने परामर्श कर यह निश्चय किया, कि तुर्कोंसे सन्धि-कर शाह हमलोगोंका संहार करना चाहता है। पर 'शाह्यौ' नादिर तो इस बातको पहलेही ताड़ गया था। उसकी ऐसी शंका उसो दिन दृढ़ हो गयी थी, जिस दिन उसने फ़ौजियोंको वेतन देनेके लिये अपने हाथों कर बसूल करनेको इजाजत शाहसे माँगी थी और शाहको लाचार होकर वह इजाजत देनी पड़ी थी। नादिरने प्रस्ताव किया, कि "शाहको गद्दीसे हटाकर, उसकी जगहपर उसके लड़केको बैठाया जाये तथा तुर्कोंसे पूरा बदला लिया जाये।" सब सरदारोंने इसका सहर्ष समर्थन किया।

शाहको पद-च्युत करनेका दृढ़ निश्चय, नादिर और दरबारके अन्यान्य सरदारोंने, बात-की-बातमें कर लिया ; पर हतभाग्य शाहको इसका कोई भी समाचार नहीं मिला । ठीक है, जब भाग्य-सूर्यका अस्त होता है, तब जानेन्द्रियाँ तथा उनके अन्यान्य साधन भी मनुष्यका साथ छोड़ देते हैं । अस्तु ; उपर्युक्त निश्चयके अनुसार नादिरने एक दिन शहरके बाहर अपनी विराट् फौजका निरीक्षण करनेके लिये शाहको निमन्त्रित किया । 'भोला-भाला' शाह भी किसी प्रकारकी सम्भावित विपत्तिको अपने दृष्टमें खान न दे, नादिरकी फौजका निरीक्षण करनेके लिये चला गया । नादिरकी सारी पलटन सज-धजकर सैनिक छाट-में मीलोंतक सड़ी थी । शाह उनका निरीक्षण करने लगा । एक खानपर जब वह फौजके बीच होकर गुजर रहा था, एक सिपाही-ने शाहको सलाम करके कहा,—“जो आज्ञा हो, हमलोग उसका पालन करें ।” सिपाहीकी यह बात सुनकर सदा सावधान और सतर्क नादिर पहले कुछ घबरा गया ।

उसके इस प्रकार घबरानेके दोही कारण हो सकते हैं । पहला यह, कि कहीं फौज उससे विमर्द न गयी हो और इसलिये उसकी जान लेनेको शाहकी आज्ञा मंगिती हो । दूसरा कारण यह हो सकता है, कि कहींशाह इन जवानोंको इस समय उसकी जान ले लेनेकी आज्ञा न दे दे और इस प्रकार अपना पुराना बदला चुकाये । पर नादिर अपने इस मनोभावको किसीपर प्रकट होने न दे, उसने वहींपर एक प्रभावशाली व्याख्यान दिया । अपने उस भाषणमें उसने कहा,—“फौजका फुर्त अपने सरदार-सिपाहसा-

लारको हुकम मानना है ।” शाहने भी उसके इस कथनका समर्थन किया । सेना-निरीक्षणके बाद नादिर, शाहको भोजन करानेके लिये अपने खीमेमें ले गया । वहाँ ले जाकर शाहसे उसने शराब पीनेकी प्रार्थना की । शराबखोरी ईरानियोंमें कोई नयी बात नहीं । इसलिये शराबके आदो शाहने शराब पीनेमें ज़रा भी धाना-कानी नहीं की । थोड़ी सी शराब पीतेही शाह बेहोश हो गया । कहते हैं, नादिरने उसमे कोई ऐसी चोज मिला दी थी, जिससे पीने वाला फ़ौरन बेहोश हो जाये । शाहके बेहोश हो जानेपर नादिरने अपने सिपाहियोंको हुकम दिया, कि शाहको 'हज़ार ज़रीब' बाग़में ले जाकर ढींक तैरसे रखो । शाहके कुछ आदमियोंने नादिरके इस हुकमपर पतराज़ किया और कहा,—“बेहतर हो, अगर शाह यहींपर रहें । उनकी देख-भाल हम सब यहींपर कर लेंगे । पर नादिरने उन्हें खीमेसे बाहर निकाल दिया और जो लोग अड़ गये, उन्हें ज़ेद कर, शाहको भी ज़ेद कर लिया । दूसरे दिन प्रातःकाल नादिरने, सब अफ़सरोंकी रायसे शाहको अपने नज़दीक ज़ेद रखना उचित न समझा । इसलिये उसने शाहको माजन्दानमें भेज दिया । वहाँपर उसने चुने हुए छः हज़ार सुन्नी और अफ़ग़ान योद्धाओंको शाहकी रखवालीके लिये छोड़ दिया । उन पहरेदारोंमें एक भी ईरानी नहीं था । जान-बूझकर सारे ईरानियोंको वहाँसे हटा देनेमें नीतिज्ञ नादिरका यह अभिप्राय था, कि जाति-भेदके नाशमें आकर कहीं ये शाहसे मिल न जायें ।

शाहको माजन्दानमें ज़ेद कर नादिरने शहरमें प्रवेश किया । वहाँ पहुँचतेही उसने इस बातकी आम तरहसे सुनाही करा

ही, कि आज तमाम दिन शहरका कोई भी आदमी, अपने घरसे किसी बहुत जरूरी कामके लिये भी, बाहर न निकले। किसकी ताकत, जो अब नादिरके हुक्मके खिलाफ़ काम करे ? शहर भरमें शान्तिका साम्राज्य स्थापित हो गया। दोपहरको फिर उसने दूसरी मुनादी करा दी, कि अब सब लोग अपने-अपने काम-काजमें लग सकते हैं। उसका यह हुक्म भी माना गया। पर शहरके रहने-वाले लोग शाहके बन्दी होनेकी बज़हसे बहुत दुःखित थे, कारण, उनकी धारणा थी, कि शाह मार दिये गये। लेकिन जब उनको अच्छी तरहसे मालूम हो गया, कि शाह अभी जीवित हैं, तब उनके हृदयमें कुछ आशाका संचार हुआ और उन लोगोंने समझा, कि कम-से-कम सेना तो नादिरका पक्ष छोड़कर शाहका ही साथ देगी।

दूसरे दिन प्रातःकाल कतिपय अफ़सरों और सरदारोंके साथ नादिरने शाहके महलमें प्रवेश किया। शाहके पुत्रको, जो उस समय पलनेपर पड़ा हुआ झून्ड रहा था, वह बाहर लाया। सबको राय हुई, कि शाहका उत्तराधिकारी उसका यही पुत्र गद्दीपर बैठाया जाये। सुतरां, नादिरने उस बालकको गद्दीपर बैठाकर, अपने हाथोंसे उसे राज-मुकुट पहनाया। लोगोंने उस बालकको द्वितीय शाह अम्बासके नामसे प्रशस्त किया सर्वप्रथम स्वयं नादिरने बालक शाहके प्रति राजभक्ति रखने एवं उसकी आजाओंका पालन करनेके लिये कुरान शरीफ़की शपथ खायी। पीछेसे सब सरदार-अफ़सर अमीर-उमरा और मुसाहब सब उसके अनुबर्त्तों हुए।

इस प्रहसन और प्रदर्शनीके पश्चात् नादिर, शाहके राज्य-सम्बन्धी कार्योंको सम्हालनेकी फ़िक्रमें लगा । उसने पहले स्त्रिस्ता (वफ़तर) वगैरहका इन्तजाम ठीक किया । इसै बाद उसने राज-कर्मचारियोंकी ओर अपना ध्यान रँटाया । जिन कर्मचारियोंके प्रति उसके हृदयमें शंका थी, अथवा जिनपर वह शक करता था, कि वे हमारा साथ नहीं देंगे, उन सबको उसने राज-काजसे खारिज कर दिया और उनकी जगहपर उसने उन लोगोंको बहाल किया, जिनपर उसकी धारणा अच्छी थी अथवा जिन्हें वह अपना सच्चा सहायक समझता था । उसकी यह नीति कुल नयी नहीं थी । जब कभी उसने अधिकार प्राप्त किया, तभी उसने कर्मचारियोंका चुनाव अपने मनके मुताबिक किया । पाठकोंको सुनाल होगा, कि जब वह सिपहसालार बनाया गया था, तब उसने केवल उन्हीं सैनिकोंको रखा था, जिनपर उसका पूरा विश्वास था तथा जिनपर वह शक करता था, उनको उसने हटा दिया था । यह सारा प्रबन्ध करनेके पश्चात् हुकोंपर आक्रमणकर उसने उनसे पुराना बदला लेनेका अपना संकल्प पूरा करना शुरू किया ।

अस्ती हज़ार सैनिकोंकी एक महती सेना लेकर नादिर बाग़दादकी ओर बढ़ा । बाग़दादसे थोड़ी दूरपर अहमद पाशाने उसका मुकाबिला किया । दोनोंमें युद्ध हुआ । अहमद पाशा पराजित हुआ । नादिर उस खानको कई दिनोंतक बंदे रखा । इसी बीचमें तुबाल पाशा, शीराज़के अमर पाशा तथा अन्यान्य कई सरदार एक बड़ी भारी फ़ौज लेकर नादिरसे लड़नेके

लिये उसी जगहपर पहुँच गये। तुर्कों की सैनिक संख्या लगभग १ लाख २० हजार थी। दोनोंके बीच घोर-घमासान युद्ध होही रहा था, कि नादिरके घोड़ेको गोली लग गयी। घोड़ा जमीनपर गिर गया और मर गया। पर नादिर पैदलही चीरतापूर्वक लड़ता रहा। उसके [घोड़ेको न देखकर भण्डेवालेने हल्लाकर दिया, कि "नादिर मारा गया"। इस समाचारको सुनकर उसकी फलतन पीछे हटी और भाग चली। नादिर उन्हें संग्रह करने और मिटानेके लिये लाख प्रयत्न करता रह गया; पर सब बेकार हुआ। उखड़े हुए पाँच फिर जम न सके। इस युद्धमें दोनों तरफके ६० हजार क्षादमी काम आये! नादिरको भी इस वार बड़ी क्षति उठानी पड़ी। उसका सारा माल, कोष, तोप तथा युद्धकी अन्वान्य सामग्रियाँ तुर्कोंके हाथ लगीं।

बाग़दादके गवर्नर तुवाल पाशासे पराजित होकर नादिर अपनी फौजके साथ हमदन वापस आया। इस प्रथम पराजयके पश्चात् बड़े-बड़े पराक्रमी, शूर-वीर योद्धाओंका भी कलेजा पानी हो जा सकता था; पर नादिर तनिक भी उत्साहहीन नहीं हुआ। हमदनमेंही ठहर कर वह बाग़दादपर फिर आक्रमण करनेका प्रबन्ध करने लगा। पर बेचारके पास न धन था और न यथेष्ट अस्त्र-शस्त्रही। निदान, उसने महम्मदख़ाँको, दिल्लीपति महम्मद शाहकी सेवामें दूतकी हैसियतसे भेजा। महम्मद ख़ाँके हाथोंसे उसने जो पत्र भेजा था, उसका भाव इस प्रकार था,—“समयके प्रभावसे, दुर्दैववश, बाग़दादका सुबेदार तुवाल पाशाने हमारी फौजको परास्तकर दिया है। जितना माल-असबाब, अस्त्र शस्त्र और सज़ाना हमारे पास था,

एकदो इन लोगोंने लूट लिये । वरु हजारसे अधिक हमारे घोड़ा भी मारे गये । इसलिये भागा है, कि आप क्या करते एक करोड़ रुपये नकद और बारह हजार घुड़सवार पलटन हमारी सहायताके लिये अवश्य भेज देंगे । आपको अच्छी तरहसे मालूम है, कि ईरान और हिन्दुस्तान, इन दो देशोंके बादशाहोंके बीच बनिष्ठ मैत्री रह चुकीसे चली आती है । आपको स्मरण होगा, कि जिन समय दिल्ली-नरेश हुमायूँको शेरशाह अफगानोंने पराजित किया था, उस समय हुमायूँ इस्फहानमें पधारें थे और ईरानके शाह-सहमशाने वो करोड़ रुपये, कितनीही तोपें और बीस हजार घुड़सवार पलटनसे उनकी सहायता की थी, जिससे पहले हुमायूँ भारतपर फिर भी अधिकार प्राप्त कर सकें थे । स्वर्गीय हुमायूँ ईरानके शाहको इस कृपाके लिये ईरानके प्रति सदा अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते थे । अपनी मृत्युके कुछ दिन पहले ५० लाख रुपये उन्होंने ईरानको दिये थे । मुगल-सम्राट् अकबर शाहने भी ५० लाख रुपये दिये थे । इस प्रकार दो करोड़ रुपयेमें एक करोड़ तो बसूल हो चुका है, अब एक करोड़ धार वाक़ी है । इसलिये हुजूरसे अर्ज है, कि इस एक करोड़ रुपयेको हुजूर बसूलकर दें अथवा ईरान सरकारके खातेमें वाक़ी लिख लें । इस प्रकार ईरानको इस कठिन कालमें सहायता देकर पारस्परिक और ऐक्य प्रेमकी वृद्धि करें ।”

परन्तु इस पत्रका फल कुछ भी नहीं हुआ । निदान नादिर सोचने लगा,—“अब क्या करना चाहिये ? रुपये तो मिल सकते हैं ; पर कहाँसे और कैसे ?—केवल यही एक प्रश्न है ।

अबतक सब जगह, सब कालमें, मैं विजय-माल्य ग्रहण करता आया हूँ। इस समय पराजयकी कलङ्क-कालिमासे अपनी कीर्तिको पोत देना कदापि उचित नहीं।” इस समय नादिरके मनोभावको अनुभवकी पाठक भली भाँति समझ सकते हैं। शूर वीर, परिक्षमी, साहसी एवं रण-कुशल होते हुए भी शत्रुको लाख धार मैदान दिखानेवाला नादिर कैसेके मनसे पैमाल हो रहा है ! किसीने ठीकही कहा है:—

“हिक्मत इक्रीमकी भी भुलाती है मुफ़लिसी।”

अनेकानेक विचार करनेके बाद, नादिरको यह बात याद आयी, कि मशहदमें ईमाम सूता अली इस्लामकी दरगाहमें (समाधिस्थल) अपार द्रव्य रक्षित है। नादिर वहाँसे एक करोड़ रुपया लाया। उसके जरिये उसने युद्धके सारे सामान खरीदे और संग्रह किये और जहाँतक जल्द हो सका, नादिरने फिर भी तुर्कोंपर धावा बोल दिया। उधर तुर्कलोग यह विचारकर, कि ऐसे प्रबल पराजयके पश्चात् किसकी हिम्मत है, जो इस बिराट् तुर्क सेनाका सामना कर सके, छोटे-छोटे दलोंमें बिभ्रक होकर मौजके साथ बाग़दाद वापस जा रहे थे। इधर नादिरने अपनी सारी सेनाओंका संग्रह कर बड़े जोरदार अल्फाजोंमें उनसे कहा,— “वीरवीरो ! आपलोगोंकी अजित सेनाने अनेक बार अनेकानेक शत्रुओंको पराजित किया है। लेकिन किसी दैवी कारणवश आप लोग इस बार पराजित होगये हैं। पर आप इसके लिये ठनिक भी परवाह न करें। संसारका दस्तूर है, कि जहाँपर दो आदमी लड़ते हैं, वहाँपर एक जीतता है और दूसरा हारता है। इसलिये

ज्वालन होकर ईंधन रहना हम लोगोंके लिये नद्यापि उचित नहीं,—
 नलिन हमें जून जम्नाहके साथ तुर्कीका फिर सामना करनेके लिये
 जाने बदना करारिये । आपको मालूम होगा चाहिये, कि तुर्क-
 सेना किरान्ते शासनमें इस समय बिल्कुल लापरवाह होरही है ।
 टख्ता मंगटद मी डीप्ल हो रहा है और सब सैनिक छोटे-छोटे
 बल्लों विभक्त हो, बरकी ओर लौट रहे हैं । ऐसी अवस्थामें हम
 लोगोंको अपने अङ्गपर उनका मुलाखिला करना चाहिये । देशके लिये
 मरना जैसा मानना चाहिये, पराजित होकर अपने घरपर लौटकर
 आने देना-वास्तवियोंके गिरी प्रणारणी दयाकी आशा हम न करें ।”

इस प्रकार नादिर अपनी सेनाको प्रोत्साहितकर, उनको
 अपने साथ ले, आने पड़ा । तुवालपाशा ६० हजार जवानोंको
 लेकर नादिरका मुलाखिला करनेके लिये आने पड़ा । दोनों
 दलोंमें तुमुल युद्ध हुआ । बेचारा तुवालपाशा गोलियोंका
 शिकार बना और उसकी सेना पराजित हो, रथ-सालसे भाग
 गया । इस समय तुर्कीकी ऐसी हार हुई, कि उन्होंने नादिर-
 के विरुद्ध अब कभी सिर उठानेका साहस नहीं किया । फिर
 क्या था ? नादिरको मैदान साफ़ मिला । वह क्रमशः उन सभी
 जगहोंको, जिनपर तुर्कीने ईरानियोंसे छीनकर अपना अधिकार
 जमा रखा था, नादिरने अपने अधिकारमें कर लिया । नादिरकी
 इस सफलतापर ईरानी लोग बहुतही आनन्दित हुए । नादिरकी
 सहायतामें चारों तरफसे फ़ौजें आने लगीं । पर नादिर बाग़दादके
 पास पहुँचनेवालाही था, कि इतनेमें उसने सुना, कि शीराज़-
 का महमूद नामक उसका एक जेनरल विगड़ उठा है । तथा

शरीरपर अपना अधिकारकर, वहाँकी गद्दीपर शाह तहमाशके नामसे बैठ गया है ।

नादिर बाग़दादके पाससे महमूदका सामना करनेके लिये रवाना हुआ । महमूद, यह विचारकर, कि नादिरका कोई छोटा दल मुझसे मुकाबिला करनेके लिये आगे बढ़ता होगा, तीस हजार जवानोंके साथ आगे बढ़ा । केवल बीस हजार आदिमियोंके साथ नादिरको भाँसे देखकर, महमूद बहुतही प्रसन्न हुआ तथा अनुमान करने लगा, कि “अब तो मैदान मेरा है ।” नादिर उन्हीं सैनिकों द्वारा एक अच्छे व्यूहकी रचनाकर महमूदसे मुकाबिला करने लगा । पीछेसे नादिरकी बाकी फ़ौज भी उससे आ मिली । दोनोंमें खूब लड़ाई हुई । महमूदकी फ़ौजमें नादिरके नाम और पराक्रमका बहुत कुछ आतंक पहलेसेही घुसा हुआ था । महमूदने अपना घोड़ा नादिरकी ओर उसकी फ़ौजको बीचोबीचसे खीरता हुआ इस विचारसे बढ़ाया, कि सबसे पहले इसीके प्राणोंका अन्त कर देना अच्छा है । पर बेचारेका यह धार नादिरकी अजित सेनाके सामने व्यर्थ हुआ । अपने लारे प्रयत्नोंको व्यर्थ होते देख, महमूद बलूचीने, एक बरखी छोड़कर, अपनी जान बचानेके लिये, परशिवन खाईको पारकर भागना चाहा ; पर ज्योंही वह एक नावपर जाकर बैठा, त्योंही एक मल्लाहने उसे पकड़ लिया और नादिरके पास कुछ इनाम पानेके विचारसे लाया । नादिरने उसके कोष, अन्न तथा युद्ध-सामग्रियोंका पता लगानेके लिये उसे एक कोठरीमें बन्द कर रखा । नादिरको यह बात मालूम थी,

जि इन्हे, जान देना ही माल है । पर मतसूद हम वैद्वज्जनोंका
 लक्ष्य नहीं रह सकता था ? इस धौधेरी जोड़तीमें,
 जहाँकी सभामें, मतसूदने इस शरीर और संसारके छुड़ी पायो !
 मरि-के दिवसकी जान दिलमेंही रह गयी ! इस प्रकार मतसूदकी
 मृत्युके ज्ञानमें एक लम्बले जर्जरन्त खुडसगर और एक महा-
 लक्ष्मी हीका जन्म होगया !

मतसूदकी मृत्युके बाद नादिर गीराजमें कुछ दिनोंतक
 रहा गया । जहाँपर अरकर उसने वहाँके पलवाडियों और
 मतसूदके नाथियोंका कल्लेजाम करनेका हुम्म किया ।
 उसमें एक ही अपनी राजधानी स्प्यहानमें वापस चला
 गया । जहाँके काम-काज, जो उसकी अनुपस्थितिमें कुछ
 होने पर गये थे, उनको उसने ठीक किया । वहाँसे वह
 जार्जियापर अपना अधिकारकर उसने
 नेफलिस्तार भी अपना इफल जमाया । वहाँसे वह आरमेनियाकी
 राजधानी इरवानमें पहुँचा । उसे भी उसने अपने अधिकारमें
 किया । इसके बाद उसने शसाखी और गुब्जानपर अपना
 इफल जमाया । वहाँसे छुड़ी पाकर रुसियोंके पास उसने लिखा,
 कि "तुमलोग जितना शीघ्र हो सके, गोलानको खाली कर दो ;
 अन्यथा मुझे तुम्हारा सामना करना पड़ेगा ।" उसके पेल
 लिखनेका कारण यह था, कि गोलानमें रेशम अधिक उपजनेके
 कारण वह खान बहुतही धन-सम्पन्न था । रुसवालोंने नादिर
 जैसे शक्ति-सम्पन्न बीरसे लड़ना वचित न समझा । फलतः उन्होंने
 गोलान खाली कर दिया । इतनाही नहीं,—बल् नादिरके भयसे,

कास्मियन समुद्रके इधर इरवन्द और पाशु नामक दो स्थानोंके
 सिवा बाकी सब जगहोंको रूसवालोंने छोड़ दिया । इसके बाद
 नादिर और तुर्कोंके बीच सन्धि हुई । इस सन्धि-पत्रके अनुसार
 शाहके जीते हुए सभी प्रदेशोंसे तुर्कोंने अपना अधिकार हटा लिया ।
 इस प्रकार नादिरने एक-एक करके परशियाके सभी शत्रुओंसे
 पूरा पूरा बदला ले लिया और ईरानियोंके, जिन-जिन स्थानोंपर
 उन्होंने अपना अधिकार जमा रखा था, उन्हें फिर भी अपने
 अधिकारमें कर लिया ।



नादिरा की खोज

नादिर ईरानकी गद्दीपर बैठ गया ।

बाद श्योंही नादिर तुर्क और रूसियोंसे सन्धि करके अलग-थलग हुआ, श्योंही उसने ईरान देशके भीतर रहनेवाले सभी शासक, राज कर्मचारी, स्मृद्ध और अन्यान्य प्रतिष्ठित पुरुषोंके नामसे एक आजा-फर तिमनाला, जिसमें उसने उन सबको बर्दाश्तगामपर एक निश्चित दिनको एकत्र होनेका आदेश किया । एवं आज्ञाके अनुसार लग-भग छः हजार शासक, सरदार, कर्मचार तथा अन्यान्य अधिकारी उस स्थानपर एकत्र हुए । नादिरका डेरा-ढंढा वहाँ पहलेसेही गिरा हुआ था और नादिर भी वहाँपर डेढ़ लाख जवानोंके साथ एक दिन पहलेसे मौजूद था । जब सब अगस्तुक सरदार एक स्थानपर एकत्र होगये, तब नादिर उन डेढ़ लाख सैनिकोंको चारों तरफ खड़ा करने, अपने सीमेसे बाहर निकला और अपने स्वामानिक ओजस्वी भावसे इस प्रकार भाषण किया :—

“मेरी आज्ञाके अनुबन्धी उपस्थित सबको !

आषलोगोंको भलीभाँति विदित है, कि अपनी मातृभूमि ईरान देशके सब शत्रुओं, तुर्क, रूसी, अफगान तथा अन्यान्य प्रायः सभी जातियोंको परास्तकर, हमलोगोंने उन्हें अपने अधीन कर

लिया है। अब अगर हमलोगोंके आक्रमणसे कोई शत्रु बचा हुआ है, तो वह कम्हार देशके अफगान हैं। यदि ईश्वरकी कृपा हुई, तो बहुत शीघ्रही हमलोग उन्हें भी पराजितकर, अपने अधीन करेंगे, यह मेरा बृहद्विश्वास है। इन सब शत्रुओंको शान्तकर, मेरी यह प्रयत्न इच्छा है, कि मैं अपना शेष जीवन सुख, शान्ति एवं आनन्दमें व्यतीत करूँ तथा मेरे देश और मेरी जानिको किसी कारण विशेषसे, मेरी सेवाकी जयतक झरकरत न पड़े, तबतक किसी भी काममें मैं अपना हाथ न लगाऊँ। तुर्क और रूसियोंसे तो सन्धि होही चुकी। तातारी एवं सीमा-प्रान्तके निवासी शत्रुओंको हमलोगोंने इस प्रकारसे पद-दलित कर रखा है, कि वे अब आनेवाले कई वर्षोंतक अपना तिर ऊँचा नहीं कर सकते। अस्तु; सजातीय बन्धुओ! ईरानके सज्जन, सरदार और कुशल कर्माचारियो! अब आपका धर्म है, कि आप अपने बीचसे कोई ऐसे सुयोग्य शासकको निर्वाचित करें, जो आपके राज-काजका सम्पादन सफलतापूर्वक कर सके। यदि आप लोग चाहें, तो अपने पद-धर शाह-तद्दमाशको अथवा अन्यान्य निम्न सरदारोंमें से भी किसी एक ऐसे सज्जनको शाह-पदके लिये आप चुन सकते हैं, जो आपके सुख, शान्ति और अन्यान्य हितोका सय प्रकारसे रक्षक हो। इसलिये आपसे मेरा अनुरोध है, कि आप आगामी तीन दिनोंके बीचमें इस विषयपर विचारकर, अपनेसब साथियोंकी सम्मति ले, मुझे सूचित करें।”

इतना भाषण करनेके पश्चात् वह अपने खीमेमें चला गया। सभा विसर्जित होगयी। उपस्थित सब सरदार अपने-अपने

लोको में दृष्टे गये। नादिरने अपने कर्मचारियोंको हुकम दिया, कि जितने सरदार और शासक यहाँपर उदरे हुए हैं, उन सबके भोजन-पखाने आदिका प्रबन्ध राज कोषसे लिया जाये। वहाँ प्रायः प्रचुर धन-रह आदिसे भोजन इत्यादिका प्रबन्ध प्रचुर बावटों द्वारा किया गया। लगातार तीन दिनोंतक अनामक-अमोह, वाक्-रह, खेल-उमारी, भोजन-पान आदि एक स्तरोपर प्रचुर गये। इसी बीचमें नादिरके मुसलमान सरदारोंके पास पहुँच-पहुँचकर पोछीयः तौरपर यह प्रयत्न करती थे, कि जिसमें नादिर ईरानका शाहनशाह बनाया जाये। वे कहते थे, कि 'अथवा नादिरशाह इस पदको स्वीकार नहीं करेंगे, नयापि हमलोगोंके विशेष प्रयत्न और प्रार्थनासे सम्भव है, हमलोग अपने इस उद्देश्यमें सफल हो जायें। कारण, नादिरशाह जैसे नुपयोग्य शासन-कर्त्ताके वर्तमान रहते हुए, दूसरेको शाह बनाना हमलोगोंके लिये सर्वथा अनुचित है। जिस समय नादिरशाह द्वारा किये गये ईरानके अनेकानेक उपकारोंको ओर हम लोग ध्यान देते हैं, उस समय मालूम होता है, कि नादिरशाहके उपकारसे हमलोगोंका रोम-रोम फुलल है। तुर्क, रूसी आदि अनेकानेक शत्रुओंसे ईरानको बचानेवाला यही नादिरशाह है। वन-वनपर ईरानियोंको अपमानसे बचानेवाला क्या नादिरशाहही नहीं है? अनेक शत्रुओंको पद-दलितकर, ईरानके नष्ट धानोंपर पुनराधिकार प्राप्तकर, ईरानियोंके मस्तकको ऊँचा करनेवाला, उन्हें आराम-नौरथ एवं अग्निमानके पदपर पहुँचानेवाला क्या नादिरशाह नहीं है? यदि हाँ, तो क्या हमलोगोंका यह धर्म नहीं

होना चाहिये, कि अन्य किसी शासकको, ईरानका शाह न बनाकर, यह गौरव और मानका पद, सुयोग्य, वीरवर, ईरानका उद्धारकर्त्तानादिरशाहको समर्पण करें ?”

चौथे दिन दरबारमें सरदार तथा अन्य लोगोंकी भीड़ लग्न गयी। नादिर अपने छोमेसे बाहर आया। बड़ी उत्सुकता पूर्वक उसने पूछा, कि ‘उपस्थित सज्जनोंने किसको शाह-पदके लिये पसन्द किया ?’ कोई भयके कारण, कोई नादिरके रोवके कारण, कोई उसकी शूरतापर मुग्ध हो तथा कोई अपने किसी और स्वार्थके कारण, अमिप्राय यह, कि सबने एक स्वरसे यही कहा, कि “हुजूरके रतते हुए ईरानकी गद्दीपर बैठनेका अधिकारी दूसरा कौन हो सकता है ?” निदान सबने नादिरशाहसे प्रार्थना की, कि वही ईरानके शाह-पदको स्वीकार करे। इसपर नादिरने उत्तर स्वरूपमें निम्न-लिखित बातें कहीं:—

“भाइयो ! यद्यपि मेरी यह इच्छा नहीं है, कि मैं ईरानकी गद्दीपर बैठूँ, तथापि यह जानकर कि आप भाइयोंको आह्ला, ईश्वरकीही आह्ला है, मैं इस पदको स्वीकार करता हूँ तथा विश्वास दिखता हूँ, कि अपने अनवरत परिश्रम तथा उद्योग द्वारा, साथ-साथ आप भाइयोंकी सहायतासे भी, ईरान-राज्यको संसारके अन्यान्य राज्योंमें सबसे अप्रसर करनेका सदा प्रयत्न करूँगा। पर मेरी तीन शर्तें हैं। उन्हें यदि आप स्वीकार करेंगे, तो मैं ईरानकी गद्दीपर बैठूँगा। शर्तें ये हैं:—

“(१) ईरानकी समग्र भूमिपर मेरा तथा मेरे मरनेके बाद

मेरी उत्तराधिकारिणी सन्तानियोंका अधिकार रहे। पद-भ्रष्ट शाह तथा उसकी सन्तानका इसपर कोई भी अधिकार नहीं।

“(२) यदि पद-भ्रष्ट शाह अथवा उसकी कोई भी सन्तति इस राज्यपर अपना अधिकार करना चाहे, तो ईरानका एक भी वादमी उसका साथ न दे,—बल्कि उसकी इस हरकतके लिये उसकी सारी सम्पत्ति राज-कोषमें ज़ब्तकर ली जाये; और

“(३) तुर्क, ईरानी, तातारी और हिन्दुस्थानी मुसलमानोंके बीच सुन्नी † और शियाका † जो भ्रमड़ा सदा उठता रहता है और जिससे मुसलमान समाजकी अनेकानेक हानि हो रही है, इसका निपटारा सदाके लिये हो जाना चाहिये।

“मेरी तो राय है, कि उपर्युक्त दोनों समाजोंके अग्रगण्य सज्जनों एवं मौलवियोंकी एक विराट् सभा की जाये और उस सभाके तर्क-चिन्तक और वाद्-विवादके पश्चात् बहुमतसे जो एक

‡ सुन्नी, मुसलमानोंका वह फ़िरक़ है, जो अब्दुलक़्क़, उमर, उसमान और अलीके उत्तराधिकारको न्यायानुमोदित समझता है। तथा अब्दुल हनीफ़, मलिक शफी और इनबलके यथाये सुताबिक कुराय और मद्मदीके वादोंको मानता और उनके अनुसार चलता है।

† शिया, मुसलमानोंका वह फ़िरक़ है, जो उपर्युक्त चार आचार्योंके उत्तराधिकारको न्यायानुमोदित नहीं समझता। उनकी धारणा है, कि इज्जत मद्मदीके वाद्, उनकी इच्छाके अनुसार, मुसलमान अली उनके उत्तराधिकारी बने थे। अब्दुल हनीफ़ आदि टीकाकारोंकी बातको न मानकर वे अपने इमानोंकी बातों और आज्ञाओंकाही केवल पालन करते हैं। उदाहरणार्थ शिया सम्प्रदायवाले शालियाको नहीं मानते, पर सुन्नी मुसलमान इसे मानते और उसके लिये मात्तम मनाते हैं।

पन्थ निर्धारित किया जाये, सारा मुसलमान-समाज बेर-विरोध-को छोड़, उसी पन्थका अनुसरण करे ।”

इसपर एक उमरावने खड़ा होकर, बहुत प्रार्थना पूर्वक कहा,—“शरीफपरवर ! आपकी पहली और दूसरी बात तो हमलोगोंको सदा मञ्जूर है । पर तीसरी बात धर्म-सम्बन्धी विषयपर कुछ कहनेकी शक्ति हमलोगोंमें नहीं है । इस विषयके निर्णय करनेका भार तो मौलवी और मुल्लोंपर ही है । इस सम्बन्धमें उनकाही निर्णय हमलोगोंको मान्य है । साथ-ही-साथ धर्मका पथार्थ मार्ग बतलानेके लिये कलामे इल्लाही और हज़रत महम्मद रसूलिल्लाहका हदीस हमलोगोंके सामने मौजूद है । अतएव हमलोगोंके तर्क-वितर्क और चाद-विवाद द्वारा किसी धर्म-सम्बन्धी विषयका निर्णय करना कदापि उचित नहीं । शासकका यह धर्म है, कि धर्म-सम्बन्धी किसी नवीन मार्गका आयोजन न करे, ईश्वरके वचन और उनकी आह्वानोंका पालन करे । मेरी यह सचिनय प्रार्थना है, कि यदि आप इस मानव-राज्यमें धर्म-सम्बन्धी विषयोंका निपटारा न करें, तभी कल्याण है । कारण, यह देखनेमें आया है, कि जिन-जिन शासकोंने इस विषयकी ओर अपने हाथ बढ़ाये हैं, उन्हें भयङ्कर परिणाम भोगना पड़ा है ।”

उमरावके इस एतराज़पर नादिर बड़ाही क्रुद्ध हुआ । उसने मन-ही-मन विचार किया, कि यदि इस समय, मैं इस एतराज़को सुनकर सुपचाप बंद जाता हूँ, तो इसका परिणाम भविष्यमें बहुत बुरा होगा । मेरा सारा रोब और दबदबा

जता रहेगा और साथ-ही-साथ मेरा मतलब भी मिट्टीमें मिल जावेगा। यह विचारकर, नादिरने तत्क्षणही यह हुजूम दे दिया, कि "इसका सिर काट डालो, जिसमें दूसरा कोई पेसी-पेसी दुष्टताभरी बातें न करने पाये।" निदान झूर, धूर्त और स्वार्थी नादिरको आशासे उस बेचारे उमरावका सिर काट डाला गया।

उमरावका सिरच्छेद होनेके पश्चात्, किसका साहस, जो नादिरकी आशाओंके विरुद्ध चूँतक कर सके? नादिरने फिर कहा,—“माइयो ! यदि मेरी आज्ञा आप सबको स्वीकार, हो, तो कहे, और जिन्हें बस्वीकार हो, वे कृपाकर अपने विरोधका कारण दिखलायें।” पर इस बार फिर किसके दो सिर हुए थे, जो उस बलामें गला डालता। निदान सबने नादिरकी 'हाँ'में 'हाँ' मिला, उसकी आज्ञाओंको शिरोधार्य किया। इसपर नादिर बड़ाही प्रसन्न हुआ। लूटके जितने धन और जवाहरात उसके पास थे, उनका अधिकांश उसने अपने सैनिकोंमें बाँट दिया। अमीर-उमराव और राज-कर्मचारियोंको भी उसने विपुल धन-सम्पत्ति और मान-दान दिया। नादिरकी इस उदारतापर, अप्रसन्न व्यक्ति भी उससे प्रसन्न हो गया। केवल एक ही परिवार था, जो उससे असन्तुष्ट था और वह था—इजतहार वंश। कारण, एक तो उनके धर्माधिकारीकी हत्या नादिरने करा डाली थी और दूसरे, उनके धर्ममें महान् परिवर्तन करनेकी तद्वीर भी सोची जा रही थी। यह सब करने-करानेके बाद नादिर दूसरे दिन पारसनगरमें बड़ी धूम-धामसे गया। बड़ी

सज्ज-शस्त्रके साथ उसे राज्य-सिंहासन प्रदान करनेकी तैयारी की गयी। निदान वह सन् १७३६ ई०के मार्च महीनेमें नादिरशाहके नामसे घोषित हो, ईरानको गद्दीपर बैठ गया। उमरावोंने उसे ताज पहनाया। इस प्रकार एक इच्छि गरेंडियेका बालक, नादिर कुली खाँ, अपने अतुल साहस, विपुल पराक्रम, दुर्बोध्य धूर्तता तथा विकट कपट द्वारा शनैःशनैः उन्नति करता हुआ, शाहसला-मत नादिरशाहके नामसे भुवनमें प्रशस्त हो, सारे ईरानका बाद-शाह बन बैठा।

ईरानकी गद्दीपर बैठतेही नादिरने देखा, कि राज्यके बहुतेरे रुपये इधर-उधरके काममें लगाये जा रहे हैं। बहुतेरे मौलवी और मुह्ला जो शिया सम्प्रदायके हैं, मुफ्तका माल उड़ा रहे हैं। एक दिन नादिरने उन मौलवी और मुह्लोंको बुलाकर पूछा,—“मस्जिद् आदिके नामपर राज्यके जो इतने रुपये खर्च किये जाते हैं, उनका प्रयत्न किस प्रकारसे हो ?” इसपर उन्होंने उत्तर दिया,—“गरीबपरखर ! ये रुपये खैरातके लिये निकाले हुए हैं। ये रुपये सिर्फ नयी मस्जिदोंके बनानेमें, पुरानी मस्जिदोंको मरम्मत करनेमें, मौलवी और उल्माओंको इनाम वगैरह देनेमें, तथा गरीब और फ़कीरोंको मदद देनेमें खर्च किया जाये। इसकी वजह यह है, कि येही बेचारे मौलवी और उल्मा इन मस्जिदोंमें जाकर सुबह और शाम खुदाकी इबादत करते ये। जिसकी वजहसे ईरानकी हालत आज ऐसी तरकीपर है और वे आज भी बुधा करते हैं, जिससे ईरान आगे और तरकी करता जाये।” उल्माओंकी यह बात सुनकर नादिरने जोशमें आकर यह उत्तर दिया,—“क्या

ये आलिम और उलमा पहले नहीं थे ? क्या वे इन मस्जिदोंमें पहले हुआ नहीं किया करते थे ? यदि हाँ, तो शाह-तहमाशके बक्मों या उनके पहले ईरानकी ऐसी रही और बुरी हालत क्यों थी ? क्यों उस बक़ खुदावन्दने उनकी हुआका कुछ भी ज़याल नहीं किया ? कुछ नहीं, यह सब आप लोगोंके चोचले हैं। हुआ कौरहसे कुछ नहीं हुआ है। सच्ची इबादत तो इन सिपाहियोंकी तलवार, तोप और बंदूक कौरहमें है। इन्हींकी मददसे ईरानका भाषा आज ऊँचा हो रहा है और अबतक यह ताफ़त मीनूद रहेगी, तबतक ईरानका सर भी ऊँचा रहेगा। जहाँ वे हाथसे गये, समझ रखिये, वही बक़से ईरानके बुरे दिन आ जायेंगे। आज इसका भार मेरे ऊपर है; पहले नहीं था। इसलिये वे रुपये इनकीही खातिर-बातमें ख़राये जायें।" ऐसा कहकर उसने उन सब रुपयोंको अपने सैनिकोंमें बाँट देनेका हुक्म दे दिया।

धर्म-कार्यके नामसे अलग निकाले हुए वार्षिक आयके रुपयोंकी तायदाद दस लाख तूमान अर्थात् ४ करोड़ ५० लाख रुपयोंके लगभग थी। अब शिया लोग बहुत क्रुद्ध और क्षुब्ध हुए। अपने प्रयत्न और पह्यन्त द्वारा उन्होंने नादिरकी फ़ौजको उभाड़ना चाहा; पर वे तो सुन्नी थे, उन शिया सम्प्रदायवालोंकी बात वे कब मानने वाले थे—ज़ासकर वैसे समयमें जब नादिरके दिये हुए मालसे वे मालामाल हो रहे थे ? फ़लतः फ़ौजके प्रति शिया सम्प्रदायका प्रयत्न विफल हुआ। तब वे जन-साधारण प्रजाकी ओर झुके; पर वे इसमें भी सफल नहीं हो सके। कारण, एक तो आम तौरसे, अपनी राज-घोषणामें नादिरने सुन्नीमतका प्रतिपादन कर रखा था,

जिसके भयके मारे उसकी मर्जीके खिलाफ कोई चूँतक नहीं कर सकता था और दूसरे, राज्यमें सभी नौकरियाँ वह केवल खुशियोंकोही देता था। इस लोभसे भी लोग सुन्नी मज़हबमें ही दाखिल होते थे। इस प्रकार राज्यकी सारी खुशियाओंको सुन्नी सम्प्रदायवालोंके पक्षमेंही देखकर ईरानकी लगभग सारी प्रजा इसी मतको पक्षपातिनी बन गयी; केवल गिने-गुये शिया ईरानमें रह गये, जिनकी हस्ती वहाँ दालमें नमकके बराबर भी नहीं रही। अतएव अब ईरान राज्यमे चारों तरफ, खुशियों-काही बोलवाला हो गया।



आठवां परिच्छेद।

कन्धान-विजय ।

दिसंबर १७३६ ई० के नवम्बर महीनेमें नादिरशाह सलीम-
शाममें ईरानका बादशाह चुना गया । वहाँसे वह काजवीन
वापस आया । वह वह स्थान है, जहाँपर ईरानकी गद्दीपर
बैठते समय, वहाँके सभी बादशाहोंका राज्याभिषेकोत्सव
मनाया जाता है । वहाँ पहुँचकर नादिरशाहने राज-दरख्त ग्रहण
किया—शाही ताजसे अपने मस्तकको सुशोभित किया । यहाँपर
उसने यह शपथ भी ली, कि "हज़रत पैगम्बर महम्मदके कथना-
नुकूल, ईश्वरी नियमोंके अनुसार, मैं ईरानका राज-काज चला-
ऊँगा तथा अपनी प्रजाकी रक्षा वृत्त-चित होकर रहूँगा ।"
इसके बाद वहाँसे लौटकर वह इस्पहान आया । यहाँपर कुछ
दिनोंतक उसने विश्राम किया । इसी बीचमें उसने अपना राज-काज
भी सम्हाला । हमके सुन्नाह और भारतवर्षके शाहनशाह आदिकी
ओरसे यघार्दके पत्र भी इसी बीचमें नादिरके पास पहुँचे ।
अपने यघार्द-पत्रके साथ-ही-साथ उन लोगोंने नादिरशाहको ईरान-
का शाह होना भी स्वीकार किया । वह सब होते हुए भी युद्ध-
भवसनी नादिरशाहके हृदयसे युद्ध-भाव नहीं गया ! जाये
कैसे ? उसकी तो सारी उमर युद्धकेही मन्कट-भ्रमेलोंमें कटी थी ।

ईरानमें कुछ दिनोंतक ठहरकर उसने वहाँके राज्य-सम्बन्धी सभी कार्योंका निबन्धन और प्रबन्ध समुचित रूपसे कर दिया। पश्चात् कम्भारकी ओर उसने अपनी आँखें दौड़ायीं। कम्भारकी विजयका 'प्रोग्राम' तो उसके कार्यक्रमकी सूचीमें कितनेही दिनोंसे रूटक रहा था।

सन् १७३६ ई०के दिसम्बर महीनेमें, ईरान-राज्यका सारा प्रबन्ध अपने बेटे रज़ाकुलीखानके हाथोंमें सौंपकर, नादिर अस्सी हजार सैनिकोंकी एक विराट् सेना संग्रहकर, कम्भारपर चढ़ाई करनेके लिये, इस्फ़हानसे करमानिया होकर खानः हुआ। उसकी पीठपरही तामसखाँ बकील, जो उस फ़ौजका एक सरदार था, चालीस हजार जवानोंके साथ, उसकी मददमें चला। हुसैनखाँ नामक एक व्यक्ति उस समय कम्भारका शासक था। जिस समय उसने नादिरशाहके एक प्रबल सेनाके साथ कम्भारपर चढ़ाई करनेके लिये आनेकी बात सुनी, उस समय वह प्रचुर भोजन-सामग्रियाँ इकट्ठीकर अपने क़िल्लेके भीतर बन्द हो गया। महीनों-तक क़िल्लेके भीतर बन्द रहनेपर भी नादिरशाहकी फ़ौजने जब उसका पिरछ न छोड़ा और उसकी भोजन-सामग्रियाँ भी घट गयीं, तब हर तरहसे हताश हो, उसने पुत्रके साथ अपनेको नादिर-शाहके चरणोंपर समर्पित कर दिया। नादिरशाहने उन्हें बन्दी कर लिया और कम्भारके क़िल्लेपर अपना अधिकार जमा लिया। किसी-किसी इतिहासकारका कहना है, कि नादिरसे मुफ़ाविला करनेके लिये, हुसैनखानि, तत्कालीन सज्जाद्, दिल्लीपति महम्मद शाहसे कुछ फ़ौज और कुछ रुपयोंकी मदद माँगी थी। एक बार

इसी बीचमें अपने बेटेको भी उसने इसी कामके लिये भेजा था, पर महम्मद तो अपनी मौजमें मस्त था। गैरोंकी रस्ताई उसके घर बधवा करपर कहाँ ? निदान, हुसेनशाह और उसके बेटे दोनोंको निराश होकर थापस आना पड़ा। कन्धारपर अपनी विजय-वैजयन्ती पहरानेके बाद, लोभी नादिर भारतकी भव्यभूमिकी ओर अपनी संहारिणी सेनाके साथ अपनी रक्त-पियासाकी वृत्तिके लिये मुँह बाधे दौड़ता है।

राज-दृष्ट प्रहण करनेके पश्चात्, शिया और सुन्नी दोनों मतोंके सम्बन्धमें नादिरशाहने इस वाक्यकी एक राजाज्ञा निकाली:—

“शाहकी मर्जीसे, जो लोग सरदार, सदर क़ानूनगो और शाही महलके खालिम हैं, वे इस बातको जानें और सब जगहोंमें तथा सदा याद रखें, कि—

“यद्यपि हमलोगोंके विजय-श्रेयताका निवासस्थान सलीमगाममें है, तथापि अनेकानेक समाजोंमें हम लोगोंने स्वीकार कर लिया है, कि आजसे, अपने पुराने हनीफ़ और ज़फ़रके मज़हबके मुताबिक़ हज़रत रसाले अनाब पैग़म्बर महम्मदका उत्तराधिकारी, उनकी आज्ञाके अस्तुकुल, हम उन चार खालीफ़ोंको मानते हैं और भाव-स्पकता पड़नेपर हम उनका नाम बड़े आदर पूर्वक लेते हैं। एक बात और यह, कि इस राज्याकी बहुतेरी जगहोंमें हम देखते हैं, कि

इस राजाज्ञाकी मूल प्रति फ़ारसी भाषामें है। बा० मोहने इसकी एक प्रति खे० फ़ेहर साहबको दी थी। खे० फ़ेहर साहबने उसका अनुवाद अज़रेजीमें किया है।

अज्ञान के तै समय, नमाज़ पढ़ते समय और कलमा पढ़नेके बाद बहु-तेरे लोग "अली-वली अह्लाह" का चचारण करते हैं। यह बात शिया मतके अनुकूल है; पर पुराने ख़यालके खिलाफ़ है और साथ-ही-साथ मज़हबके खिलाफ़ होते हुए भी, जो वसूल हम लोगोंने ठीक किया है, उसके भी विरुद्ध है। साथही यह भी विचार करना चाहिये, कि जो अमीर-उल-मोमिनीन, असद अह्लाह, अल-कातिब है, हम लोगोंसे प्रशंसा पानेपर न तो उसकी महत्ता बढ़ सकती है और न हमारी निन्दासे घटही सकती है। इस-लिये इससे लाभ तो कुछ नहीं होता; पर हानि बहुत है। कारण, दोनों फ़िज़ोंमें, शिया और सुन्नीमें, जो पैगम्बर और हज़रत मुहूर्ज़ा दोनोंको मानते हैं, इससे विरोध और मनोमालिन्य पैदा होता है, जो पैगम्बर महम्मद और हज़रत मुहूर्ज़ा दोनोंकी इबादतके खिलाफ़ है। इसलिये अपनी इस सूचनाके ज़रियेसे छोटे-बड़े, नीच-ऊँच, अमीर-नारीब, शहरके भीतर और बाहरके रहनेवालेको, मैं हुक्म देता हूँ, कि ये इन फालतू शब्दोंका—अली वली अह्लाहका प्रयोग न किया करें; क्योंकि यह प्रकृत धर्मके अनुकूल नहीं है।

"जो लोग इस फ़र्मानके खिलाफ़ कोई भी कारवाई आजसे करेंगे, वे शाहनशाहके अक़ुपा-पात्र बनेंगे। सफ़र ११४६ हिजरी—अर्थात् जून, सन् १७३६ ई०।"

७ "लाएलाहा इल्लल्लाह मोहम्मद वा रसूलिहाह"—अर्थात् खुदा एक है। मोहम्मद उसका पैगम्बर और अली उसका दोस्त है। यही मुसलमानोंका मुब-मन्त्र है।"

जिस समय नादिरशाह शुद्ध-शुद्धमें गद्दोपर बैठे, उस वक्त उसने अपने नामके चाँदी और सोनेके सिक्के चलावाये। सोनेके सिक्केमें पहले फारसी भाषामे यह शेर लिखा हुआ था:—

“सिक्का बरज़र फर्द नामे सल्तनत् सादर जहाँ,
नादिरे ईरौं ज़मी कय फुर्के गेती सिता।”

अर्थात् ईरान घरानाका नादिर जो जगत्-विजयी है, उसीकी सल्तनतमें यह सोनेका सिक्का छोड़ा गया है।

यह सिक्का हिजरी सन् ११४८में तैयार हुआ था। भारत-विजयके पश्चात्, हिजरी सन् ११५२ में वह ईरान वापस आया, तो उसने निम्नलिखित शेर सिक्केपर छुड़ाया :—

“हस्न मुल्ताँ वर सलातीने जहाँ
शाहे शाहीं नादिरे साहब किरौं।”

अर्थात् “बादशाहोंका बादशाह सौभाग्यवान् नादिर संसारके समस्त राजाओंका राजा है।”

नादिरशाहो मोहरपर निम्नलिखित शेर छुड़ा हुआ था :—

“नमीने डीलतोर्दी रफता वूद् चूँ अज़ज़ा,
वनामे नादिरे ईरौं ज़रार दाद् छुदा।”

अर्थात्—दे धर्म और राज्यके नगीने ! तू अपने स्थानसे झूट हो गया था। ईश्वरकी कृपासे ईरान-पति नादिरके नामसे तू फिर स्थिर हो।”



नौवां परिच्छेद

नादिरशाहका भारत-आक्रमण

मुसलमानों का भारत-आक्रमण और अंग्रेजों के शासन के आदिकालमें, अर्थात् १७ वीं शताब्दी के उत्तरार्धमें मुगलिया सल्तनतका भाग्य-सूर्य मध्याह्नमें था। न कहीं विद्रोह था, न विद्रोह। मुगल-साम्राज्यके प्रति पड़ोसियोंका भी एक प्रकारसे सर्वतोभावेन अभाव था। इसमें सन्देह नहीं, कि यत्र-तत्र दो-चार शासक इधर-उधर ज़िल्लाफ़में उठकर खड़े हो जाते थे; पर राज्यके सङ्गठन और प्रजाकी भक्तिके कारण शाही फ़ौज, उन्हें परास्त करकेही छोड़ती थी। परन्तु औरङ्गजेबकी अदृष्टशक्ति और धर्मान्धताने राज-भक्त भारतके सभी गैर-मुसलमानोंको अर्थात् हिन्दू प्रजाजनोंको राज्यका कट्टर शत्रु बना दिया। अकबर, जहाँगीर तथा शाह-जहाँ द्वारा-सिंचित हिन्दू प्रजाजनोंकी प्रेम-लता, औरङ्गजेबकी दूर्ध्तापूर्ण धर्मसम्बन्धी नीतिके कारण विष-बेलि-रूपमें परिणत हो गयी। फलतः वह स्वधर्मीय समस्त मुसलमान-समाजको भी सम्बुद्ध न रख सका। सुन्नी उससे भलेही प्रसन्न हों, शिया तो उसके जानी दुश्मन बन बैठे। दक्षिणमें मराठोंने मुगलोंके प्रति अपनी तलवार उठा ली। स्वधर्माभिमानि, जाति-गौरव-युक्त राजपूत सत्कारण राजपुतानेमें विद्रोह उठे। पञ्जाबके सिक्खोंने

अपने धार्मिक-सङ्गठनकी मोदमें मुगलोंका मुकाबिला करनेके लिये एक विराट् सेनाकी रचनाकर डाली और निजामुलमुल्क उधर सुदूर दक्षिण प्रदेशमें, बैठकर वहींसे मुगल शाहन्शाहकी जड़में कुल्हाड़ी मारने लगा । भिन्न-भिन्न प्रदेशोंके सुबेदार और सरदार भी शाही सल्तनतसे सहयोग स्थापन कर अपने-अपने स्वतन्त्र राज्योंका संस्थापन करने लगे । औरङ्गजेब तो अपने विपुल बल, असीम साहस और अचिराम उद्योग द्वारा उन्हें कुछ दिनोंतक शान्त रखनेमें भलेही सफलभूत हुआ, पर इस ईर्ष्या और विद्रोहानलका रूप दिन-प्रति-दिन भीतर-ही-भीतर इतना प्रचण्ड हो गया, कि औरङ्गजेबकी मृत्युके पश्चात्ही उसके वंशजोंकाही इसने तहस-नहस नहीं किया, वरन् समस्त मुगल साम्राज्यका भी अन्तमें संहार कर डाला ।

औरङ्गजेबके बाद जितने बादशाह दिल्लीकी गद्दीपर बैठे, सब एक-से एक बढ़कर मूर्ख, कमज़ोर और आराम-तलब होते गये । किसीसे बन नहीं पड़ा, कि विगड़े हुए सप्टारोंको समझलें, शासनका सङ्गठन सुदृढ़ करें तथा मुगल साम्राज्यकी कीर्ति-पताका विश्व-गगनमें फहराकर मुगल-वंशकी मान-मर्त्यादा एक बार फिर भी बढ़ायें । ठीक है, जब बिनाशका समय आता है, तब बुद्धि भी विनष्ट हो जाती है ।

बादशाह तो अपने आमोद-अमोद, और नाच-तमाराओंमेंही सदा व्यस्त रहते, उधर वज़ीर और सिपहसालार सर्वसत्ता हो गये । यहाँतक, कि महम्मदशाहके राजत्वकालके कुछ दिन पहलेसे ही सैयद-बन्धु (सैयद हुसेनबलीखाँ और सैयद अब्दुल्लाहखाँ)

पुगल-साम्राज्यके यथार्थ सर्वाधिकारी बन गये । जिसे वे चाहें, उसे गद्दीपर बिठायें और जिसे नापसन्द करें, उसे वे गद्दीसे उतार दें । बादशाह बनाना और उसे क्षण भरमें गद्दीसे हटाना, उनके बाएँ हाथका खेल हो गया । लाचार होकर बादशाह बेचारा भी काठके पुतलेकी तरह उनके हाथोंके इशारेपर नाचता था । महम्मदशाहकी कुछ साजिशोंसे यद्यपि उन दोनोंका नाश होगया, पर रङ्गीले-छवीले महम्मदशाहका सलतनतसे क्या सरोकार ! अन्तःपुरमें बराङ्गनाशोंसे सदा खिरा हुआ, गाने-बजाने और नाच-तमाशोंमें इस प्रकार व्यस्त रहता, मानो उसे 'रासलीला' करनेसे कभी फुर्सतही नहीं । वह शीघ्र अस्तुमें खसकी टट्टियोंसे खिरे हुए, बर्फसे पोते हुए, गुलाब और केवड़ेसे सींचे हुए आँगनमें आराम करता तथा वर्षा-अस्तुमें, नवपल्लवोंसे सजे हुए, फूल-पत्तियोंसे खिरे हुए, फुहारकी बगलमें, बङ्गलेमें बैठकर मल्लार और हिंडोलेका मजा चन्द्रबदनियों और मृगनयनियोंके साथ नित्य लूटता था । यदि कहीं शरद्वस्तु आयी, तब तो कवि-वर पन्नाकरके 'कसालेके मुयाला, चित्रशाला और दुशाला आदि कितने उदित मसाले हैं, महम्मदके मसालेके मुकाबिलेमें सब फीके पड़ जाते और खिरदी बसन्तमें बार महम्मदकी तो कुछ बातही नहीं कहनी है ।

बादशाहसे लेकर बन्दीतक, सब बारीक-से-बारीक आवरावरेका बख्त केशरी रङ्गमें रङ्गवा और अवरणके छँटि लगावाकर पहनते और इस प्रकार बैठते और नयी नवेच्छियोंके साथ राग-बसन्तकी बहार लेते, कि यदि अस्तु-राज बसन्तकी

अथवा रस-राज कामदेवकी सवारी कहीं उस मोरसे गुजर जाती तो वे 'धन्यास्तुते भारत भूमिभागे' कहकर फिर भी यहाँ आनेके लिये एक बार छटपटाने लगते और ऐसे राजा, महाराजा और बादशाहके दरबारी भी तो वैसेही होते हैं न ! "सरकार कहे रात, तो मैं चाँद दिखा दूँ ।" इसी परिस्थितिमें नादिर जैसे विपुल बलशाली तथा असाधारण साहसीके लिये यहाँपर आक्रमण कर महम्मदको परास्तकर, दिल्ली-साम्राज्यपर अधिकार जमाना भला कौनसी बड़ी भारी बात थी ?

जिस समय नादिरशाह कम्धारपर घेरा डाले हुए था, उसी समय मुगल-साम्राज्यका शत्रु निज़ामुलमुल्क और सयादतखाने अपने एक गुप्त दूत द्वारा उसके पास एक पत्र भेजा । इसमें उन दोनोंने लिखा था,—

"बहुत दिन पहलेसे आप भारतपर आक्रमण करनेका विचार कर रहे हैं । आपके उस कदेश्यकी सिद्धिके लिये इससे बढ़कर उपयुक्त समय आपको नहीं मिलेगा । महम्मदशाह रात-दिन पेश-ब-आराम, शराब-ब-कवाच और नाच-ब-रङ्गीमें मग्नरूढ़ रहता है । प्रजाकी रक्षा और शासनकी ओर वह ज़रा भी ध्यान नहीं देता और न शत्रुओंका मुकाबिला करनेके लिये सेनाका सङ्गठन ही करता है । फलतः काफिर हिन्दू, सिक्ख और मराठे मुसलमानी सल्तनतको दिन-रात तबाह करते हुए अपना अधिकार जमाये चले जा रहे हैं । ऐसे मौकेपर आप हिन्दुस्तानपर ज़रूर क़दम करें । हम सब भी आपकी पूरी मदद करेंगे । हमारा तो बड़ा विश्वास है, कि आप ज़रूर विजयी होंगे ।"

इस पत्रका नादिरने इस प्रकार उत्तर दिया,—“दिल्लीपर आक्रमण करनेका कार्य केवल कठिनही नहीं है, वरन् एक प्रकारसे असम्भव भी है। एक तो बड़ी-बड़ी नदियाँ हिन्दुस्तानपर चढ़ाई करनेके रास्तेको रोकती हैं। दूसरे सिक्ख, मराठे और मुसलमान आदि चिकट लड़ाकोंके सामने मेरी पलटनका मुकाबिला करना कोई साधारण बात नहीं है। इसके साथ-साथ काबुलके किलेपर नासिरख़ाँ और लाहोरके किलेपर ज़करियाख़ाँ अपने-अपने दल-बलके साथ क़ज़ा किये हुए बैठे हैं। यदि कहीं हमलोग उनसे लड़कर आगे भी बढ़े, तो उस थकी हुई हालतमें शाही पलटनका मुकाबिला करना हमारे लिये असम्भव हो जायेगा।”

इसके प्रत्युत्तरमें फिर भी सयादतख़ाँ और निज़ामुल-मुल्कने नादिरशाहके पास इस आशयका पत्र लिखा,—

“इस बातसे तो आप निश्चिन्त रहें। आपका मुकाबिला करनेका कोई साहस भी नहीं करेगा। हिन्दुस्तानके सम्बन्धमें आपकी जैसी धारणा है, वह आपके लिये नहीं। हाँ, दो एक ज़ौमवाले आपका मुकाबिला करेंगे; पर उन्हें हमलोग देख लेंगे। आपके प्रतापके सामने सब हार जायेंगे। अटक पार उतरनेमें तथा मार्गके अनान्य अड़चनोंको दूर करनेमें भी हमलोग आपका साथ देंगे। यह आप निश्चित रूपसे जान लें। अतः आप अवश्य आर्ये।”

निज़ामुलमुल्क तथा सयादतख़ाँके इस पत्रसे प्रोत्साहित हो, १ लाख २५ हजार जवानोंकी पलटनके साथ नादिरशाहने कन्धारसे कूच किया। यह पलटन तुर्की, बलूची, खुरा-

सानी, जार्जियन आदि जातियोंकी थी। पल्लन तो मार्ग-जनित अनेकानेक फलोंको झेलते-झेलते एक गयी; पर धूर्च-राज नादिरशाहने उन्हें हताश नहीं होने दिया। उसने उन्हें यह दिलासा देकर आगे बढ़ाया, कि "भारतपर आक्रमण करनेसे हमलोगोंको लूटनेका बहुतही अच्छा अवसर हाथ लगेगा; क्योंकि भारत अतिशय धनशाली देश है। इस लूटमें हमलोगोंको बहुत धन मिलेगा। इससे केवल हम लोगही धनी नहीं हो जायेंगे, वरज हमलोगोंका देश भी धन-सम्पन्न हो जायेगा और इस प्रकार ईरान देशके धन और वीरताकी ख्याति समस्त संसार-में फैल जायेगी।" ऐसी सुश-सुवरी सुनकर किसका कलेजा उत्साहसे फूलकर हुना-चौगुना न हो जायेगा। निदान, पल्लन आगेकी ओर पूर्ण उत्साहसे बढ़ने लगी।

इधर नादिरशाहकी मददके लिये निजामुलमुल्क और सया-वतख़ाँकी यह कोशिश होने लगी, कि जिसमें काबुल और लाहोरके सुबेदार नादिरशाहके आक्रमणको न रोके,—वरज उससे मिल जायें। जिसमें नादिरशाहको दिल्लीपर चढ़ाई करनेमें कोई भी कठिनाई नहीं पड़े। फलतः उन दोनोंने फ़ावुलके हाकिम

ॐ "मुगल-शासन-कालमें प्रत्येक प्रदेशमें दो शासक रहते थे—(१) हाकिम और (२) किलेदार। हाकिमका काम दीवानी कार्योंको देखना तथा किलेदारका काम फौजका इन्तिजाम रखना था। किलेदारका पद फ़ौजीयताका होता था। यह पद उसका कभी था सकता था, जब बादशाह उसे इत्यादि।" यह मत लेम्स प्रकृत हैं। पर सुबेदारकी ताहद कहीं गयी, इसका पता नहीं चलता !

शीराज़ख़ाँ, और सुबेदार नासिरख़ाँ तथा लाहोरके हाकिम ज़क़रियाख़ाँको निम्नलिखित आशयका एक पत्र भेजा,—

“भारतके राज-काजके सम्बन्धमें नादिरशाहको पूरी जान-कारी है। उन्हें यह बात मली भाँति मालूम है, कि बादशाह और उसके मुसाहब अपना सारा समय शराबख़ोरी और विषय-वासनामें व्यतीत करते हैं। इसलिये उन्होंने इस साम्राज्यको जड़-मूलसे उखाड़ के कनेका टुकड़ा निश्चय कर लिया है। आपको यह भी मालूम है, कि दरबारमें ऐसा एक भी आदमी नहीं, जो नादिरशाहके सामने खड़ा हो सके। ऐसी हालतमें आप यहाँसे किसी प्रकारकी भी मददकी आशा न करें। बेहतर तो यह होगा, कि आप अहमन्दीसे काम करके अपने और अपनी फ़ौजको बचा लें।”

इस पत्रका उनके हृदयपर कैसा प्रभाव पड़ सकता है, यह पाठक ख़यंही विचार कर लें। निदान इस पत्रके पढ़तेही नासिरख़ाँ और ज़क़रियाख़ाँके हृदयमें आतङ्क छागया।

नादिरशाह कन्धारसे विदा होकर, ग़ोर और ग़ज़नीके शासकोंको परास्त कर तथा उन्हें अपने अधिकारमें ला, उनको रक्षाके लिये अपने थोड़ेसे सिपाही छोड़कर, काबुलमें आ घमका। सुबेदार नासिरख़ाँ, जो वहाँका क़िल्लेदार था, नादिरशाहकी फ़ौजका पता पातेही वहाँसे नौ-दो-म्पारह हो गया और पेशावरमें पहुँचा। शीराज़ख़ाँने शहर और क़िल्लेपर छः सप्ताह तक बड़ी वीरताके साथ अपना अधिकार जमाये रखा। इस बीचमें पेशावरमें नासिरख़ाँके पास और दिल्लीमें बादशाहके पास बार-बार

बढ़ लिखता रहा, कि वे मद्दके लिये सेना भेजें। पर न नासिरखाँ आया और न बादशाहके यहाँसे कोई पलटनदी भायी। अन्तमें छः सप्ताहके बाद शीराज अपने पुत्र सहिल वीर नतिको प्राप्त हुआ। काबुलपर नादिरका अधिकार हुआ। बाघरके समयसे जितने धन-रत्नादि काबुलके खजानेमें एकत्र थे, वे सब नादिरशाह और उसके फ़ौजी अयानोंके हाथ लगे। उनका हौसला इस धन-प्राप्तिके पश्चात् और भी बढ़ गया।

नादिरशाहके काबुलपर कब्ज़ा कर लेनेकी बात जय दिल्लीमें पहुँची, तब दरवारमें बड़ी खलबली मच गयी। बादशाहका हुक्म हुआ, कि बहुत जख्म सेना तैयार करो और नादिरशाहसे मुजाबिला करनेके लिये उसे आगे भेजो। जयपुरका राजा जयसिंह भी नादिरशाहके इस आक्रमणके सम्वन्धमें निम्नलिखित आशयका पत्र बादशाहकी सेवामें हमेशा लिखता रहा,—

“नादिरशाहका भारतपर आक्रमण करना एक पूर्व-रचित पद्मन्वका फल है। आप इन मुग़ल वंशरावोंसे अर्थात् निजामुल-मुल्क वगैरहसे सदा सावधान और सतर्क रहें। मेरी तो धारणा है, कि वे किसी घातक कर्मके प्रतिपादनके लिये आपसमें सब एक हो रहे हैं। नासिरखाँ और शीराजखाँ दोनोंकी परवरिश हमेशा दरवारसे होती आयी है। शीराजखानि तो राज्य-रक्षाके लिये अपनी जान देदी, पर नासिरखाँ पेशावर भाग गया। यदि लाहौरका शासक ज़करियाखाँ कुछ दूर आगे बढ़कर नादिरशाहका मुजाबिला करे, तो इस अवधिमें शाही पलटन कुछ और आगे बढ़ जा सकती है। हम राजपूत लोग तो शाही सेनाका

साथ बेनेके लिये तथा साम्राज्यके लिये मरनेका सदा तैयार रहते हैं।”

एक ओर जयपुरका राजा जयसिंह, एक कट्टर हिन्दू होते हुए भी, मुसलमान बादशाह महम्मदशाहकी विजयके लिये इतना उत्कण्ठित और लालायित है—अपनी जातिके सभी व्यक्तियोंके साथ मरने और मारनेके लिये तैयार है—परन्तु दूसरी ओर एक नहीं बरन् अनेक मुसलमान, मुगलिया सल्तनतका निमक सैकड़ों वर्षसे खाये हुए और उसीसे पले हुए, अपनी जाति, धर्म और देशके मालिक और पालक महम्मदशाहके जीवनकी जड़में झुल्लादी मारनेके लिये जी-जानसे बशाक हो रहे हैं। फिर भारत ! तेरी यह दुर्गति क्यों न हो ! तू जो अबतक इस अवस्थामें बचा है, यही आश्चर्य है ! अस्तु ; खानदीराने जयसिंहका पत्र बादशाह सलामत महम्मदशाहको पढ़ सुनाया। साथ-ही-साथ जयसिंहकी नादिरका विरोध करनेकी उत्कट इच्छा जानकर, उसने बादशाहसे कहा,—“बादशाह सलामत ! जयसिंहके लिये राजधानीकी रक्षाका भार छोड़कर, लड़ाईके मैदानमें उतरना, कभी अच्छा न होगा।”

आखिरकार यह तय हुआ, कि पल्टन दिल्लीसे लाहोरके लिये रवाना हो जाये। लाहोरतक पल्टनके साथ बादशाह खुद जायें। वहाँसे पल्टन काबुलकी ओर निजामुलमुल्क और दूसरे दो उमरावोंकी सेनाध्यक्षतामें भागे बढ़े। लाहोरमें पेशवाना भी बननेका हुक्म हो गया। पर खानदीर और निजामुलमुल्ककी चालाकीसे पल्टन रोक दी गयी। वह दिल्लीसे

उसे समय खानः न हो सकी । तबतक नादिर काबुलपर अपना कब्ज़ा कर पेशावरकी ओर अपना पाँव बढ़ा रहा था । रास्तेमें अफ़ग़ानों और पहाड़ी जातियोंने उसका मुकाबिला किया । उन्होंने सात सप्ताहतक उसे वहीं रोक रखा, नादिरशाहके बहुतरे सिपाहियोंको मारा और घायलकर दिया । नादिरशाहने यह देखा, कि इनसे अब छुटकारा पाना मुश्किल है और जबतक इनसे छुटकारा नहीं मिलेगा, तबतक आगे बढ़ना भी असम्भव है । यह विचारकर उसने उन सबको घूस देकर शान्त करना चाहा । उन लोगोंने भी देखा, कि सुबेदारके पाससे मददमें न खपये आये और न फ़ौज ही आयी ; साथही पाँच-सात वर्षोंसे बादशाहकी ओरसे हमलोंको कोई मदद भी नहीं मिल रही है, नादिरशाहके खपयेको सहर्ष स्वीकार कर लिया । इसके बाद उन्होंने नादिरशाहको सीधा मैदानही नहीं दे दिया,—वरन् कुछ लोग उसकी सेनामें भी भर्ती हो गये । दूसरे अफ़ग़ानोंने भी जब अपने भाइयोंके भर्ती स्वीकार कर लिया । इसके बाद उन्होंने नादिरशाहका सीधा मैदानही नहीं दे दिया,—वरन् कुछ लोग उसकी सेनामें भी भर्ती हो गये । दूसरे अफ़ग़ानोंने भी जब अपने भाइयोंके भर्ती

सुना, कि नादिरशाह एक बड़ी भारी पल्टनके साथ आ रहा है, त्योंही वह बुरी तरह घबरा गया ! उसकी फ़ौज भी घबरा उठी । बहुतेरे जवान तो इसी कारणसे उसका साथ छोड़, भाग गये । शाही पल्टनने उसका साथ दिया । मुठ-भेड़ हुई । नासिरख़ाँ हार गया और कैद कर लिया गया । नासिरख़ाँको पराजित तथा नादिरशाहको विजेता जानकर कुछ अफ़ग़ान, जिन्होंने अभीतक नादिरशाहका साथ नहीं दिया था तथा जो लज्जाके कारण अङ्गुलोंमें छिपकर सारी बातें देख रहे थे और समयकी प्रतीक्षा कर रहे थे, इस समय आकर नादिरशाहके साथ हो लिये । नादिरने अब पेशावरपर अपना अधिकार जमा लिया ।

पेशावरपर क़ब्ज़ाकर नादिरशाह आगेकी ओर बढ़ा । पर अटकके पास, उसके रास्तेमें एक नदी पड़ती थी, जिसको पार करही नादिर लाहोर आदि स्थानोंपर अपना अधिकार कर सकता था ; पर लाख प्रयत्न करनेपर भी, नादिरशाह उसे पार नहीं कर सका । इसी विचारमें डेढ़ महीनेतक वह नदी-तटपर ठहरा रह गया ; पर उसकी एक भी अङ्गुली काम न आयी । अन्तमें एक अफ़ग़ानी सरदारने आकर नादिरशाहसे निवेदन किया, कि यदि आप हमारे प्रान्तपर आक्रमण न कर, तो हम आपको नदी पार करनेके लिये एक बहुतही सरल मार्ग बता दगे । नादिरशाह इस अवसरमें उसकी बात अस्वीकार क्यों करता ? उसने फ़ौरनही उसकी प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया तथा उसे विश्वास दिलाया, कि मेरी ओरसे आपकी ज़रा भी बुराई नहीं हो सकती । इसपर उसने उसे नदी पार करनेके लिये

एक ऐसा मार्ग बता दिया, कि नादिरशाह सूरी-सूरी नदीको पारकर अटक पहुँचा गया। वहाँ सिर्फ कई दिनोंकी लड़ाईके बाद उसने अटकपर अपना अधिकार जमा लिया।

अटकपर अपना अधिकार करनेके बाद, नादिरशाह अपनी सेना लेकर लाहोरकी ओर बढ़ा। वर्षा ऋतुके कारण पञ्जाबकी सभी नदियाँ उन दिनों उमड़ी हुई थीं। किसी-किसी प्रकार और-और नदियोंको पार करता हुआ नादिर झेलम नदीके किनारे पहुँचा। लाहोरसे कुछ दूर आगे बढ़कर वहकि सुबेदार ज़कारिया खाने नादिरशाहका मुक़ाबिला करनेके लिये ऊपरी दिशावटके तरकीसे एक जयवृंस्त मोर्चा बाँध रखा था; परझेलमको पारकर ज्योंही नादिरशाहकी फ़ौज आनेकी ओर बढ़ी, त्योंही निजामुल मुल्कका इशारा पातेही, ज़कारिया ख़ान, अपनी सारी फ़ौजके साथ लाहोरके क़िल्लेमें घुस गया। नादिरशाहकी फ़ौजने उस क़िल्लेको घेर लिया।

इसके बाद ज़कारियाख़ान नादिरसे मिल गया। नादिरने उसे अच्छा पुरस्कार दे, अपनी ओरसे उसे लाहोरका गवर्नर बना दिया। विलियम जोन्सने, नादिरशाहकी जो जीवनी लिखी है और जो १६७२ ई० में प्रकाशित हुई है, उसमें लिखा है, कि ज़कारियाख़ान पहिले नादिरशाहसे मिला हुआ नहीं था। वह एक जयवृंस्त मोर्चा बाँधकर नादिरशाहसे मिलनेके लिये लाहोरके आगे झेलम नदीके इसपार बह रहा हुआ था और उसे इस बातका विश्वास था, कि नादिरशाहकी फ़ौजको नदी चौरह पारकर पहुँचनेमें अभी बहुत विलम्ब होगा। तबतक

शाही पलटन उसकी मददमें पहुँच जायेगी और तब फिर नादिरशाहसे एक अच्छा मुक़ाबिला होगा ।

इसी बीचमें, उसके विश्वासके विरुद्ध, नादिरशाहकी फ़ौज धड़ाकेसे पहुँच गयी । बेचारा ज़क़रियाखाँ घबरा गया । उसकी सेना भी घबरा उठी । पहले मुक़ाममें वह लाहोरके क़िल्लेमें भाग आया और डेढ़ महीनेतक नादिरशाहके विरुद्ध क़िल्लेको बचाये रखा ; पर जब दिल्लीसे कोई भी पलटन उसकी मदद करनेके लिये नहीं आयी और क़िल्लेके भीतर रसदका सामान भी घट गया, तब वह सारी आशा छोड़कर लाचारीमें नादिरशाहसे आ मिला ; किन्तु इस बातका विचारकर, कि निजामुलमुल्कने उसे पहलेसेही मिला रखा था और महम्मद-शाहके विरुद्ध निजामुलमुल्क तथा सयादतख़ाँ द्वारा जो षडयन्त्र-रचा गया था, उसमें ज़क़रियाखाँ भी शामिल था, ऐसी अवस्थामें जोन्स साहबके कथनपर कोई विश्वास नहीं कर सकता । अस्तु, ज़क़रियाखाँ नादिरशाहसे मिल गया, यह बात निर्विवाद है ।

लाहोरपर विजयकर नादिरशाहने वहाँका गवर्नर ज़क़रियाखाँकोही रहने दिया । उसने लाहोरमें किसी प्रकारकी लूट-खसोट न मचायी । हाँ, दूरके सफ़रसे वह थक गया था, इसलिये शालोमार घाटमें (जो लाहोरमेंही है) वह एक सप्ताहके लिये अपनी फ़ौजके साथ विश्राम करनेके लिये ठहर गया । एक सप्ताहतक वहाँ पूर्ण विश्राम लेनेके बाद वह आगेकी ओर बढ़ा । दिन-रात धावाकर वह सरहिन्द और अमृताला होता हुआ, सन् १७३६ ई० के जनवरी महीनेमें वह तिरौरी पहुँचा ।

जिस समय नादिरशाहने पेशावरके गवर्नरको परास्तकर वहकि डिल्लेपर अपना क़ब्ज़ाकर लिया और मुग़लिया फ़ौजकी हारकी ज़रूर दिल्लीमें पहुँची, उस समय महम्मदशाहकी प्रमोद-निद्रा भङ्ग हुई ! उन्होंने हुक्म दिया, कि नादिरशाहके मुक्काबिलेके लिये पल्टन भागे बढ़ायो जाये । निदान एक विशाल पल्टन सोप-क़ाना ख़ौरद लड़ाईके सब सामानोंके साथ भागे बढ़ायी गयी । पर मुग़लिया पल्टनका भागे बढ़ना निजामुल-मुल्कको कद पसन्द था ? वह तो चाहता ही था, कि नादिर एक-द-एक बिना रोक-टोकके देहलीमें आ डटे और महम्मद-शाहको गद्दीसे हटाकर दिल्लीके तख़्तपर अपना क़ब्ज़ा कर ले । लेकिन ख़ूँकि महम्मदशाहने पल्टनको भागे बढ़ानेका हुक्म निजामुलमुल्कको दे दिया था और साथ-साथ उसने यह भी कह दिया था, कि पीछेसे मैं खुद आरहा हूँ, लाचार होकर निजामुल-मुल्कको अपनी पल्टन भागे बढ़ानी पड़ी ! पर निजाम अपने वदे-इसे विचलित नहीं हुआ । रास्तेमें वह सैनिकोंसे यह कहता गया, कि “नादिरशाह एक बढ़ाही बलशाली योद्धा है । उससे मुक्काबिला करना कठिन काम है । आजतक किसीने भी उसे परास्त नहीं किया ।” उसकी इन सब बातोंसे, कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि मुग़लिया पल्टनका दिल हूटता गया । शूरताकी जगहपर कायरता और साहसकी जगहपर भयने उनकी पूँछ पकड़ी । रक्षकही जहाँ भक्षक हो, बहाँवर पेसी बात क्यों न हो ? निदान निजामुलमुल्ककी अध्यक्षतामें मुग़ल पल्टन दूसरी जनवरी सन् १७३९ ई०को करनालके मैदानमें पहुँची । यह स्थान दिल्लीसे

लगभग १४० मीलके फासलेपर है। १८ वीं जनवरीको महम्मद शाह भी अपनी तशरीफ़ लेकर वहाँ पहुँच गये।

काबुलपर क़ब्ज़ा करनेके बाद, आगेके स्थानोंपर अपना अधिकार जमाता हुआ, जब नादिरशाह अटकके निकट आकर अटक गया, तब वहाँसे उसने एक पत्र लिखकर अपने दूतके द्वारा महम्मदशाहके पास भेजा। उस पत्रकी बातोंका समर्थन करनेके लिये, काबुलके कई सरदार भी नादिरशाहके उस दूतके साथ गये। पत्रका आशय इस प्रकार था:—

“शाह सलामतके रीशने-दिमाग़में यह बात ज़ाहिर हो, कि मेरा काबुलमें आना और उसपर अपना दख़ल जमाना, महज़बी और आपकी दोस्तीके ख़यालसे हुआ है। मेरी समझमें यह बात नहीं आती, कि दक्खनके दरिद काफ़िर मुसलमान बादशाहोंसे फ़ौज़र खीय बसूल करते हैं? मैं अटकमें सिर्फ़ इसी ख़यालसे ख़रा हूँ, कि जब ये काफ़िर ‘हिन्दुस्तानपर’ चढ़ाई करें; तब कज़लेवशकी मातहतमें एक पल्टन भेजकर मैं उन्हें दरखाये दोज़कमें डाल दूँ। तवारीख़ इस बातकी तसफ़ीस करती है, कि हमारे और आपके घरानेमें हमेशासे मेल रहा है। मैं अली मुर्तुज़ाकी कसम खाकर कहता हूँ, कि मेरे दिलमें इसके सिवा और कोई भी दूसरा ख़याल नहीं है और न कभी किसी दूसरे ख़यालके होनेकी उम्मीदही है। यों तो आपकी मर्जी,—आप जैसा समझे, लेकिन मैं तो आपके ज्ञानदानका हमेशा दोस्तही रहा हूँ और उम्मीद करता हूँ, कि ताज़िन्दगी ऐसाही बर्ताव रबूँगा।”

✽ ‘दरिद काफ़िर’से नादिरशाहका मतलब मराठोंसे था।

नादिरशाहने इस पत्रको अगस्त महीनेके मध्यमें भेजा था। इसके आठ-दस दिनके बादही नादिरशाहने एक दूसरा पत्र भी महम्मदशाहके पास भेजा, जिसमें उसने महम्मदशाहसे चार करोड़ रुपये और पाँच सूबे माँगे थे। पर उनमेंसे एक भी पत्रका उत्तर नादिरशाहके पास नहीं पहुँचा। पहले दूतको अल्लाहाबादके गवर्नरने मार डाला और दूसरे दूत द्वारा प्रेषित पत्रका कोई उत्तरही नहीं मिला। इस घटनासे नादिरशाहकी क्रोधान्त्रि धधक उठी। यद्यपि अल्लाहाबादपर आक्रमणकर और वहाँके गवर्नरको मारकर, उसने वहाँके किलेपर अपना अधिकार जमा लिया; पर उसका क्रोधानल इसीसे शान्त नहीं हुआ और महम्मदशाहसे मिले बिना उसका यह क्रोधानल शान्त भी नहीं हो सकता था।

नादिरशाहके उपर्युक्त पत्रसे यह पता चलता है, कि हिन्दु-स्थानपर वह अपनी दुरी दृष्टि नहीं रखता था तथा उसका अटकमें ठहरना केवल महम्मदशाहकी मर्द देनेके क़यालसे था; पर नादिरशाहके प्रारम्भसे लेकर आजतकके इतिहासपर पाठक ध्यान देंगे, तो पता चल जायेगा, कि धूर्त नादिरशाहने वह पत्र केवल महम्मदशाहको धोका देनेके लिये लिखा था। कारण, जिस समय शुरु-शुरुमें नादिर ईरानके तटपर बैठा था, उस समय उसने अपनी वह अमिलाना प्रकट की थी, कि "तुर्किस्तान, कस्त आदि ज़ीतोंके बाद केवल कन्धार और हिन्दुस्थानको अपनी क़ब्ज़ेमें लाना बाज़ी रह गया है।" उनमें कन्धारको तो वह लेही चुका था, केवल हिन्दुस्थान बाज़ी रह गया था। इसे भी

लेकर नादिरशाह अब अपना हीसला पूरा क्यों न कर ले । नादिर-शाहका हिन्दुस्थानपर आक्रमण करनेका दूसरा कारण यह था, कि जिस समय नादिर तुर्कोंसे परास्त होकर अपनी समस्त शक्ति और सामग्री गँवाकर छूट आया था, उस समय उसने महम्मद शाहके पास एक पत्र लिखा था, जिसमें ईरानके शाह और हिन्दु-स्थानके शाहनशाह, इन दोनों घरानोंसे चिर-सम्वन्ध दिखलाते हुए, उसने महम्मद शाहसे प्रार्थना की थी, कि आप ऐसे असमय-में रुपये और फौजसे मेरी सहायता करें; पर महम्मदशाहने उसकी धक भी न सुनी । इस बातका दुःख और द्वेष उसके दिलसे दूर नहीं हुआ था । तीसरा कारण यह था, कि जिस समय नादिर-शाह कन्धार आदि देशोंपर आक्रमणकर रहा था, उस समय उसने महम्मदशाहके पास एक पत्र लिखा था, कि इन देशोंके किसी भी अफ़ग़ानको आप अपने राज्यमें शरण न दें । पर महम्मदशाहने उसके इस असुरोधकी अवहेलनाकर, बहुतैरे अफ़ग़ानोंको अपने राज्यमें बसनेको खान दिया था और चौथा तथा सबसे प्रबल कारण यह था, कि उसका दूत जलालाबादके गवर्नर द्वारा मार डाला गया था ।

इन सब बातों और घटनाओंपर दृष्टि रखते हुए नादिर-शाहके पत्रके भावको समझना, अपने दिल व विभागको घोषा देना है । कारण, ऊपर कही गयीं बातोंको यदि हम छोड़ भी दें, तो भी सन् १७३८के सितम्बर महीनेमें अपने पुत्र एज़ाकुली-जैसे, भारतपर आक्रमण करनेकी जो बातें उसने कही थीं, वनसे उसके मनका भाव साफ़-साफ़ जाहिर हो जाता है ।

दूसरी बात यह भी है, कि जब निजामुलमुल्क आदिके अतुरोधसे यह कान्धारसे हिन्दुस्तानपर आक्रमण करने और उसको अपने कब्जेमें लानेके लिये ही आ रहा था, तब वैसी हालतमें उसका अपने परमें दोस्तीकी बातें लिखना, उसकी घूर्णता और धोने-बाजीका परिचायक नहीं तो और क्या हो सकता था ?

एक ओर नादिरशाह धनलोभ्य तथा विजयोन्मुख उद्भट योद्धाओंके साथ तिरौरीके मैदानमें बड़ा खड़ा है। दूसरी ओर महम्मदशाह करनालमें ३० हजार पैदल ३ हजार सुइसवार और २ हजार तोपखानेके साथ पड़ाव डाल, पीछेसे अपनी और भी पलटनकी पहुँचकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। नादिरशाह करनालमें बढ़कर महम्मदशाहकी फौजपर इसलिये चढ़ाई नहीं कर रहा है, कि करनाल एक बहुतही सुरक्षित स्थान है, वहाँकी सेनापर चढ़ाई करनेपर लेने-के-देने पड़े जायेंगे। इसी बीचमें अर्थात् १४ फरवरी सन् १७३६ ई०को नादिरशाहको यह बात मालूम हुई, कि सयादतखाना एक भारी फौजके साथ बादशाहकी मददमें आ रहा है। यद्यपि अब उसकी अबाधित गतिको रोकना नादिरशाहके लिये कठिनही नहीं,—वरन् असम्भव भी है, तथापि ईरानी सिपाहियोंका एक दल उसने सयादतखानाकी पिछली पलटनसे मुकाबिला करनेके लिये भेज दिया। उस दलने जाकर सयादतखानाकी पिछली पलटनमें खूब मार-काट मचायी और उनको सारी चीजें भी लूट लीं।

यह बात जब सयादतखानाको मालूम हुई, तब वह आग-बबूला हो उठा। आगे पीछेका कुछ भी ज़याल लिये बिना, उसने

नादिरशाह पर धावा बोल दिया। महम्मदशाह और उनके सरदारोंने भी भले-बुरेका तनिक भी ध्यान न दे, अपनी विशाल फौजके घमण्डमें आकर और यह अनुमानकर, कि हम विजयी ज़रूर होंगे, सघातका साथ दिया। इसी समय खानदौरा, निजा-मुलमुलक और घज़ीरे-आजम कमरुद्दीन, ये तीनों भी अच्छे-बच्छे सेनापतियों और अपनी-अपनी बड़ी-बड़ी फौजके साथ महम्मदशाह-के पास पहुँच गये। इस समय महम्मदशाहके पास काफ़ी फौज थी। पर बीखर नादिर यह देखकर भी तनिक नहीं घबराया,— बरज़ उसके हृदयमें एक नवीन और अपूर्व उत्साहका संचार हो आया। उसे इस बातका विश्वास होगया, कि गज़ाक़तमें पले हुए, आमोद और प्रमोदमें सदा आसक्त रहनेवाले ये हिन्दु-खानी, हठे-कठे ईरानियोंके सामने थोड़ी देरतक भी ठहर-नेवाले नहीं हैं।

जब उसने मुग़लोंकी सारी पल्टनको एकट्ठी साथ लड़नेके लिये तैयार होते देखा और साथ-साथ सब हाथियोंको भी आगे बढ़ते देखा, तब उसका यह विचार और भी बटल हो गया। उसने अनुमान कर लिया और उसका अनुमान ठीक भी था, कि न तो इतनी बड़ी सेनाका संगठन और सञ्चालनही एक समयमें हो सकता है और न वे व्यावहारिक दृष्टिसे बहुत देरतक मिड़कर लड़ाई कर सकते हैं। इस विश्वासके वशीभूत हो, अपने सिपहसालार नसीरुल्लाहके अधीन अपनी फौजको छोड़, वह सिर्फ़ एक सुशिक्षित दल लेकर मुग़ल-फौजपर बाज़-की तप्ट दृष्ट पड़ा। पाँच घण्टोंतक घमासान युद्ध हुआ।

ईरानियोंके उत्साह और उमंगको देखकर मुगल पलटन तो बिल्कुल ही घबरा उठी। पर सैनिकोंकी संख्या बहुत अधिक रहनेके कारण वह जल्दीसे भाग भी न सकी। सबादतख़ाँ, जो सबसे पहले मैदानमें उतर पड़े थे, सबसे पहले चोट खाकर भाग गये। उनकी पलटन भी उनके पीछे भाग चली। यह देखकर सैनिकोंमें एक बड़ी भारी खलबली मच गयी। सब अपनी-अपनी जगह छोड़कर भागने लगे। सबादतख़ाँके दोनों भाइयों थोड़ीही देर बाद ज़ैदकर लिये गये। ख़ानदीराको गोली लग गयी। वह दूसरे दिन मर गया। तीस हज़ार सिपाहियोंके साथ बहुतरे सरदार मैदान आये। बहुतरे ज़ैदकर लिये गये। नादिरशाहके पक्षके भी सात सरदार और द्वाइ हज़ार जवान मारे गये। तथा पाँच हज़ार सवार और सिपाही आयल हुए।

अपनी सेना और सरदारकी यह दृशा देखकर महम्मद शाह तो घबरा उठा। मरने और भागनेके बाद उसके पास अब केवल थोड़ेसे सैनिक रह गये। बादके दो-तीन दिनोंमें, निजामुलमुल्क और सबादतख़ाँ अपने अनेक साथी और सिपाहियोंके साथ नादिरशाहसे जा मिले। चालबाज़ नादिरशाहने भी उनकी ख़ूब ख़ासि-वात की। उधर बेचारा महम्मदशाह उन वचै हुए सिपाहियोंका एक मोर्चा पाँच करनालके मैदानमें फिली प्रकार अपनी जीवन-रक्षा करने लगा। नादिरशाहके सिपाहियोंने उसे यहाँपर आकर घेर लिया। अन्तको महम्मदशाहने नादिरशाहके पास अपनी जीवन-रक्षाके लिये पैग़ाम भेजा और अपना सारा राज उसे सौंप देनेका भी सन्देश कहला भेजा।

नादिरशाहने इसे सहर्ष स्वीकार किया। २०वीं फरवरीको महम्मदशाह नादिरशाहसे उसके झीमेमें मिलने गया। वह जब लगभग आधा रास्ता तैकर चुका था, तब तहमासर्खाँ वकील उसकी अगवानीमें आया। नादिरशाहके पास पहुँचनेमें जब थोड़ीही देर यात्री रह गयी, तब उसका छड़का नसीरुल्लाह मिरजा, एक पालकीपर चढ़कर महम्मदशाहको ले जाने आया। महम्मदशाहको देखकर वह सवारीसे उतर पड़ा और महम्मदशाहका यथोचित सत्कार किया। महम्मदशाहने भी उसे गले लगाया। फिर दोनों नादिरशाहके दरवारकी ओर बढ़े। दरवारके दरवाजेपर पहुँचकर महम्मदशाहके तीन-चार मुसाहबोंको छोड़कर और सब वहाँपर ठहरा दिये गये। जब महम्मदशाह नादिरशाहके पास पहुँचा, तो नादिरशाहने अपनी गद्दीसे उतरकर उसका समुचित सत्कार किया। उसे अपने गले लगाया। अपने साथ महम्मदशाहको अपनी गद्दीके पास बैठाया।

आदर-सत्कार और फुशल-मङ्गलके पश्चात् नादिरशाहने महम्मदशाहको यों कहना शुरू किया,—“बड़े ताज्जुबकी बात है, कि आप अपने राज-काजका कुछ भी खयाल नहीं करते। मैंने आपके पास कितनेही फत लिखे, दूत भेजे, अपनी दोस्ती आपसे बाँधिर की; लेकिन आपके वज़ीरोंने मेरी एक भी नहीं सुनी,—जवाबतक नहीं दिया। हुकुमत और साइस्तागीकी कमज़ोरीकी वजहसे मेरा एक दूत तमाम कानूनोंके बरखिलाफ़ आपकी सल्तनतमें मारा गया। आपकी सल्तनतमें मेरे दाखिल होनेपर भी आपने इस तरफ़ ज़रा खयाल नहीं फ़र्माया; मानो इन सब



कामोंसे आपका कोई सरोकारही नहीं, आपन यह जाननेकी भी कोशिश न की, कि मैं कौन हूँ और मेरा इरादा क्या है।

“मेरे साहोब पहुँच जानेपर भी आपका कोई आदमी मुझसे मिलने मिलाने नहीं गया और मैंने अपना सलाम आपके पास भेजा, उसका भी कोई जवाब आपके यहाँसे नहीं मिला। आपके दरबार-दरवाज खूब अपनी नाँद और फ़्याजसे उठे, तो समझीता फ़ारसिनी, कोई भी कोशिश न कर वे हमारे रास्तेको रोक्ने चाये। इसमें भी उन्होंने सारी फ़ीजको एकही साथ आगे बढ़ाकर पेसी गुलती की, कि जल्दतय पड़नेपर पीछे एक भी सैनिक दल पैसा नहीं रह गया, जो आगे बढ़कर मोर्चा बहिस्तयार करता। साथ-साथ आपने अपने मोर्चेमें बन्द होकर बड़ी देपहाज़ी की। मान लीजिये, अगर दुश्मन ज़यदस्त रहता, तो भापको घेरकर दाने-दानेके बिना चर्हीपर मार डालता। अगर कमज़ोर होता, तो भी उसके सामने अपनेको बन्द रख, आपको ज़िद्धत ओर फ़ज़ीहत उठानी पड़ती। अगर आप यह कहें, कि कमज़ोरोंका मुक़ाबिला करनेमें मैं अपनी हतक-हज्जती समझता हूँ, तो क्यों नहीं आप किसी अच्छे अफ़सरकी मातहतमें अपनी फ़ौजको छोड़कर चर्हीसे हट गये, जो उसे काट गिराता या मार भगाता। अगर आप यह कहें, कि मेरे पास एक भी पैसा अफ़सर नहीं था, तो वैसे हालतमें, बाहर आकर लड़नेमेंही इज्ज़तयार कम धक्का पहुँचता था। आपकी पेसी हालतमें भी मैंने सुलहका पैग़ाम भेजा था; लेकिन आप अपने लड़कपन जैसे ख़ाम ख़यालातोंसे इतने फूल उठे

ये, कि मेरी बातोंकी ओर आपने ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। अल्लाहकी मददसे और इन सिपाहियोंकी ताक़तसे अब आप फ़रमायें, कि इसका मतोज़ा क्या हुआ ?

“आपके पूर्व-पुरुष लोग इन काफ़िरोंसे अज़िया बसूला करते थे ; लेकिन इन्हीं बीस वर्षोंके बीच आपने उल्टे उन्हें देनाही शुरू नहीं किया,—यल्कि सारी सल्तनतपर उनका क़ब्ज़ा ज़मने दिया। चूँकि आजतक तैमूरकी क़ीमसे शज़ी ख़ानदान या ईरानकी कोई भी बुराई नहीं हुई है, मैं यह सल्तनत आपके हाथोंसे नहीं ले हूँगा। सिर्फ़ आपकी आराम-तलबी और गुमानकी बज़हसे मैं यहाँतक आनेके लिये लाचार हुआ हूँ। लेकिन मुझे यहाँ तक आनेमें बहुत फ़र्चा पड़ा है और मेरे आवामी भी लम्बे सफ़रकी बज़हसे बहुत थके-गये हैं और कितनी ही चीज़ोंकी उन्हें ज़रूरत है, इसलिये मैं देहलीतक चढ़ूँगा। वहाँ पहुँचकर अपने सिपाहियोंके साथ कुछ आराम करूँगा और जो पेशक़्त निज़ामने मुझे देनेका वादा किया है, उसे लेकर मैं अपने घर वापस चला जाऊँगा। आप अपनी सल्तनत बलाशयेगा।”

महम्मदशाहने नादिरशाहकी इन बातोंका कुछ भी उत्तर नहीं दिया, बरज़ सब कुछ चुपचाप सुनकर बरदाश्त कर गये। लंब्या समय वे वहाँसे अपने ख़ीमेमें वापस आये। नादिरशाहकी इन उदारताभरी बातोंका समाचार पाकर राज-दरबारके कर्मचारी, सिपाही और सरदार सभी बड़े खुश हुए।



दूसवां परिच्छेद।

दिल्ली-प्रवेश और कतले-जाम ।

महम्मदशाह, नादिरशाहको पहले-पहल उसके खीमेमें १६वीं-
फरवरी सन् १७३६ को मिला था, जिसमें नादिरशाहने
महम्मदशाहको बड़ी फटकारें बतायी थीं । उसके एक दिन बाद
मार्चात् २०वीं फरवरीको निजामुलमुल्क, बज़ीर अजमुल्लाहख़ाँ
तथा ग़ाज़ी उद्दीनख़ाँ नादिरशाहसे मिलने गये ।

नादिरशाहने उन्हें बहुतसी चीज़ें इनाममें देकर उनका यथो-
चित सत्कार किया । फिर उसी दिन रातको नादिरशाहके यहाँसे
थापस आकर वे महम्मदशाहसे मिलने गये । वहाँपर क्या बातें
हूँ, कुछ पता नहीं । फिर पाँच सौ बैलदारोंको घुलवाकर
महम्मदशाहने अपने मरे हुए सिपाहियोंको इफ़्तानेका हुकम
दिया । इन सिपाहियोंमें बहुतसे तो पैसे थे, जिन्होंने समुचित
सेवा सुधूपा-तथा अन्न-जलके अभावसे अपने प्राण त्याग दिये थे ।
अन्नका भी भारी अकाल पड़ा । जहाँ नादिरशाहके पड़ावपर
रूपयेका १०।१२ सेर गेहूँ मिलता था, वहाँ महम्मदशाहके सिपाही
अपने पड़ावपर बड़ी कठिनाईसे एक सेर, ढेड़ सेरका गेहूँ पा
सकते थे । वह भी भाग्यसेही मिलता था । इन सब बातोंसे
महम्मदशाह बहुत घबरा उठा । कभी-कभी वह आत्महत्या

कर लेना चाहता था और कभी एक बार फिर भी नादिरशाहसे लड़कर अपने भाग्यकी आजमाइश कर लेना चाहता था। पर जबतक वह उसका कोई निर्णय भी नहीं कर सका था, कि उसके सरदार सरखुलन्दर्षा, महम्मदशाँ वगैरह नादिरशाहसे आ मिले।

वहाँ उनकी बड़ी आदर-अभ्यर्चना हुई। अन्तमें और भी आचार हो, २७ वीं फरवरीको महम्मदशाह नादिरशाहकी शरणमें चला गया। उसको युद्ध-सामग्रियोंको नादिरशाहने अपने अधिकारमें कर उन्हें काबुलके रास्तेसे कन्धार भेज दिया। उसी दिन उसने अपने सिपाहियोंको तीन महीनेकी तनख्वाह इनाममें दी और दूसरे दिन देहलीकी ओर बढ़नेका विचार किया। पहले तो उसने तहमासर्षा वकीलकी अधीनतामें चारसी छुड़सवारोंको शाहजहानाबादके क़िलेपर क़ब्ज़ा करनेके लिये भेज दिया और फिर पीछेसे पहली मार्चको वाप भी बर्हासि रवाना हुआ।

दोनों शाह अपने-अपने दल लेकर आगेकी ओर बढ़े। महम्मदशाहकी फ़ौज नादिरशाहकी फ़ौजके पीछे एक जोसके फ़ासलेपर थी। निजामुलमुल्क और सरखुलन्दर्षा वगैरह भी अपनी-अपनी फ़ौजके साथ, नादिरशाह द्वारा निर्धारित एक निश्चित क्रमसे आगे बढ़े। रास्तेमें पानीपत और सोनपतको जलाते और लूटते हुए वे ७वीं मार्चको सलीमाबादमें पहुँचे। वहाँसे महम्मदशाह कुछ सवार और सरदारोंको साथ लेकर नादिरशाहका समुचित स्वागत-सत्कार

करनेके लिये अपने क़िलेमें चला गया। तबतक रात हो चुकी थी। नादिरशाहने यह विचारकर, कि देहलीके लोग डुष्ट और निर्दय होते हैं, उस दिन रातके बक् शहरमें डेरा डालना उचित नहीं समझा। वह शहरको घेरकर शहरके बाहर ही पड़ाव डालकर रह गया। दूसरे दिन प्रातःकाल अपने चुमे हुए बीस हजार झुड़सवारोंको लेकर नादिरशाहने बड़ी सावधानीके साथ क़िलेके भीतर प्रवेश किया। बाहरसे तमाम शहर नादिरशाहकी क़ीमसे अच्छी तरफसे घिरा हुआ था।

क़िलेके भीतर पहुँचनेपर महम्मदशाहने उसका बहुतही आदर-सत्कार किया। उसे बर्धाई दी और उसके साथ नाज़्ता-बानी किया। सम्बन्धा समयतक इन दोनोंमें बातें होती रहीं। इस बीचमें नादिरशाहने महम्मदशाहके प्रति बड़ी शिष्टता और चिन्म्रताका व्यवहार किया। उसने अपने सिपाहियोंको किसी भी शहरके वास्तिनैको लूटने, पीटने, काटने और मारनेकी सज़ा नुमानियत कर दी और साथ-साथ उन्हें यह भी धमकी दे दी, कि जो कोई पैसा करेगा, उसे सफ़्त सज़ा मिलेगी। सिपाहियोंका बर्बाव तो बहुत अच्छा रहा; पर नादिरशाह और उसकी फ़ौजके भयसे शहरके रहनेवालेही इधर उधर लुक-छिपकर रहते और नादिरशाहके किसी भी आदमीसे बातें नहीं करते थे। ६ वीं मार्चको नादिरशाहने सयादतख़ाँको अपने पास बुलाया और पेशकस वसूल करके ५ देनेके कारण वह उसपर बहुतही गुस्सा हुआ, बड़ी कड़ी-कड़ी बातें सुनार्थी। सयादतख़ाँ इसके बाद दूसरेही दिन सुबहमें मर गया। कोई कहते, कि

नादिरशाहके भयसे उसने विष पान कर लिया और कोई कहते हैं, कि उसके दिलपर नादिरशाहकी इस वेदज्ञतीकी इतनी ज़बरदस्त चोट लगी, कि उसके प्राण निकल गये ! दूसरे दिन नादिरशाहने सरबुलन्दख़ाँको बुलाया और उसे पेशकस वसूल करनेका हुक्म दिया। तहमासख़ाँ वकील वग़ैरहके साथ वातें करनेमें सरबुलन्दख़ाँको यहींपर सौभ्य होगयी। इसी बीचमें बाज़ारमें दूकानोंके बन्द होने और अन्न गिराँ बेचनेकी बात तहमासख़ाँ वकीलके कानोंमें पड़ी। उसने अपने नौ आदमियोंको दूकानें खुलवाने और रुपयेका दस सैर गल्ला बेचनेका पैग़ाम कहनेके लिये बाज़ारमें भेजा, पर इसमें श्यापारियोंको घाटा होता था; इसलिये नादिरशाहके इस हुक्मपर वे विगड़ उठे। उन लोगोंने अपना एक दल संगठन किया और झुण्ड बाँधकर निकले। उन्होंने उन आदमियोंमेंसे कुछको, जो पैग़ाम लेकर आये थे और जो बाज़ारमें खानेकी चीज़ें खरीदने आये थे, मार डाला। साथ-साथ सन्ध्याको उन लोगोंने इस बातकी भी अफ़वाह बढ़े ज़ोरोंसे उड़ा दी, कि नादिरशाह क़ैदकर लिया गया। कुछ लोगोंने तो यहाँतक कह दिया, कि उसे विष खिला कर मार डाला गया। इसपर जनता और भी भड़क उठी। बहुतेरे लोग—जिसे जो कुछ सामनै मिला, वही लेकर—क़िलेकी ओर दूट पड़े। क़िलेके पासके पहरेदार, जो भीतर भाग गये, वे तो किसी प्रकार बच गये; पर जो बाहर थे, उनमेंसे बहुतेरे मारे गये। नादिरशाहके सिपाहियोंने क़िलेकी दीवारोंपर चढ़कर, वहाँसे गोली धादि चलाकर जनताको किसी प्रकार

हरा-धमकाकर अपनी और क़िल्लेकी रक्षा की। सरदार कमी-स्त्रीनजकि दामादने, जिसने शहरमें गये हुए कुछ वादमियोंको बचानेके लिये अपने घरके भीतर छिपा रखा था, वस घरमें आग लगाकर उन्हें जला डाला।

दूसरे दिन प्रातःकाल अर्थात् रविवार ११ वीं मार्चको सुबेरे बाह निकले, नादिरशाह क़िल्लेसे बाहर निकला। अपने घोड़ेपर सवार होकर, उपद्रवको शान्त करनेके लिये वह शहरकी ओर बढ़ा। रास्तेमें अपने जवानोंकी छात्रा देखकर उसका क्रोध बढ़क उठा। उसने अपने सिपाहियोंके एक मज़बूत दलको उपद्रव शान्त करनेके लिये भेजा। पर साथ-साथ उसने उनसे यह भी कह दिया, कि पहले वे जनतासे सिर्फ़ डाँट-डपटसे, मुना-खिच तरीक़ेपर काम लेंगे। जब वे इस तरीक़ेसे ज़ाबूमें न आयें, तब उन्हें बतलकर बैनिका हुफम भी उसने दे दिया। लेकिन उसने उन सिपाहियोंसे इस बातकी पूरी ताकीद कर दी, कि जो बैकुसूर और घेसरोकार हैं, उनसे वे कुछ भी न कहें।

नादिरशाहके हुकमके मुताबिक़ सिपाही-दल शहरमें गया। उसने जनताके साथ चिनचलाका बर्ताब किया। इसपर जनता और भी घेंठमें आगयी। उसने यह समझ लिया, कि नादिर-शाहकी ताज़त कमज़ोर पड़ गयी, इसीलिये वे सिपाही हमारी खुशामद कर रहे हैं। इस दुर्भावके बशीभूत होकर वे और भी जोशमें आकर उन सिपाहियोंपर ईंट-पत्थर बरसाने और गोलियाँ चलाने लगे।

नादिरशाह उस समय चाँदनी-बाँकके पास रसीबदीला

मस्जिदमें लड़ा होकर यह सब काण्ड देखा रहा था। मन्वी जनता उसपर भी गोलीयाँ और रोड़े फेंकने लगी। यहाँतक कि नादिरशाहपर भी गोली चलायी गयी। नादिरशाह तो बच गया, पर पासही लड़ा, उसका एक सिपाही इस गोलोकी चोट खाकर मर गया। इसपर नादिरशाह भाग-बबूला हो उठा और शान्तिके सब विचारोंको त्यागकर उसने अपने सिपाहियोंको 'फूटलेआम' करनेका हुकम दे दिया। सिपाही तो पहलेसेही भाग-बबूला हो रहे थे, सिर्फ अपने मालिकके हुकमसे इस वक्तक रुके हुए थे। नादिरशाहका हुकम पातेही वे अच्छी तरहसे अपना हाथ साफ करने लगे। आबाल-बुढ़-बनिता सब-के-सब उनकी तलवारों और चर्चियोंके झिकार बनने लगे। सिपाहियोंके सामनेसे एक भी आदमी बचकर जाने नहीं पाता। आदमियोंको कौन कहे, पशुतकको भी नहीं छोड़ा। वे रास्तेके सभी बरोंको लूटने और उनमें आग लगाने लगे। यह काम दो बजे दिनतक अर्थात् लगातार छः घण्टे जारी रहा। इतनीही देरमें शरा-फ़ासे लेकर ईद-गाहतक और मक़बराले लेकर मिठाई पुलतक जाने पाँच-छः कोसका रज़या ताज़ा ज़मिस्तान बन गया। न एक घर देख पड़ता और न एक ज़िन्दा आदमीही नज़र आता। इस प्रकार पाँच-छः घण्टेमें हेड़ लाख आदमी इस संसारसे सदाके लिये विदा हो गये।

दिनके दो बजे नादिरशाह खाँसी-बीकसे क़िलेमें वापस आया। शहरको पेसी दुर्गति और दुर्दशा देखकर महम्मद-शाह और निज़ामुद्दुल्क उसके पात आवे। उन लोगोंने



देहलीका कलेखान ।

“नादिरशाहने शान्तिके सब विचारोंको त्यागकर अपने सिपाहियोंको ‘कलेखान’ करनेका हुक्म दे दिया ।”

[पृष्ठ—१०५]

नादिरशाहसे, नगर-निवासियोंकी ओरसे कृतलेयाम बन्द करनेकी प्रार्थना की। नादिरशाहने इसे स्वीकार किया। उसने अपने सिपाहियोंको कृतल करना बन्द कर देनेका हुक्म दिया।

इसके बाद शहर भरमें उसने इस बातकी सुनायी क्या ही, कि आगे फिर कोई आदमी पैसी इरकत न करे। इस सुनायीके बाद शाहका कृतलेयाम तो बन्द होगया; पर जो थोड़ी बहुत दची-बचायी जनता थी, उसका काट नहीं गया। मुर्दोंकी लाशके नगरे शहरकी सड़कों और गलियोंमें बलना दुश्वार होगया। दुर्भाग्यके कारण साँस लेनेका भी किसीको साहस नहीं पड़ता। कुछ मुसलमानोंकी लाशें तो ज़मीनमें गाड़ दी गयीं और कुछ नदीमें फेंक दी गयीं। हिन्दुओंकी लाशें, एक साथ हज़ार-हज़ारको ताबड़ाममें, एक-एक जगह रफ़ाकर जला डाली गयीं। कितनीही स्त्रियाँ—विशेषतः हिन्दू स्त्रियाँ नादिरशाहकी फ़ौजके हाथोंसे अपनी बेदरुमतीकी आर्षाकाकर, वससे बचनेके लिये, अपने आप अलकर मर गयीं। बहुतोंने बिप खा लिया। बहुतैरे मर्दे और औरतोंने अपने आप फाँसी लगाकर जानें दे दीं।

इन मुर्दोंको दफ़नानेके बाद जब नगर-निवासियोंको फुर्सत मिली, तब नादिरशाहके सिपाही उन्हें हज़ारों तरहसे सताने लगे। वे उनके गहने छीनते, माल और असबाब लूटते और घरमें घुसकर उनके सारे ज़ेवर-जवाहरात और खजने निकाल लेते। इन सिपाहियोंका आतङ्ग जनताके हृदयमें अब इतने जोरोसे बैठ गया था, कि एक सिपाही हज़ारों आदमियोंको एक साथ इकट्ठाकर मारता-पीटता, गालियाँ देता और बेदरुमल करता;

हज़ारों तरहसे, रुपये और धनके लिये, दूसरे-दूसरे मालदारोंका पता बतानेके लिये, उन्हें कष्ट देता और सताता ; पर कोई खूँ तक नहीं कर सकता था ।

इन सवारों और सिपाहियोंक लूट-खसोटका काम जब तमाम हो गया, तब नादिरशाहने धन इकट्ठा करनेका नया तरीक़ा निकाला । 'पेशकस' अर्थात् करोड़की भेंट, वह अब भी भूला न था । महम्मदशाह तथा उनके सरदारोंकी ओरसे इसका इन्तज़ाम होनेमें ज़रा भी देरी अथवा ग़फलत होनेपर वह उन्हें लाखों बाते सुनाता लाख-लाख भिड़कियाँ देता । अन्तमें नादिरशाहने सभी सरदार और उमरावोंसे रुपये वसूल करना शुरू किया । शहरमें उसने इस बातकी एक सूचना भिजवा दी, कि जिनके पास जो धन, रत्न अथवा अन्य बहुमूल्य पदार्थ हैं, वे सब अरे पास भेज दें । जिनके पास नहीं हैं, वे आकर इस बातका यहाँ एकतरनामा लिख दें और अपने दस्तख़त कर दें । लेकिन कहीं पीछेसे पता लगा, कि उनके पास धन-दीलत है, तो उनका सिर काट लिया जायेगा ।

नादिरशाहने रुपये वसूल करनेमें ऐसी ज़ियादती और ज़ोर-ज़बर्दस्ती की, कि किसीकी भी इज्ज़त नहीं बचने पायी । सरदारसे लेकर दूकानदार तक सब-के-सब पीस डाले गये । कितने उमराव और सरदार तो अपनी इज्ज़तके डरसे तमाम दिन महम्मदशाहके साथ उसके क़िलेमें छिपे रहते, रातको अपने घर आकर खाना खाकर सोजाते, फिर कुछ अन्धेरा रहतेही महम्मदशाहके पास क़िलेमें दाख़िल होते । कितनोंहीकी बह

धीर देखियाँ इस रुपयेको वसूलीमें वेदनात हुईं । कितनेही धनी मानी धीर जमीरोंमें कोड़े और बेत छाये । अपने अत्याचार और अनाचारके इन मिला-मिला उपायोसे नादिरशाहने लक्ष्मण एक अरब धन हिन्दूखानसे वसूल किया । पर एक अरब तो सिर्फ लहनेको ही, यथार्थमें यह इससे कहीं अधिकको रजत छे गण होया । कारण, जिस घोड़ेका मूल्य ५०० रुपया था, नादिरशाहके सन्दारोंने उसका मूल्य केवल १०० रुपया ही उहराया । जो एक साला दस हजार रुपयेको थी, नादिरशाहकी कचहरीमें उसका नाम सिर्फ एक हजार रुपया लगाया गया । म्हम्मदशाहने खजानेसे जो जवाहरात नादिरको मिले थे, उनके अतिरिक्त उसे २५ करोड़ रुपये नकद भी मिले । निजा-मुल्लुकाने डेढ़ करोड़ रुपये दिये । अमरुदीम खाँसे भी इतनीही रकम वसूल की गयी । सयादतखाँसे १ करोड़ वसूल किया गया । सरयलन्दखाँको, गरीब होनेकी वजहसे, माफ़ी दे दी गयी । इस १ अरब रुपयेमेंसे ६० करोड़ नादिरने लिया और बाक़ी उसने अपने अमीर, उमरावों तथा सन्दारों और सैनिकोंमें बाँट दिया । जो एक नादिरशाहके साथ गयी, उसका ध्यौरा इस प्रकार है—

वस्तुओंका ध्यौरा—

मूल्य—

महम्मदशाह तथा उमरावों द्वारा प्राप्त रत्न

धीर जवाहरातकी कीमत . . . २५ करोड़ रुपये ।

मोर-गद्दी तथा ६ अन्यान्य बहुमूल्य सिंहा-

सन धीर मोहरोंकी कीमत . . . ६ . . .

सोने-चाँदीका सिंहा . . . २५ . . .

सोने-चाँदीकी चादरें	५ करोड़ रुपये ।
हीरे, मोती और रत्नादि-अद्वित अम्यान्व वस्तुर्ष	...	२ "
ग़लीचा, मसनद, चाँदनी आदि	...	३ "
घुद्ध-सामग्री	...	१ "

इस प्रकार प्रचुर धन संग्रह करनेके पश्चात् नादिरशाहने अपने नौकरोंको तीन महीनेकी तनशुवाह इनाममें दे डाली और ईरानमें इस बातका फरमान यहकि शासकके पास अपने दूत द्वारा भेज दिया, कि ईरानी प्रजाजनोंका तीन वर्षका सारा राजस्व माफ़कर दिया जाये। इसके बाद उसने उन लोगोंको सज़ा देनेकी शुरुआत की, जो इस बलबेके नेता थे। सैयद नेयाज़ख़ाँको—जिसने कई सवारोंको अपने घरमें बन्दकर उन्हें जलाकर मार डाला था,—फ़ाँसीकी सज़ा दी गयी। राज-विद्रोह और बलबेके जो-जो प्रधान नेता थे, उनमें पहलेको फ़ाँसी दे दी गयी और दूसरेका पेट फाड़ डाला गया। पश्चात् २७ वीं मार्चको नादिरशाहके पुत्र, नसीर उल्लाह मिरजाकी शादी औरङ्गजेबके पोता ऐशदान बक्सकी लड़कीसे हुई। विवाहोत्सवमें शूब धूम-धाम मनायी गयी। खातिशवाज़ी और रोशनी भी हुई। महम्मदशाहने लड़केको ५० हजार रुपये नक़द दिये और ५० हजार पीछेसे भेज देनेका वादा किया।

इस प्रकार सब कामोंको तय करनेके पश्चात् नादिरशाहने १० वीं जूनको एक दरबार किया। उस दरबारमें उसने निज़ा-मुलमुल्क, सरबुलन्द्ख़ाँ और कमरुद्दीन ख़ाँ, वगैरहको भिन्न-भिन्न

बिहलें दीं । इसके बादमें प्रातःकाल आठ बजे महम्मदशाह अमीर, उमराय और मुताहरवोंके साथ नादिरशाहके पास दीवाने-शाममें पहुँचे । नादिरशाहने उनका बड़ी घूम-धामसे स्वागत किया । उनके साथ ताज़ा पानी किया । फिर अपने हाथोंसे ताज़ महम्मदशाहने माथेपर रखकर, एक सिरपेच, एक बाजूबन्द, दो तलवार और एक कटार महम्मदशाहकी भेंट की । फिर उसने महम्मदशाहको यों उपदेश दिया :—

“पहले तो आप अपने सब उमरावोंसे उनकी जागीर वापस लेलें । उनसे दजें और कामके मुताबिक़ शाही खज़ानेसे उन्हें तन-स्वाह दिया करें । आप किसी भी उमराव या सरदारको अपनी फ़ौज रखनेकी इजाज़त न दें । आप अपने पास ६० हजार घुड़-सवार हमेशा मौजूद रखें और हरएकको ५० रुपये माहवारी दिया करें । हर दस घुड़सवारपर एक दहवसी, हर दस दहवसीपर एक सुदीफल और हर दस सुदीफलपर एक हज़ारी (अकसर) मुण्दर करें । अपने हरएक अफ़सरकी लिखावत, नाम, ज्ञानदान और फ़ौजसे आप पूरी वाक़फ़ियत रखें । किसीको भी सुख और बेकार न बँडने दें । अब कोई मौफ़्त जा पड़े, तब एक अफ़सरकी मातहतमें, जिसकी ईमानदारी, बाल-बलन, नेक-बीयती और हिम्मतपर आपकी यक़ीन है, आप काफ़ी फ़ौज भेजें लेकिन ज्योंही वहाँ काम ख़तम हो जाये, त्योंही आप उसे अपने पास वापस बुला लें । किसी अफ़सरको किसी हालतमें और कहीं-पर आप ज़िपाय़: दिनोंदक सैनिकोंके साथ ठहरने न दें । इसका नतीजा बहुत बुरा होता है । आप विज़ामुलमुल्कसे हमेशा चौक-

न्ना रहें, उसपर कभी एतमाद न करें। वह बड़ाही चाल-बाज़ और झुदगर्ज आदमी है। उसका हींसला इतना बड़ा-चढ़ा है, जितना कि किसी रेआयेका कभी न होना चाहिये।”

‘महम्मदशाह उसकी इस नसीहतसे बड़ाही खुश हुआ। उसने नादिरशाहसे इस बातका अर्ज़ किया, कि ‘आपही अपनी मर्जीके मुआफ़िक जिसे लायक समझें, सल्तनतके ख़ास-ख़ास ओहदोंपर भर्ती कर दें।’ इसके उत्तरमें नादिरशाहने कहा,—

“यह काम आपके हक़में अच्छा नहीं होगा। इससे मेरी ग़ैरहाज़िरीमें आपका दबदबा जाता रहेगा। इसलिये जब मैं वहाँसे चला जाऊँ, तो आप जिसे जिस कामके लिये सबसे अच्छा समझें, उसे उस कामपर बहाल कर देंगे। इसपर अगर कोई दूरा माने या आपके बरख़िलाफ़ उठ खड़ा हो, तो आप मेरे पास ख़बर देंगे। मैं अपना आदमी भेजकर उसे ठोक करा दूँगा। अगर इससे भी काम न चले, तो मैं अपनी फ़ौज भी भेज दे सकता हूँ। ज़रूरत पड़नेपर मैं झुद भी कन्धारसे चालीस दिनके भीतर वापस आ सकता हूँ। मेरे कहनेका मतलब यह है, कि किसी भी हालतमें आप मुझे दूर नही समझें।”

इतना कहने और शुक्रिया अदा करनेके बाद नादिरशाहने महम्मदशाहसे विदा माँगी। महम्मदशाह अपने सव्यास-महलमें चला गया। सब उमराव भी अपने-अपने घर गये। दूसरे दिन अर्थात् दूसरी मर्हको नादिरशाहने निजामुलमुल्क, सरखुन्द ख़ाँ और दूसरे उमरावोंको अपने पास बुलाया, उन्हें अच्छी तरहसे समझाया-बुझाया और महम्मदशाहसे मिलकर उसके हुक़मके

मुनादिरा का रोजी खतरा ही। चलने-चलाते उसने उन्हें इस बातकी भी धमकी देयी, कि उसके देहली छोड़नेके बाद शहर के मस्जिदोंके कर्मिदारों वनायत फौलाया करेंगे, तो उनकी फौज राजा की जायेगी। कुछ उमंगवोंसे उसने यह भी कहा था, कि मस्जिदोंके कर्मिदार और निजामुलमुल्कको पन्नाह देकर इन्हें नहीं चलायी जा। इसकी वजह यह थी, कि महम्मदशाह ही मस्जिदोंके कर्मिदारों इत्यादि का रोजीके लिये नहीं और निजामुलमुल्क एक चाकेदार आदमी है। पर नादिरशाह का रोजी क्या सज्जा है? ऐसा करनेके लिये तो उसने पहलेसे ही जमी बुझा कर चुका था।

४वीं मई १७३६ ई०को नादिरशाहका पैनागना खलीमा-दानमें पहुँचा। उसने इस बातकी मुनादी शहर ओर अपनी फौजमें करा ही, कि फौज-पड़ाव उखड़ जानेपर एक भी सिपाही या बुढ़नदार पं-छे न रह जाये और न शहरका कोई वाशि-न्दाही उसे अपने घरमें टिया रखे। कोई भी सिपाही या सरदार अपने साथ एक भी मर्द, औरत या गुलाम न ले जाये। ऐसा वह सभी कर सकता है, जब कि राजाके खिला-पड़ी, सही और नबाही हो जाये और साथ-साथ वह औरत या मर्द उसके साथ आनेके लिये राजी हो। इस हुक्मके खिलाफ काम करनेवालेकी जायदाद जप्त कर ली जायेगी और उसकी जान मार डाली जायेगी। नादिरशाहके इस फरमानने उसके बहुतरे सिपाहियोंके मसखेपर पानी फेर दिया। सभी औरतें और गुला-मोंको उन्हें छोड़ देना पड़ा। जिस औरतके साथ जायज़ तरीके-

पर विवाह भी हो गया था, वह भी अपने घर, अपनी माँ-बापको छोड़ना पसन्द नहींकर फिर अपने घर वापस चली आयी। हाँ, कुछ स्यास-झास अफसर अपनी चालाकी और पाखण्डसे कुछ औरतोंके साथ शादीकर, उन्हें अपने साथ कुछ दूरतक ला सके थे ; पर नादिरशाहको जब इस बातकी खबर लम गयी, तो उन अफसरोंको उन्हें भी उनके घर वापस पहुँचा देना पड़ा।

ईंठी मईको नादिरशाह सलीमाबादसे खानः हुआ। खानः होते वक़्त उसके पास जो पशु और मनुष्य थे, उनकी संख्या इस प्रकार है—

हाथी	१०००
घोड़ा	७००
ऊँट	१००००
खोजा	१००
क़त्लिब	१३०
कारीगर	२००
बेलदार	३००
संगतराश	१००
बड़ही	२००

इसमें १८००० पशु और १०३० मनुष्य थे।

सलीमाबादसे नादिरशाहने अपनी फौजको समेटकर लाहोरकी ओर खानः होनेका विचार किया। वहाँपर उसे मालूम हुआ, कि फौजको छोड़कर ४०० सिपाही और नौकर कहीं बहार चले गये हैं। दिल्लीके कोतवाल सैयद फौलादशाहको यह हुकम देकर

कि वे उन्हें खोजकर नारदके साथ उसके पास भेज दें, नादिरशाह आगेकी ओर बढ़ा। फौलादशा, बहुत खोज-खूँडके बाद ५० नादमियोंका पता लगा सका। उन्हें पकड़कर उसने नादिरशाहके पास भेज दिया। नादिरशाहने फौज उनके सिर काट लेनेका हुक्म दे दिया। भला किसकी मजाल जो नादिरका हुक्म सामेल न करे! पीछेसे कुछ और लोगोंका पता फौलादशानि लगाया। पर जब नादिरशाहकी इस कड़ी सज़ाकी खबर उसे मिली, तब वह उन गरीबोंको एक-ब-एक कालके मुँहमें न डकेलकर उन्हें महम्मदशाहके पास लाया। उसने उनसे सारा क्लिष्टा कह सुनाया। इसपर महम्मदशाहको बड़ी दया आयी और उसने कहा,—“जगर ये गरीब नादिरशाहके पास भेज दिये जाते हैं, तो ज़रूरही वह इन सबको भी मार डालेगा। इसलिये इन देशारों से गुनाहोंका छून करा, उनकी बददोवा अपने ऊपर फों लें ? जाने दो; जहाँ इनकी तबीयत चाहे, चले जायें।”

नादिरशाह लगातार घावाकर धानेश्वरके पास पहुँचा। वहाँके कुछ लोगोंने, उनके सिपाहियोंपर, जब वे अपने जानवरोंकेलिये चारा-घास माँग रहे थे, हमला किया और उन्हें मारा-पीटा। रातके बड़ पड़ावमें घुसकर फौजके कुछ माल-असबाब भी वे लूट ले गये। इसपर नादिरशाहको बहुत क्रोध हो आया। उसने धानेश्वर और उसके आस-पासके गाँवोंको लूट लेनेका हुक्म दे दिया। बाल-की-बालमें कितनेही गाँव बर्बाद हो गये और कितनेही लोगोंकी जानें भी चली गयीं। कर-बालके एक ज़मींदार द्वारा ५० हजार रुपये पानेपर और करजाल-

का नाम फतेहाबाद* रखनेका वादा करनेपर नादिरशाहने लूट-मार करना बन्द कर दिया । करनालसे बढ़कर नादिरशाह लाहोर पहुँचा । वहाँका सुबेदार ज़करियाख़ाँ उसकी पहुँचकी ख़बर पातेही भवरा डडा । उसने समस्त नगर-निवासियोंकी एक विराट् सभा की । सबकी रायसे यह बात तय पायी, कि ज़करियाख़ाँ और शहरके कुछ प्रतिष्ठित लोग आगे बढ़कर नादिरशाहके सिपह-सालारके पास इस आशयका एक पत्र पेश करें,—

“यदि आप लाहोरमें ज़ल्लेयाम करनेके इरादेसे आगे बढ़ रहे हैं, तब तो हम लोगोंका सर आपकी तलवारके सामने है । अगर उसे लूटनेकी इबाहिश है, तब तो शहर एक तरहसे बिल्कुल वीरान हो रहा है । अगर रुपयेकी इबाहिश है, तो हम सब लोग मिलकर एक करोड़ रुपयेसे अधिक नहीं दे सकते । मतलब यह, कि हुजूरका जो हुकम होगा, ताबेदार हमेशा उसे बजालानेके लिये तैयार है । साथही यह भी समझ लें, कि यह एक छोटा शहर है, देहलीके सामने इसकी कुछ गिनतीही नहीं है । यहाँ लूट-मार करनेसे आपकी फ़ीजकी इबाहिश कभी पूरी नहीं हो सकती ।”

पत्र सिपहसालारके पास भेजा गया । सिपहसालारने उस पत्रको नादिरशाहके सामने पेश किया । नादिरशाहने एक करोड़ रुपयेकी भेंट कुबूल कर ली और उसे

* 'फतेहाबाद'—अर्थात् विजयी लोगोंकी आवास-भूमि । यह नाम इस बातका स्मारक है, कि नादिरशाहने महम्मदशाहपर यहीं विजय पायी थी ।

लेकर लाहौरको बचाते हुए, वह उसकी एक घगलसे सुज़रकर आगेकी ओर बढ़ गया। सिन्ध नदीको पारकर नादिरशाह हिन्दुस्तानसे विदा हुआ। हिन्दुस्तानके भिन्न-भिन्न शहरोंमें नादिरशाहके हुकमसे क़त्ल किये गये मर्द और धीरसोंकी तायदाद नीचे लिखे मुताबिक है:—

इस्लामकी जगहें	जन-संख्या (लगभग)
लाहौरसे करनालतक (रास्तेके गाँवोंमें)	८०००
करनालके बुद्धमें	१००००
लड़ाईके पश्चात् सूखु (आहत मनुष्योंकी)	१४०००
करनालसे दिल्लीतक पानीपत और सोनपत आदि रास्तेके भिन्न-भिन्न गाँवोंमें	८०००
क़त्लेआम (दिल्लीमें)	११००००
“ (इधर-उधरके गाँवोंमें)	२५०००
आत्म-हत्या द्वारा (नादिरशाह और उसकी फौजसे अपनी हज़ार बचानेके लिये अथवा अन्याय कारणोंसे भी डूबकर, उल्लकर, विष-पानकर अथवा अपनेको फौजीपर छटका कर आदि- आदि उपायोंसे)	६०००
छँटते समय थानेश्वर और उसके आस-पासके गाँवोंमें नादिरकी फौजके हाथोंसे मारे गये लोगोंकी तायदाद	१२०००
कुल जोड़ *	<u>२०००००</u>

*इस प्रकार केवल नादिरशाह और उसकी फौजके हाथोंसे लगभग दो लाख

नादिरशाहकी अनेकानेक लुपाओंके लिये धन्यवाद देता हुआ तथा अटक नदीके पश्चिमी भागका सारा अधिकार नादिरशाहको सम्प्रदान करता हुआ, महम्मदशाहने जो दान-पत्र नादिरशाहके पास भेजा था, पाठकोंके विनोदार्थ हम उसका आशय यहाँ दे देना आवश्यक समझते हैं। नादिरशाहको अनेकानेक लुपाधियोंसे विभूषित करता हुआ, उसने लिखा था:—

“थोड़े दिन पहलेकी बात है, कि आपके पाससे कितने ही राजदूत हिन्दुस्थानमें आये और वे कितने ही प्रकारके संवाद ले आये। उनकी इच्छाओंको पूर्ण करनेका मेरा विचार भी हुआ। इसके बाद महम्मद खाँ तुरानी मुझे कन्धारसे उन यातोंकी याद दिलानेके लिये पहुँचे। पर मेरे वज़ीर और सरदारोंने इस काममें बहुत विलम्ब कर दिया। हज़ूरकी चिढ़ीका जवाब जानेंमें भी बहुत देरी हो गयी। हमारे और आपके बीचमें इतनी गलतफ़हमी बढ़ गयी, कि आपकी फ़ौज हिन्दुस्थानकी सरहदपर पहुँच गयी। दोनोंके बीच आखिरकार एक भारी लड़ाई हुई। ईश्वरकी इच्छाके अनुसार जीत आपकी ही हुई।—आप जमशेदकी तरह बड़े हैं, सारे तुकोंके सरदार हैं।

“आपकी सत् संगतिका सुख अनुभव करनेका अवसर मुझे बड़े भाग्यसे प्राप्त हुआ। इसके बाद शाहजहाँबादमें पहुँचकर मैंने शाही झण्डानेसे बहुमूल्य रत्न और जवाहिरात आपकी भेंट

मनुष्य कुछ दिनोंके अन्दर भारतवर्षके एक कोनेमें मारे गये। इससे कहीं जबरन दर्जनों चढ़ाइयाँ भारतवर्ष पर हुई हैं। पाठक केवल नादिरशाहके आक्रमण द्वारा मारे गये मनुष्योंका अन्दाजा इससे कर सकते हैं

की। आपने भी छपाकर उन्हें सार्धे स्वीकार किया। पश्चात् अपनी स्वाभाविक दया और उदारताके कारण, अपने वंशकी भी गौरव-वृद्धि करते हुए आपने मेरी गद्दी और मेरा ताज फिर मुझे ही वापस कर दिया। इन सारी छपाओंके लिये, जो एक पिता भी अपने पुत्रके प्रति नहीं दिखला सकता, मैं अटक नदीके पश्चिमका अपना सारा प्रदेश, आपका भेंट करता हूँ। अर्थात् पेशावर और वसका सारा प्रदेश काबुल, राजनी, अफ़्ग़ानिस्तान इज़्ज़ारीजान और उसकी शारिया तथा बुखारा, सखर और खुदायादके क़िल्ले, वलूकिस्तान वगैरह सब मैं आपकी भेंट करता हूँ। इन प्रदेशोंकी ज़मीनसे लेकर जानवर और मनुष्यतक सबी जीवोंपर आज्ञा आपका क़ब्ज़ा हुआ। आज्ञासे इन जगहोंको अपने राज्यमें मिलाकर अपने प्रबन्धकर्त्ताओंको नियुक्तकर इन प्रदेशोंका शासन और संचालन आप अपने हाथोंमें ले लें। मेरे नीकरों और प्रबन्धकोंका उन सब स्थानोंसे अब कोई सरोकार नहीं और न अब वे वहाँके प्रजा-जनोंसे किसी प्रकारका कर वसूल करनेकेही हक़दार हैं। अटक नदीके इस पारकीही सारी ज़मीन हिन्दुस्थानी सलतनतमें रही।

“[शाहजहाँबाद, तारीख़ चौथी मुहर्रम, ११५२ अर्थात् दूसरी अगस्त सन् १७३६ ईस्वी।]”

यह दान-पत्र पढ़कर नादिर बड़ा प्रसन्न हुआ। महम्मद-शाहके आज्ञाको उसने तत्क्षणही स्वीकार कर लिया। प्रदत्त-प्रदेशोंकी स्थिति कम-बढ़ रहनेके कारण नादिरशाहको उनके शासन-कार्यमें ज़रा भी कटिनाई उपस्थित नहीं होती थी और उन प्रदेशोंका कुछ हिस्सा तो नादिरशाहने पहलेसेही सुराजान

शान्तमें मिला रखा था । नादिरशाह अब खुशी-खुशी दिल्लीसे विदा हुआ । इसके पश्चात् लाहोरसे आगे बढ़नेतककी घटनाका विवरण पहले ही लिखा जा चुका है ।

अब नादिर सिन्धु नदीके तटपर पहुँचा । आगे बढ़नेके लिये जब उसकी सेना, नदीके उस पुलसे होकर, जिसे नादिरशाहने जाते समय बना रखा था, पार कर रही थी, उसी समय पुल टूट गया । नादिरशाहको आधी सेना इस पार छूट गयी और आधी उस पार चली गयी । लाचार होकर नादिरशाहको अपनी बाक़ी सेनाको नाबपर पार कराना पड़ा । अथवा सेनाके साथ नाबपर पार उतारना एक दिनका काम नहीं था । इसी काममें गर्मीका आधा मौसम बीत गया । तेज़ लू चलनेके कारण नादिरशाहकी सेना एक प्रकारसे मुलस गयी ।

इसी समय नादिरशाहने बोज़ारा और खेरज्जमके शासकोंपर अपना पुराना सुझार उतारनेका विचार किया । जिस समय नादिरशाहने कन्धारपर चढ़ाई की थी, उसी समय उसका लड़का रज़ाकुलीखाने भी इन दोनों शासकोंपर चढ़ाई की थी । यद्यपि रज़ाकुलीखाने उन्हें हरा दिया था, तथापि उन्हें पूर्णरूपसे परास्त करनेका काम उसने अपने पिताके लिये छोड़ रखा था । इसी विचारसे, नादिरशाहने, अपने कितनेही कारीगरोंको वेड़ा बनानेकी आज्ञा दी । इससे नादिरशाहका अभिप्राय यह था, कि जिस समय वह तुर्कों अथवा तातारियोंपर आक्रमण करेगा, उस समय उसे रसद, हथियार और सिपाही आदिको पार कर नेमें इन वेदोंसे बड़ी मदद मिलेगी ।

सिन्ध नदीको पारकर जब नादिरशाह वापस जा रहा था, तब कई जमाहके शासकोंने उसठे रास्तेमें बाधा डाली । यद्यपि नादिरशाहने सबका मान भर्न कर दिया, तथापि सिन्धके एक स्थानत्र प्रदेशके शासककी एक हरकतसे उसे वहाँपर कुछ और दिनोंतक ठहर जाना पड़ा । बात यों है—

यहाँका शासक नादिरशाहके प्रति पहले बड़ा भक्ति-भाव रखता था । उससे सदा पत्र-व्यवहार करता था । पर वह दिल्ली बड़ाही कमजोर था । अब उसने देखा, कि नादिरशाह भारतके सभी शासकोंको परास्तकर सबसे रुपये बसूल कर रहा है, तब वह बहुत भयभीत होगया । उसके पास बहुत धन था, इसलिये वह अपनी राजधानी छोड़कर अमरावती भाग गया और वहाँकी एक पहाड़ी ओहमें उसने अपनी सारी सम्पत्ति छिपाकर रख दी और फिर लौट आया ।

जब नादिरशाहने यह बात सुनी, तब उसने अपने सिपाहियोंको उसका पीछा करनेका हुक्म दिया । सिपाहियोंने उसपर हमला किया । वह सपरिवार पकड़कर नादिरशाहके पास लाया गया । नादिरशाहने डर दिखलानेके विचारसे उसे कई दिनोंतक कैद कर रखा । यद्यपि नादिरशाहके मनमें उसका धन लेनेका लोभ नहीं था, तथापि वह उसकी इस बालको बेवहुफ़ीकी चाल ठहराना चाहता था । अन्तमें नादिरशाहके अयके कारण लाचार होकर अपने सारे गुन रहस्यको उसे खोलनाही पड़ा । तब नादिरशाहने भी उसे छोड़ दिया । उसका राजपाट उसेही सौंप दिया और उसे सिन्ध-प्रदेशका शासक मुजर्रर

किया। इसके बाद वहाँके कुछ हिस्सोंको अपने अधिकारमें कर डसने अपने अफसरोंको वांट दिया।

वहाँसे नादिरशाह नादिराबाद पहुँचा। यह वही स्थान है, जिसे कम्बारपर क़ब्ज़ा करते समय नादिरशाहने अपने स्मारक स्वरूप इसे बनाया था। वहाँपर पाँच दिनोंतक ठहर कर वह २६ वीं मईको हेरातमें पहुँचा। हेरातमें उसका भतीजा अली कुली और छोटे शाहजादे इमामकुली और शाहरज़ आकर उससे मिले। नादिरशाहने इन सबकी ज़ातिर-बात बड़ेही प्रेमसे की। इन बच्चोंने नादिशाहको इस बातकी भी सूचना दी, कि बड़े शाहजादे रज़ाकुलीख़ाँ किसो खास ज़रूरी काममें फसे रहनेके कारण अभी आकर शाहसे मिल नहीं सके हैं। वे बाद-शोज़में शाहका दर्शन करेंगे। यहाँपर कुछ दिनोंतक ठहरकर नादिरशाहने भारतपर विजय करनेके कारण, विजयोत्सव मना-ना आरम्भ किया। भारतमें प्राप्त सम्पत्तिकी इसने अपने यहाँ एक प्रदर्शनी भी खोल दी। उस प्रदर्शनीमें जगतप्रसिद्ध मयूर-सिंहासन भी रखा हुआ था। इस सिंहासनको देखकर नादिर-शाह बड़ाही प्रसन्न रहता था। वहाँपर अपने कारीगरोंको ठीक उसी ढंगका, वतनीही ऊँचाई और उसी काटका एक दूसरा-मयूर-सिंहासन तैयार करनेका हुक्म दिया। मतलब यह, कि हेरा-तमें बड़ी धूम-धामके साथ विजयोत्सव मनाया। शाहजादोंको प्रचुर धन-रत्न उपहारमें दिया। एक सप्ताहके लगभग यहाँ रुककर नादिरशाह अपने बड़े पुत्र रज़ाकुलीख़ाँसे मिलनेके लिये बाग़-दीज़में पहुँचा। वहाँपर रज़ाकुलीख़ाँ पहलेसेही एक बड़ी भारी

सेनाके साथ नादिरशाहका स्वागत और भगवानी करनेके लिये खड़ा था। ज्योंही नादिरशाह रजाकुलीके पास पहुँचा, ज्योंही उसने दौड़कर नादिरशाहका ताज-पंख चूम लिया। उसने शाह और सलतनतके प्रति अपनी अधीनता सहर्ष स्वीकार की। नादिरशाहने भी उसका प्रेमपूर्वक आलिङ्गन किया। ईरानका राज-काज सम्हालने और वीरता-पूर्वक उसकी रक्षा करनेके लिये नादिरशाहने उसकी मुक्त-कण्ठसे प्रशंसा की। बाग़दोज़में कुछ दिनोंतक ठहरकर नादिरशाहने अपने पुत्रके साथ मुस्त-पूर्वक अपना समय व्यतीत किया। उसने रजा-कुलीख़ाँकी फ़ौजका बर्हीपर निरोक्षण भी किया। सिपाहियों को समुचित पुरस्कार दिया और अपने पुत्र रजाकुलीख़ाँको भी उपहार-स्वरूप राज-मुकुट और वस्त्र दिया। पश्चात् अपनी सेनाको लेकर तातारियोंपर हमला करनेके लिये वह घाल्ख़ की ओर बढ़ा। रजाकुली और अख़ोकुली भी अपने-अपने सैनिकोंके साथ अपने पिताके पीछे-पीछे रवाना हुए।



म्यारहवाँ परिच्छेद।

नादिरशाहका तातारियोंसे युद्ध ।

म्यारहवाँ परिच्छेदको बोझारेके अवुलफ़ैजका हाल पिछले परिच्छेदमें
बुके हैं । जिस समय नादिरशाह देहलीमें था, उस
बोझारेके शासक अवुलफ़ैज और खेरजमको शाहजादा
दोनोंने मिलकर दूसरी बार ईरानी सल्तनतकी सरहदपर
क्रिया । जब लूट-खसोट मचायी, ईरानी प्रजा और शाहजादा
रजाकुलीखानके दिलमें भी बुरात पैदा कर दी । नादिरशाहको
इस बातकी खबर लगी, तब वह बहुत गुस्सा हुआ और
उसने ठान लिया, कि हिन्दुस्थानसे वापस जानेके बाद इन्हें इनकी
करतूतका मज़ा चखाऊँगा । रजाकुलीखान एक भारी फ़ौजके साथ
इनके मुक़ाबिलेको रवाना हुआ । उसके पहुँचनेके पहलेही बोझारे-
का शासक भाग गया । पर इल्बर औरससको पार कर सुरा-
सानमें लूट-मार मचानेके खयालसे बढ़ आया । रजाकुलीखानके
पहुँचनेकी खबर पातेही वह अपने क़िले, अवीउर्दमें भाग गया
और उसने समझा, कि यहाँपर किसी बातका भय या ख़तरा
नहीं है । लेकिन वहाँसे अपना दल मजबूतकर ज्योंही वह पीछे
हटनेका विचार कर रहा था, त्योंही एक-ब-एक उसे खबर लगी,
कि रजाकुलीखान आगे बढ़ रहे हैं । इस खबरसे उसकी सेना

बहुत धबका उठी। सारी फ़ौज तितर-बितर हो गयी। इल्खर भी भागकर अपनी राजधानी शेरजूममें चला गया; लेकिन इन दोनों राजाओंकी सजा बमो पूरी नहीं हुई है। नादिरशाहने इन्हें समुचित दण्ड देनेकी जो प्रतिज्ञा दिल्लीमें की थी, वह धर पूरी होनेवाली है।

अस्तु, पाठकोंको याद होगा, कि सिन्धु नदीके तटपर पहुँचतेही नादिरशाहने अपने कारीगरोंको बौक्सस नदी पार करनेके लिये बाल्खमें पहलेसेही बेड़ा बनानेको भेज रखा था। नादिरशाहके हुक्मके मुताबिक वहाँ ग्यारह सौ बेड़े बनकर तैयार हो। धा-दीनसे चलकर अपनी फ़ौजके साथ ३१वीं जुलाईको नादिरशाह बौक्सस नदीके तटपर पहुँचा। बेड़े तो वहाँ पहलेसे तैयार ही थे, भट-भट नदीको पारकर नादिरशाह दस दिनोंके भीतरही बल-बल सहित घोड़ारोंकी सरहदपर जा बसका।

वाहकि बहुतसे सरदार और सुबेदार नादिरशाहके सिपहसालारसे भा मिले, तथा उसे नादिरशाहका प्रतिनिधि समझकर इन लोगोंने उसका बहुत आदर-सत्कार किया तथा सबने अपनी-अपनी भेंट चढ़ायी। इसी बीचमें नादिरशाहके दोनों लड़के रज़ाकुलीखाँ और ज़हीकुलीखाँ भी वहाँपर पहुँच गये। नादिरशाहके हुक्मके मुताबिक बाल्खस नदीपर जो पुल बाँधा जा रहा था, उसके ज़तम होनेपर नादिरशाहकी ईरानी फौजके, झुर्र-के-झुर्र सैनिक नदीको पारकर तातारी प्रदेशमें उतरने लगे। सैनिकोंका यह जमघट देखकर वहाँका शासक बेतरह धबका उठा। वह समझ गया, कि नादिरशाहकी फौजसे

मुक़ाबिला करनेमें सिर्फ़ उसका राज्यही नहीं नष्ट हो जायेगा, बल्क उसपर और उसके परिवारपर भी आफ़त आजायेगी। इस विचारसे उसने अपने बज़ीरे-आज़मको नादिरशाहकी सेवामें भेजा। नादिरशाहने भी उसके आगमनका समाचार पाकर उसे अपने डेरमें बुलवाया, उसके साथ बड़ी मुजतता और सभ्यताका वर्त्ताव किया। पश्चात् बज़ीरे-आज़मने नादिरशाहकी सेवामें अपने राजाका, जो निवेदन उपस्थित किया, उसका वाशय इस प्रकार है:—

“दिव्य-विख्यात ईरानके शाहनशाह नादिरशाहकी सेवामें तूरानके राजाका यह मन्त्र निवेदन है, कि आपकी विजय-ध्वजा चारों तरफ़ फहरा रही है। हिन्दुस्थान विजयकर जिस प्रकार आपने अपने बल और पराक्रमका परिचय दिया है, उससे मैं पूर्ण-तया परिचित हूँ। किसीसे भी आपका शौर्य और साहस छिपा नहीं है। ऐसी अवस्थामें तूरानका एक साधारण राजा ईरानके शाहनशाहके साथ भला क्या मुक़ाबिला कर सकता है? प्रथम तो आपको मुझसे लड़नाही नहीं चाहिये। यदि आप लड़नेके लिये विश्कुल आमादा हो जायेंगे, तो भी मैं आपसे कदापि नहीं लड़ूँगा। मेरी तो हार्दिक इच्छा है, कि मैं ईरानके शाहनशाहके चरणोंमें सदा सर झुकाये रहूँ। उनसे सदा मित्रता एवं प्रेमका सम्बन्ध बनाये रहूँ। आपके सामने रण-क्षेत्रमें खड़ा होना मेरे साहस और सामर्थ्यसे बाहरकी बात है और मेरे जैसे सामान्य मनुष्यके साथ लड़नेमें आपकी शोभा भी तो नहीं होती। कारण, जिसकी विजय-वैजयन्ती दिग्दिगन्तमें फहरा रही है और

जिसने अपने प्रबल पराक्रमसे मुगलिया सल्तनत जैसे प्रबल साम्राज्यकी भी नींव ढोली कर दी है, उसका एक तुच्छनासकपर आक्रमण करना कदापि शोभा-स्पर्ध नहीं। अतएव तूरानका यह तुच्छ राजा आपके आधिपत्यको सहर्ष स्वीकार करता है तथा अपनी यह तुच्छ भेंट अपने बजीर द्वारा आपके चरणोंमें प्रार्थित कर वाशा करना है, कि जिस उदारता और सज्जनताके साथ आपने हिन्दुषानके बादशाह महम्मदशाहके साथ वर्ताय किया है, वैसाही वर्ताय आप इसके साथ भी करेंगे।”

नादिरशाहने इसका उत्तर इस प्रकार दिया:—

“आपके राजाने जो सन्देश भेजा है, उसके अक्षर-अक्षरसे चिन्तना टपक रही है। मेरे आक्रमणके पूर्वही उन्होंने जो मेरी अधीनता स्वीकार कर ली, इसके लिये उन्हें धन्यवाद है। साथही आप मेरी ओरसे उन्हें इस बातकी भी सूचना दे दें, कि यदि वे अपनी रक्षा अति शीघ्र चाहते हैं, तो वे खुद मेरे पास आ जायें।

“वे इस बातका पूरा विश्वास रखें, कि एकवार किसी बातका वादाकर फिर उसके प्रति विश्वास-घात करना नादिरका काम नहीं है। यदि उन्हें मेरी अधीनता स्वीकार है, तो वे मेरे पास चले जायें। जिस प्रकार नादिरने हिन्दुषानमें किया है, उसी प्रकार वह उनके मल्लकपर भी अपने हाथोंसे मुकुट रखेगा और भविष्यमें भी सदा पारस्परिक मैत्रीका बन्धन बूझ रहेगा।”

नादिरशाहका यह उत्तर पा, बजीरि-आज़म क़ौरन अपने राजाके पास गया। उससे उसने सारी बातें कह सुनायीं। नादिरशाहका उत्तर सुन, तूरान अथवा तातारियोंका राजा

बड़े पसोपेशमें पड़ा। वह दिन रात यही सोचने लगा, कि जायें या नहीं? उसके सामने एक बड़ा विकट प्रश्न आ उपस्थित हुआ। एक ओर अगर नादिरशाहके हुक्मका अनादर करता है, तो दूसरी ओर अपनी मान-मर्यादा मिट्टीमें मिलाता है। वह सोचने लगा, कि "नादिरशाहका मुक़ाबिला करनेमें भी तो मैं कित्तहुल असमर्थ हूँ। कारण, मेरी सेना सजो-सजायी नहीं और न लड़ाई करनेके लिये मेरी ओरसे किसी प्रकारकी तैयारीही की गयी है।" अन्तमें अपनी डाँवाडोल मतिको स्थिर कर, नादिरशाहके पास जानाही उसने अच्छा समझा और वैधड़क उसके पास चला गया।

वहाँ जा, वही वितनत्रतासे उसने नादिरशाहको प्रणाम किया। नादिरशाहने भी उसे बड़ी शिष्टतासे अपने पास बैठाया और उसका बधेष्ट आदर-सत्कार किया। दोनोंमें बड़ी देरतक बातें हुईं। अन्तमें नादिरने प्रस्ताव किया, कि आक्सस नदी ईरानी और तातारी राज्योंके बीचकी सीमान्त-रेखा क़ायम की जाये। इसके उस पारका सब खान ईरानी राज्यमें मिला दिया जाये और पार-स्परिक मैत्रीका स्मारक स्वरूप-तुरानके राजा अबुलफ़ैज़की लड़कीसे नादिरशाहके भतीजिसे विवाह कर दिया जाये।

नादिरकी बातको कौन काट सकता था? सुतरां, नादिरके प्रस्तावको अबुलफ़ैज़ने हार-मानकर—लाचार होकर—स्वीकार कर लिया। आक्सस नदीके दक्षिण और पश्चिम भागका सारा हिस्सा, साथ-साथ बालू और उसके अन्दरके खानोंको भी अबुलफ़ैज़ने नादिरशाहके हवाले किया। पश्चात् अपनी

कन्याकी शादी उसने नादिरशाहके भतीजे अलीकुलीखासे कर दी और इस प्रकार नादिरशाहको सन्तुष्टकर अपनी जान और मालकी रक्षा की ।

अपने भतीजे अलीकुलीखाकी शादी अबुलक़ासके करनेके बाद दूसरेही दिन अर्थात् सन् १७४० ई०के अगस्त महीनेके तीसरे सप्ताहमें नादिरशाह अपने दल-बलके साथ खारेज़मकी ओर बढ़ा । खारेज़म एक बहुत बड़ा राज्य है । यह आक्सस नदीके किनारेपर स्थित है और जहाँ आक्सस नदी कास्पियन समुद्रसे मिलती है, वहाँतक फैला हुआ है । इसमें बहुत बड़े-बड़े शहर और दुर्गें हैं । वही कारण है, कि बहुतेरे बादशाह इस राज्यपर अपनी आँख गड़ातेही रह गये, पर कोई इसे अपने काबूमें न ला सका था ।

खारेज़मपर नादिरशाहके आक्रमण करनेका कारण पाठक पढ़ चुके हैं । यहाँका प्रधान 'दुर्ग' हज़ारा है, जो एक विशाल और दुर्गेंघ चहारदीवारीके अन्दर बना हुआ है । लगभग डेढ़ महीनेतक लगातार चलकर नादिरशाह १३ वीं अक्टूबरको हज़ारा पहुँचा । नादिरशाहके पहुँचनेका समाचार पातेही वहाँका राजा अलवर अपने दुर्गमें जा छिपा । नादिरशाह इस दुर्गकी प्रशंसा पहलेसेही सुन चुका था । अतएव इसपर किसी प्रकारसे अपने बरसाहका दुरुपयोग और अपज्यय न कर, उसने एक दूसराही उपाय सोच निकाला । वह खारेज़मकी राजधानी खैवापर आक्रमण करनेके बहानेसे आगे बढ़ा । वहाँ उसका उद्देश्य यह था, कि जब हमारी फौज खैवापर

आक्रमण करती हुई आगे बढ़ती जायेगी, तब ख़ामब्राह्म इल्वर अपनी राजधानीकी रक्षा करनेके लिये हज़ारासे निकलकर खैवाकी ओर बढ़ेगा ।

नादिरशाहका यह अनुमान बहुत ठीक निकला । ज्योंही उसकी फ़ौज हज़ारासे कुछ दूर आगे बढ़ी, त्योंही इल्वर अपने हज़ारा दुर्गसे निकलकर खैवाकी रक्षा करनेके लिये एक दूसरे मार्गसे आगे बढ़ा । वस, अब नादिरशाहकी फ़ौजने रास्तेमेंही उसे घेर लिया । महज़ मामूली एक लड़ाई हुई । इल्वर और उसकी फ़ौज हार गयी । बहुतैरे लोग मारे गये । इल्वर अपनी जान ले, एक छोटेसे कमज़ोर क़िल्लेमें जा छिपा । नादिरशाहकी फ़ौजने उसे वहाँपर भी जा घेरा । इल्वर अपने बन्द साधियोंके साथ उस क़िल्लेके भीतरसेही नादिरशाहकी विशाल फ़ौजका मुक़ाबिला करनेका हुस्साहस करता था । अन्तमें नादिरशाहकी फ़ौजने उस क़िल्लेको तोड़ डाला । उसके भीतर घुसकर इल्वरको पकड़कर वे लोग उसे नादिरशाहके सामने लाये । नादिरशाहने उसके हठ और दुराग्रहपर क्रुद्ध हो, उसे मार डालनेका हुकम दे दिया । अपने हठ, दुराग्रह और मूर्खताके कारण इल्वरने इस प्रकार अपनी जान गँवायी । ख़ारेज़मके सारे राज्यपर नादिरशाहका अधिकार हुआ ।

ख़ारेज़मपर विजय प्राप्त करनेके पश्चात् रज़ाकुली और अलीकुलीने मशहद वापस चले जानेके लिये नादिरशाहकी आज्ञा माँगी । क्योंकि जबसे उनके भाई नसरुल्लाख़ाँ, नादिरशाहके साथ, हिन्दुस्थानपर चढ़ाई करने गये, तबसे आजतक अर्थात् पाँच वर्षके

भीतर उन लोगोंकी एक दूसरेसे मुलाकात नहीं हुई थी। नादिर शाहकी आज्ञा पा, दोनों अपने भाईसे मिलनेके लिये चले गये। इधर नादिरशाह नव-प्राप्त राज्यमें कुछ दिनोंतक ठहरकर वहाँकी राज्य-व्यवस्था ठीक करनेमें लग गया। यहाँका राज्य-प्रबन्ध अबुलफ़ीजके भाई अबुलताहिरके हाथोंमें सौंपकर वह वहाँसे रवाना हुआ। आक्सस नदीको पारकर वह दिसम्बर महीनेके मध्य भागमें मेरूतगरमें पहुँचा। वहाँ कुछ दिनोंतक विश्राम लेनेके बाद वह अपने कुलात्के क़िलेपर पहुँचा। वह खान नादिरको बहुतही प्रिय था। उसने पहिलेसेही विचारकर रखा था, कि अपने जीवनके शेष भागमें, राज-काजके सभी बंधनोंसे तर्क-साल्लुककर, अपनी आयुके अन्तिम दिन, सुख और शान्ति पूर्वक यहाँपर व्यतीत करूँगा। फलतः यहाँपर उसने एक परम सुरम्य और विशाल भवन निर्माण करनेकी आज्ञा अपने कर्म-चारियोंको दी। इसके मुताबिक हम्मामख़ाना, दीवानख़ाना, सरदारख़ाना और आमख़ाना, क़ौरह तैयार होने लगे। इनके निर्माणमें पानीकी तरह खव बहाया जाने लगा। नादिर दिल्लीसे जो विपुल सम्पत्ति लाकर ईरानमें लाया था, वह कुलात्को 'दिल्ली' बनानेके प्रयत्नमें लगायी जाने लगी। अन्तमें कुलात् ईरान देशमें एक सबसे प्रबल, प्रशस्त और सुरक्षित दुर्ग बन गया। दिल्लीसे लायी हुई सम्पत्ति भी यहाँपर रखनेके लिये ढीकर लानेकी आज्ञा उसने अपने कर्मचारियोंको दे दी।

कुलात्को सब प्रकारसे धी-सम्यस्र बनाकर नादिर सन् १७४१ ई० के दिसम्बर मासके अन्तिम सप्ताहमें वहाँसे मराहदके

लिये रवाना हुआ। उसने बड़ी धूम-धामसे मशहद नगरमें प्रवेश किया। शुरू जनवरीसे लेकर १० वीं मार्चतक गाना प्रकारके उत्सवोंके कारण मशहदका दृश्यही कुछ और हो रहा था। कहीं गाना-बजाना, कहीं नाच-रङ्ग और कहीं रोशनी-आलशबाज़ी आदिसे पैसा माहूम पड़ता था, कि इतने दिनोंतक वहाँपर लगातार दीवालीही मनायी जा रही थी।

इतनी धूम-धामसे उत्सव मनानेका कारण भी बधेष्ट था और वह यही, कि पाँच वर्षकी छोटी अवधिमें नादिरशाहने अनेक बड़े-बड़े राजाओंको परास्त किया, अनेकोंको अपने वशमें किया और अनेक देशोंको अपने राज्यमें मिला लिया था। यहाँ तक, कि इन्हीं पाँच वर्षोंके भीतर ईरानी सल्तनतका विस्तार आक्सस नदीसे लेकर सिन्धु नदीतक हो गया।

पर इतनेपर भी लोमी तथा असन्तोषी नादिरका हौसला पूरा नहीं हुआ। यूफ्रेटीज़ और टिग्रीज़ नदियोंके तटपर स्थित तुर्कोंकी जगहको भी उसने अपने राज्यमें मिला लेनेका विचार किया। साथ-ही-साथ रुसियोंके साइप्रस और अरेक्सस प्रदेशपर कब्ज़ा कर लेनेका भी इरादा किया। परन्तु अभी उसे अपने भाई जाहिङ्गीलाकी असामयिक मृत्युका बदला चुकाना बाकी था, इसलिये उसने कुछ दिनोंतक विध्राम करनेके पश्चात्, शोएवान पर्वतकी ओर कुच किया। तीसरी मईको, जब वह मजेन्द्रान प्रदेशके एक जङ्गलसे होकर गुज़र रहा था, कि एक भ्वाड़ीके अन्दरसे किसी दुष्टने उसकी ओर निशाना करके एक बन्दूक चलायी। गोली नादिरके दाहिने हाथमें लगकर उसके थोड़ेके

सिरमें लगी। घोड़ा ज़मीनपर गिर पड़ा और मर गया। शाहज़ादा उस समय नादिरशाहके साथही जा रहा था। इस आकस्मिक घटनासे उसकी तबीयत बिल्कुल ख़राब उठी। वहूतैरे कम्मोचारी और मुसाहब इस पदयन्त्रका मूल प्रतिपादक रज़ाकुलीख़ाँकोही पतलाते हैं। पर नादिरशाहके समयके अथवा उसके बादके जितने इतिहास-लेखक होगये हैं, वे उसे निर्दोष पतलाते हैं। इस कामकी ज़दमें कौन था, इस बातका कोई भी ठीक-ठीक पता न लगा सका। हाँ, इस बातपर हृष्टि रखते हुए, कि मुत्तल्लमानी दरबारोंमें राज्यके लिये पिता-पुत्र अथवा भाईकी हत्या कोई विशेष आश्चर्य-जनक बात नहीं। यह सम्भव भी हो सकता है, कि रज़ाकुलीख़ाँकी साज़िशसे यह कारवाई की गयी हो; लेकिन किसी विशेष प्रमाणके अभावमें केवल अनुमानका क़िला घनाना इतिहास-लेखकका कर्त्तव्य नहीं है। अतः जब रज़ाकुलीख़ाँके सम्बन्धमें कोई भी प्रमाण—प्रत्यक्ष अथवा गोप्य, प्राप्त नहीं, तब रज़ाकुलीख़ाँके मर्त्ये दोष मढ़ना नितान्त अनुचित है। धर्म-शास्त्र अथवा न्याय-शास्त्रका भी तो यही नियम है।

दिल्लीपर नामक एक ख़बर सरदारके लड़केकी साज़िशसे यह घटना हुई थी, ऐसा भी कुछ लोग कहते हैं। ख़ैर, मात-तायी नादिरशाहपर गोली चलाकर एक घने जङ्गलकी ओर भाग चला। नादिरशाहके सिपाहियोंने उसका पीछा किया। अन्तमें वह पकड़ा गया और मार डाला गया। इसके पश्चात् नादिरशाहने दैमिस्तानपर अपना अधिकार जमाया। उसके

कल, विक्रम और पराक्रमकी चर्चा सुन-सुनकर उस प्रदेशके जितने असम्य और बर्बर सरदार थे, सब एक-एक कर नादिर-शाहके पास आने लगे और नादिरशाहसे क्षमा-प्रार्थना करते हुए, सबने उसकी अधीनता स्वीकार करनेकी प्रतिशा की।

देगिस्तानसे नादिर फिर अपनी राजधानीमें वापस चला आया। नये-सालका प्रथम मास उसने बड़े-बड़े देशोंके राजाओं और बादशाहोंका अभिवादन स्वीकार करनेमें व्यतीत किया। इसी महीनेमें टर्कीके शाह सुल्तान महम्मदसे सन्धि करनेकी भी चर्चा चली। नादिरशाहने सारे मेसोपोटामियापर अपना कब्जा रखनेका प्रस्ताव उपस्थित किया। इस प्रकार ईरान राज्यका प्रचुर विस्तारकर, राज्य-दण्डको त्यागकर उसने क़लातमें जाकर शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करनेका विचार किया। देहलीसे लायी हुई सारी सम्पत्ति तो पहलेसेही वहाँपर सजी-सजायी रखी थी। मुग़ल बादशाह महम्मदशाहने भी नादिरका तात्परियोंपर विजय प्राप्त करनेके उपलक्ष्यमें अपने एक दूतके हाथों अभिवादन-संवाद भेजा था। उसने चन्दनकी बनी हुई एक ऐसी चीज़ उपहार-स्वरूप भेजी थी, जिसकी खुदाई और कटारकी धारीकी देखकर नादिर-शाह अकित हो गया। इस उपहारको स्वीकारकर उसने भी प्रत्युपहारमें महम्मदशाहके पास कुछ ऐसी वस्तुएँ अपने राज-दूतके हाथ भेजीं, जो रूप, गुण और मूल्यमें महम्मदशाहकी भेजी सामग्रियोंसे किसी प्रकार भी कम न थीं। साथही नादिर-शाहने हिन्दुस्थानसे लाये गये गायक, गायिकाओं और नर्तकि-योंको देहली वापस भेज दिया।

नादिरके इन कामोंसे इस बातका अच्छी तरहसे पता लगता है, कि नादिरशाह सिर्फ एक उग्रहृ लड़ाका ही न था, बरन् इसके साथ-साथ उसका हृदय एस-सोहृप भी था। उसकी इच्छा ईरान देशमें-संघीत विद्या और नृत्य-कलाका प्रचार करनेकी भी थी। फलतः देहली वर्षके अवसरमें नादिरशाहके सद्बुधोंसे बहुतरे गर्वये और नर्तक ईरान-देशमें तैयार हो गये अच्छी-अच्छी विद्याओंको, मनोहर कलाओंको और बहुमूल्य रत्नोंको बाहरसे ला-लाकर, ईरान-भारद्धारको सुसम्पन्न बनानेकी ओर सदा उसका ध्यान रूढ़ करता था। यह वर्ष अर्थात् सन् १७४२ ई० का समय नादिरशाहके किसी विशेष काममें नहीं पड़ा। हाँ, इस वर्षके शेषका कुछ भाग उसने उत्तरीय प्रान्तोंको दबाने तथा आर्मेनिया और सरकाशियाका प्रबन्ध ठीक करेमें व्यतीत किया।

सन् १७४३ ई०में नादिरशाहकी अवस्था उष्ण वर्षकी हो चुकी। एक ओर तो वह राज-पाटके षंभटोंसे लुटकारा वा सुख-शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेका विचार करता, पर दूसरी ओर बेचारा अपने सभाषसे लाचार है। सन् १७४२ ई० में कुछ विध्राम करनेके पश्चात् फिर उसका चित्त किसी युद्ध अथवा आक्रमणके लिये व्यग्र हो उठा। इस बार फिर भी उसने अपनी बहुत दिनोंकी अभिलाषाको पूरा करनेका—अर्थात् तुर्कीपर आक्रमण करनेका—विचार किया। इसलिये १७४३ ई०के प्रारम्भमें अपनी फ़ौज लेकर वह बाग़दादकी ओर बढ़ा। रास्ते-परके अनेक मुख्य-मुख्य स्थानोंपर उसने अपना अधिकार जमा

लिया। बाग़दादके सरदार अहमदने उसके पास एक बहुतही वित्तमय सन्देश भेजा, जिसमें उसने नादिरके आक्रमणको क्षणित रणनेका प्रयत्न किया था; पर दूसरी ओर तुर्की दरबारमें सुल्तान द्वारा नादिरशाहका मुझाबिला करनेके लिये बड़ी भारी तैयारी हो रही थी। इस अभिप्रायसे सुल्तानने अपने सभी सरदार और गवर्नरोंके पास यह धार्मिक सन्देश कहला भेजा था, कि ईरानियोंको ज़ेद करना और मार डालना सबका फर्ज है; क्योंकि वे नास्तिक और सत्य-पथके विरोधी हैं।

यह समाचार पातेही नादिरशाह तत्क्षणही मसलपर अपना अधिकार करनेके लिये और बाग़दादके गवर्नर अहमदको परास्त करनेके लिये बाग़दादकी ओर रवाना हो गया। मसल एक बड़ा भारी शहर है। उस समय वहाँका गवर्नर हुसेन था। अलेप्पोके बादशाहने अपनी सारी सेना हुसेनकी मददमें भेज दी। नादिर भी धागे बढ़ता गया। टिग्रीज़ नदीपर उसने एक भारी पुल बाँध दिया और उसीपरसे अपनी सारी फौजको उस पार उतार ले गया। फिर अपनी सेनाका सङ्गठनकर वह मसलपर अपनी तोपें और बन्दूकें दागने लगा। वहकि वीर सिपाहियोंने पाँच दिनोंतक शहरकी रक्षा की। पर अन्तमें हुसेनने नादिरशाहके पास अपने दो दूतोंकी माफ़त सन्धिके सन्देश भेजा; साथ-ही उसने यह भी कहला भेजा, कि 'बाप ज़रा हमलोगोंकी खितीपर विचार करें। हमलोगोंके हाथोंमें इस शहरकी रक्षाका भार सौंपा गया है। सुल्तानका हुकम है, कि हमलोग लड़कर इसकी रक्षा करें। ऐसी अवस्थामें हम लोग अब अपने मनसे

आपके साथ सन्धि कर लेंगे, तब हमलोगोंकी क्या हालत होगी ? इसलिये कुछ दिनोंके लिये आप मोहलत मञ्जूर करें। मैं सुल्तानके पास लिखता ही हूँ और साथही ऐसी कोशिश भी करता हूँ, जिसमें आपमें और उनमें सन्धि हो जाये।”

नादिरशाहने इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। अबतक कुस्तुनतुनियासे सुल्तानका इस विषयमें कोई निर्णयात्मक उत्तर नहीं आ आये, तबतक उसने अपना आक्रमण रोक रखना स्वीकार कर लिया और इस बीचमें वह अपना समय अमन-चीनमें, बाग़दादके आस-पासके गाँवोंमें बूमने, उन्हें देखने और वहाँके आदमियोंसे मिलने और बाल-बीत करनेमें बिताने लगा। हुसेन और नादिरशाहके बीचमें इस समय मैत्री भी बड़ी गाढ़ी हो गयी। एकके पास दूसरेके यहाँसे हमेशा तोहफ़े और उपहार आने-जाने लगे। हुसेनने एक बड़ा वेड़ा बनवाया था। टिब्रीज़ नदीमें सन्ध्या समय नादिरशाह उसी वेड़ेपर जल-बिहारके लिये निकला करता था। बाग़दादके बहुतरे मीलवो और उमराव भी नादिरशाहके साथ रहते थे। नादिरशाह उनसे धार्मिक चाद-बिचाद किया करता था। वे भी उसे सन्तुष्ट रखनेके लिये, उसकी बातोंका अपने मनके प्रतिकूल होनेपर भी पूष्ट पोषणही किया करते थे। वे सदा उसकी “हाँ-भै-हाँ” मिलाया करते थे।

इस स्थानपर एक इतिहासकारका एक बड़े मार्केका प्रश्न है। वह पूछता है, कि एक ओर नादिरशाहकी फ़ौज बाग़दादके पास बड़ी बड़ी है, दूसरी ओर टर्कीके सुल्तानसे मुकाबिला है। साथ-साथ यहींपर ऐसे प्रदेश, जिन्हें नादिरशाहने

अमी अपने अधिकारमें किया है, अव्यवस्थित और बिना किसी प्रबन्धके पड़े हुए हैं। ऐसी अवस्थामें नादिरशाहका मुसलमान मौलवियोंसे धर्मके बेकार-बेकार विषयोंपर वाद्-विवाद करना, दुश्मनके साथ उनकी किश्तियोंपर आमोद्-प्रमोद् करना, सेनाके सङ्गठनकी ओर ध्यान न देना और नव-विजित प्रदेशोंकी शासन-व्यवस्था न करना क्या नादिरके लिये उचित था ? इसका उत्तर हम इस प्रकार दे सकते हैं:—

ऐसे समयमें नादिरशाहका इस प्रकार आमोद्-प्रमोद्में लीन रहना कदापि उचित नहीं—विशेषतः ऐसी अवस्थामें, जब उसकी प्रवृत्ति अथवा मनका झुकाव विशेष रूपसे इस ओर है भी नहीं। पर आजका नादिर दस दिन पहलेका नादिर नहीं है। आज नादिरके मनोभाव वैसे नहीं, जैसे एक महीना पहले थे। आज अपनी ही की हुई एक हरकतसे वह एक प्रकारसे पागल हो रहा है ! वह झूठ ही नहीं समझता है, कि अब उसे क्या करना चाहिये और क्या नहीं ? असल बात यह है, कि यदि तीसरी मई सन् १७४१ ई० में जिस समय नादिरशाह मजन्दानके जङ्गल होकर गुजर रहा था और जिस समय किसी आततायीने उसपर गोली चलायी थी, उस समय यदि वह मर गया होता, तो ईरानकी हालत वैसी कभी न होने पाती, जैसी उसकी मृत्युके पश्चात् अथवा जीवनकालमें ही होगयी थी,—चरख शाहशाहद राजकुलीशकि सुराज्यमें वह और भी फूलता-फलता और नादिरशाहकी कीर्ति-कौमुदी भी एक प्रकारसे सुरक्षित रहती ; पर ऐसा न होने पाया।

जिस समय नादिरशाहपर गोली चलायी गयी थीर उस गोलीने नादिरशाहकी जान न लेकर, उसके घोड़ेका काम तमाम कर डाला, उस समय नादिरशाहके कुछ मुसाहबोंने नादिरशाहके जानोंतक यह कुर्रर पहुँचा दी, कि रज़ाकुलीर्षाकीही साज़िशसे उसपर गोली चलायी गयी थी। बात ग़लत थी वा सही, यह कोई भी नहीं जानता ; पर स्वभावसेही क्रोधान्व नादिरने बिना इस बातके सध्यातथ्यका कुछ पता लगाये, यह कठोर आह्ला देदी कि “रज़ाकुलीर्षाकी आँखें निकाल लो।” यह हुक्म रज़ाकुलीर्षाके कुर्ररकी सज़ा या अथवा निर्दोष रज़ाकुलीर्षाके पूर्वकृत जन्मका भोग था, यह परमात्मा जाने ! पर नादिरशाहके हुक्मसे उसकी दोनों आँखें निकाल ली गयीं।

कुछ लोगोंका कहना है, कि नादिरशाहने एक-ब-एक अपने निकालनेको आज्ञा नहीं दी,—परन्तु पहले तो उसने मुसाहबोंकी बातोंपर विश्वासही नहीं किया। इसपर मुसाहबोंने निम्न-लिखित बातें नादिरशाहसे कहीं,—“जो-पनाह ! ये बातें हम लोग नहीं कहते, बल्कि आपकी प्रजा कहती है। राज्य-छोभी शाहज़ादेने आपसे राज्य लेनेके लिये पद्यून्म रचा है। उस पद्यून्ममें कुछ और लोग भी शामिल हैं; उन्हीं लोगोंमेंसे कुछ लोगोंका यह कथन है। जनताको आपकी अथवा शाहज़ादेकी क्या परचाह है ? जनता तो चार भागैकी बातको सोलह भागै पनाकर निस्संकोच भावसे कहती है। आपकी उम्र बढ़ती हुई देखकर शाहज़ादेका चैर्य्य झूझता जा रहा है। अतएव वे आपके प्राण लेनेके लिये अनेकानेक प्रयत्न-अयत्न कर रहे

हैं। राज्य-लोभ एक ऐसा पदार्थ है, जिसमें पिता पुत्रका और पुत्र पिताका शत्रु बन बैठता है। स्वार्थान्ध चक्षुको धर्माधर्मकी सूक्ष्म तनिक भी नहीं रहती। क्या आपको यह स्मरण नहीं है, कि इसी स्वार्थके कारण, राज्य-लोभमें पड़कर सलीम, औरङ्ग-जेब—सब एक दूसरेके शत्रु बन गये। इसी अवस्थामें यदि शाहजादा रज़ाकुली आपको जान ले लेना चाहते हैं, तो इसमें आश्चर्यकी क्या बात है ?”

इसका नादिरशाहने यों उत्तर दिया,—“बफ़ादार सरदारो ! यदि इस नीच पुत्रका अपने पिताकी हत्या करनेका प्रयत्न आश्चर्य-जनक नहीं, तो याद रखो, कि ऐसे पुत्रके प्रति नादिरका फ़ौरनही फ़ैसला सुना देना भी कोई आश्चर्य-जनक बात नहीं ! लेकिन मैं उसे मारना नहीं चाहता। इससे उसके सब दुःखोंका एक साथही अन्त हो जायेगा। नादिरके प्रति विद्रोह करनेका फल उसे कुछ भी नहीं मिलेगा। इसलिये मेरा हुकम है, कि पितृ-द्रोहके अपराधमें इसको दोनों बाँधें निकाल ली जायेंगी, जिससे इसको अपने कियेका फल जन्मभर भोगना पड़ेगा।”

“जो गुस्सेमें आकर काम करता है, वह शान्तिमय, एकान्त स्थानमें बैठकर पश्चात्ताप भी करता है।”—यही उक्ति नादिर-शाहके लिये चरितार्थ होने लगी। दिन-रात वह उदास रहता था, कमी कुछ बकता और कमी कुछ सुनता ! कोई भी काम करनेमें अब उसको तपीयत नहीं लगती। यही कारण है, कि नादिरशाहकी इस समय ऐसी हालत हो रही है। अस्तु ; नादिर अब शान्त, एकान्त जीवन व्यतीत करना चाहता है, पर दूसरेही

वर्ष ऐसी बरत उपस्थित होजाती है, जिसके लिये उसे फिर अपना शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करनेका विचार छोड़कर तुर्कों के विरुद्ध लोहा लेना पड़ता है।

पाठकोंको स्मरण होगा, कि हुसेनके अगुरोधसे, सन्धिसे विचारले, अपना आत्ममग्न कुछ दिनोंके लिये स्थगित कर, नादिर, बारादाबके इधर-उधरके गाँवोंमें भ्रमण कर रहा था। उसी समय उसे यह खबर मिली, कि—“अमाल उमली नामक एक तुर्क लिपहत्तालारने, जो उस समय आर्मीनिया प्रदेशके कारस नामक स्थानमें था, परशियाके सारे प्रमुख सरदारों और सुबेदारोंके पास इस आशयका पत्र लिखा है, कि वे नादिरशाहके विरुद्ध उठ जायें। इतनाही नहीं, फ़ारस-फ़ारस जगहोंपर उसने अपने इस आन्दोलनके प्रचार और समर्थनके लिये दूत भी भेजे हैं। साथही उसने यह भी कहला भेजा है, कि ईरानकी गद्दीका हकदार नादिरशाह नहीं, बरज् शफ़ी है। इसलिये हमलोगोंको ऐसा उद्योग करना चाहिये, कि नादिरशाहको सिंहासनसे हटाकर उसकी जगहपर शफ़ीको, जो ईरानकी गद्दीका सच्चा हकदार है, शाह मुकर्रर करें। इस शफ़ी नामक व्यक्तिकी जीवन-कथा बड़ीही रहस्यपूर्ण है। इसका असल नाम महम्मद थली था। दरिद्रताके कारण वह फ़कीर होगया और भीषण भ्रमणकर किसी तरह अपना जीवन-निर्वाह करता था। एक दिनकी घटना है, कि भीषण देते समय किसी सख्तने उसके चेहरेकी ओर कुतूहल-भरी दृष्टिसे देखकर कहा था, कि ‘तुम्हारी रक्त-सूरत लकीले मिळती-जुळती है।’ इसपर उसने अजीब सूरत बना ली और

बहुतही विनमृतापूर्वक ओज-भरे ढङ्गसे कहा,—“मैं तो अपना गुप्त रहस्य कभी, किसीपर प्रकट करना नहीं चाहता था। मेरा किस वंशमें जन्म है और मैं किसका पुत्र हूँ, ये सारी बातें किसीको भी कहनेका मेरा विचार नहीं था; पर जब आपने मुझे आज मेरे रूप-रङ्गसे पहचानही लिया है, तब मुझे बाध्य होकर सब यथार्थ बातें सोलनी पड़ती हैं। आपको यह विदित हो, कि मुझेही लोग शाहज़ादा शफ़ी कहते हैं।” उसकी इन बातोंको सुनकर भुरग-के-भुरग लोग उसे देखनेके लिये वहाँ आने लगे। लोगोंकी ऐसी भीड़ देखकर वहाँके गवर्नरने उसे वहाँसे निकाल दिया। वह वहाँसे बाग़दाद चला गया। बाग़दादमें उसने वहाँके गवर्नर सुल्तान अहमदसे परिचय किया। सुल्तान अहमदने यह जानकर, कि शफ़ी खानदानका यही शाहज़ादा शफ़ी है, उसकी ख़ातिर-बाल की और उसको वहाँसे कुस्तुनतुनियाके शाहके पास भेज दिया। शाहने भी इसे अपना पक्ष-समर्थक जान, इसके रहनेके लिये एक सुन्दर मकान दिया और वे उसे जीवन-निर्वाहके लिये सूर्य भी देने लगे।

सन् १७३०ई०में सुल्तान अहमद जब शासन-च्युत किया गया, तब वह भी कुस्तुनतुनियासे निकाल दिया गया और फिर बहुतही दुःखपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगा। कुछ दिनोंतक वह तसलोनिकामें रहा और उसके बाद कुछ दिनोंतक लेमन्समें मारा-मारा फिरता रहा। फिर भी वह एक बार एक तुर्क-जेनरलके साथ मिल गया और इसी आधारपर जमाल उगलीने वह अफ़वाह बढ़ाकर तादिरशाहके विरुद्ध लोगोंको उभारना चाहा है।

अस्तु, अमाल उगलीके पत्रका समाचार ज्योंही नादिरशाहके पास पहुँचा, त्योंही वह अपने पदावपरसे कल पड़ा। वह अमेरकी ओर आने बढ़ा। रास्तेमें कई अनिवार्य कारणोंसे उसे बिलम्ब हो गया; अतएव वह कारसमें सन् १७४४ ई० के जुलाई महीनेमें पहुँचा। कारसके गवर्नरने नादिरशाहका आतिथ्य पहले स्वीकार नहीं किया। इसपर नादिरशाहकी फ़ीजने उसके किल्लेको घेर लिया। अब अपनेको असमर्थ देख, दूसरीदिन कारसके गवर्नरने नादिरशाहसे आक्रमण स्थगित करनेकी प्रार्थना की और कहा, कि 'अबतक मैं तुम्हेंके शाहके पास पत्र लिखकर अपनी असमर्थताका समाचार भेजता हूँ और उन्हें आपसे सन्धि करनेके लिये लिखता हूँ, तबतक आप अपना आक्रमण स्थगित रखें। नादिरशाहने उसकी इस प्रार्थनाको स्वीकार कर लिया और कई सरदारों और कुछ सैनिकोंको किल्लेकी निगरानीमें रखकर अपनी बाकी सारी फ़ौज लेकर वह वहाँसे लौट गया।

दूसरे वर्ष अर्थात् सन् १७४५ ई०के मार्च महीनेमें नादिरशाह इरानकी ओर बढ़ा। पर रास्तेमें उसके सामने एक बड़ा भारी बखेड़ा आ खड़ा हुआ। इसलिये उसे आगे बढ़नेका इरादा छोड़ना पड़ा। इसी बीच अर्थात् जून मासमें उसे यह खबर मिली, कि तुर्कीका भूतपूर्व वज़ीर आज़म महम्मद् पाशा, एक महती सेनाके साथ अज़ोर्क़ान होकर नादिरशाहके मुक़ाबिलेमें आरहा है। उसके साथ अन्यान्य वारद तुर्क सरदार भी सहायतामें आ रहे हैं। इसके अतिरिक्त दो और सरदार महम्मद् पाशासे अपनी-

अपनी फ़ौजके साथ भाकर मिलेंगे। अभिप्राय यह है, कि तुर्क लोग हर तरहसे सुसज्जित होकर इस बार नादिरशाहसे मुकाबिला करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं। नादिरशाहको ज्योंही इसका समाचार मिला, त्योंही वह मारे कुशीके फूल उठा। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया, कि 'चाहे जो हो, अब एकही बारमें सारा फ़ैसला हो जायेगा—या तो इस महायुद्धमें विजय प्राप्त कर, विजय-मुकुट अपने मस्तकपर धारणकर सदाके लिये विजयी कहलाऊँगा अथवा परास्त हो, रणाङ्गनमें अपना शरीर त्यागकर इस दुःखद जीवनसे छुट्टीही पा जाऊँगा।' इस विचारसे नादिरशाहनै अपने पुत्र नसरुल्लाको उन दो तुर्क सरदारोंके मुकाबिलेमें भेजा, जो दियावेकर होकर महम्मद पाशासे मिलने आ रहे थे। इसके बाद उसने अपनी अस्तुपस्थितिमें इमाम कुलीको सुरास्तानका और ईब्राहीमको इराक़का शासक नियुक्त किया और वह स्वयं एक विशाल सेना लेकर महम्मद पाशासे मुकाबिला करनेके लिये रवाना हुआ। २८ वीं जुलाईको वह उस स्थानपर पहुँचा, जहाँ दस वर्ष पूर्व उसने अब्दुल्लाहको परास्त किया था। दूसरे दिन महम्मद पाशा एक लाख घुड़-सवार और चाळीस हजार पैदल सेना लेकर उस स्थानके पास पहुँचे। महम्मद पाशाकी गति बड़ीही धीमी थी। वनका पड़ाव एक पहाड़के पास पड़ा। दूसरे दिन, अर्थात् ३०वीं जुलाईको दोनों इलोंमें एक साधारण मुठभेड़ हो गयी। तुर्क सेना ज़बर्दस्त होनेपर भी पीछे छूट गयी।

जिस समय महम्मद पाशा पहुँचा था, उस समय यदि वह

अपने सारे दलबलके साथ नादिरशाहकी फ़ीजगर हमला कर देता, तो बहुत सम्भव था, कि नादिरको नीचा देखना पड़ता। पर महम्मद पाशाको यह बात न सुधी। इसजे दोही कारण हो सफ़्ते हैं—फ़ाला यह हो सकता है, कि महम्मदशाह पहले दह्लेका ज़मज़ोर और डरपोक हो, साइस उसमें तनिक भी न हो और दूसरा कारण यह हो सकता है, कि नादिरके नाम और अनुष्ठ पराक्रमके स्मरणमात्रसेही वह डर गया हो। जो हो, पर इतना ज़हर कहा जा सकता है, कि नादिरका रोय उस-पर ग़ालिब हो गया और इसीसे वह पहली बार मज़बूत होता हुआ भी, पीछे हट गया। इससे उसकी बहुत बड़ी हानि हुई। एधर उसकी सेना भी बहुत घबरा उठी। यद्यपि पहले मोर्चेपर महम्मद पाशाके हुनमसे वह पीछे हट गयी थी, पर इस बातसे उसे बहुत ग़्लानि और लज़ा हुई। सेनाके चीर सिपाही चाहते थे, कि जैसे भी हो, आगे बढ़कर नादिरशाहका मुज़ाबिला करें, पर महम्मदपाशा अपना पाँव पीछे खींच रहा था। उसकी इस हरकतपर सब सिपाही असन्तुष्ट और क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने निश्चय कर लिया, कि जब अगर महम्मद पाशा ऐसा बर्ताव करेंगे, तो हमलोग उनका हुकम न मानकर अपने इच्छानुसार काम करेंगे।

वहाँ ही तुर्कोंके फ़ीमेमें ये सब बातें हो रही हैं, यहाँ नादिर-शाहका पुत्र नसख़ुदाह, जिन दो तुर्क सरदारोंका मुज़ाबिला करनेके लिये खाने गया था, उनपर विजय प्राप्तकर चुका, इस बातकी सूचना उसने एक पत्र द्वारा नादिरशाहके पास भेज दी।

पत्र पढ़कर नादिरशाह बड़ाही प्रसन्न हुआ। उसने उस पत्रको उसी वक्त एक तुर्क क़ैदीके हाथसे महम्मद पाशाके पास भेज दिया। ज्योंही उस क़ैदीने पत्र लेकर महम्मद पाशाके ख़ोमेमें प्रवेश किया, त्योंही बड़ा भारी कोलाहल शुरू हुआ। अनुसन्धान करनेपर पता लगा, कि नादिरशाहके प्रति आक्रमण करनेमें विलम्ब करनेके कारण तुर्क सैनिकोंने महम्मद पाशाकी हत्याकर डाली है।

उधर ख़ोमेमें कोलाहल और हाहाकार मचा हुआ है और उधर नादिरशाह अपनी सारी फ़ौज लेकर अपने तुश्मनोंपर टूट पड़ता है। उसने उन्हें चारो ओरसे घेर लिया। एक तो वे पहलेसे ही असङ्गठित हो रहे थे, दूसरे अब उनका कोई अधिनायक भी नहीं था। ऐसी अवस्थामें वे क्या करते? निदान सब अपनी-अपनी जान बचानेकी चिन्तामें भागने लगे। नादिरशाहके कुछ सैनिकोंने उनका पीछा किया और बाकी सब लोग उनकी युद्ध-सामग्रियाँ लूटने लगे। इस युद्धमें बहुतसी सामग्रियाँ नादिरशाहके हाथ लगीं। बहुतेरे तुर्की सरदार मारे गये। हताहत सैनिकोंकी संख्या बारह हज़ारसे ऊपर हो थी।

इस प्रकार तुर्कोंपर विजय प्राप्त करनेके पश्चात् नादिरशाह कुछ दिनोंतक उस स्थानपर विश्राम करनेके लिये ठहर गया। इस बीचमें उसने लूटे हुए धनका बहुतसा हिस्सा अपने सैनिकोंमें बाँट दिया। इसके बाद वह हमदमकी ओर बढ़ा। हमदमपर अपना क़ब्ज़ाकर उसने इस्पहानपर चढ़ाई की। बिना रोक-टोकके उसपर भी उसने अपना दख़ल जमा लिया। इन स्थानोंपर ठहर-

कर उसने इन नष्ट-प्राप्त राज्योंका समुचित प्रबंध किया। इस वक्त दिल्लीपरका महीना था। इसी समय झातूनके बादशाहका एक दूत नादिरशाहके पास अच्छे नज़रानेके साथ पहुँचा। यह अपने बादशाहके वहाँसे एक पत्र भी ले आया था। इस पत्र द्वारा झातूनके बादशाहने नादिरशाहकी कामवाची और फ़ख़दयाचीपर मुलायमतादी भेती थी और साथ-साथ यह भी मज़ह किया था, कि नादिरशाह अपने किसी एक अफसरके द्वारा दोनों राज्योंको (अर्थात् नादिरशाह और अपने राज्यका) सीमा ठोक फटा दें। यह प्रस्ताव चहुँकड़के खानदानका था और इसने अपने बाहुपलसे झातूनकी बंदीपर काबू किया था। इसका एक और भाई खालेका राजा था। नादिरशाहने उसकी इस प्रार्थनाको खीकार कर लिया और उसके दूतको नौ अरबी घोड़े और सुन्दर रत्न-अर्द्धित एक तलवार देकर वापस भेज दिया।

अपने अन्तिम और महाप्रयत्न शत्रु तुर्कोंको परास्त करनेके बाद, नादिरशाहको कोई ऐसा बादशाह अथवा सरदार आस-पासमें नज़र नहीं आया, जिसका दमन करना उसे आवश्यक प्रतीत होता। ऐसी ही अवस्थामें, नादिरशाह शान्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहता है। उसकी मानसिक परिस्थिति दिन-पर-दिन विगड़तीही जाती है। चिन्ता बढ़ती जाती है। चिन्तमें ज़रा भी सैन नहीं है। इसलिये वह तुर्कोंसे सदाके लिये सन्धि कर लेना चाहता है। इस विचारके कसौभूत हो, उसने अपना एक दूत, तुर्की दरबारमें, सन्धि करनेके पैग़ामके साथ भेजा। सुल्तानने उसे कुबूल कर लिया। सन् १७४७ ई० के जनवरी मासमें

सन्धि होगयी। उस समय नादिरशाहकी अवस्था ६० वर्षकी थी। तुर्कों-सन्धिके निपटारे हो जानेपर, वह अब एकान्त और शान्तिमय जीवन व्यतीत करनेके लिये तैयार होगया।

नादिरशाह बहुत दिनोंसे मर्झमें एक मस्जिद और ईरानी मुसाफ़िरोके लिये एक मुसाफ़िरखाना बनानेका विचार कर रहा था; पर अब शान्ति और एकान्त-वासके लिये उसका मन इतना व्याकुल हो रहा है, कि अपने उस विचारको भी उसने छोड़ दिया। यहाँ यह स्मरण रखनेकी बात है, कि नादिरशाहका यह विचार गत चार-पाँच वर्षोंसे है; पर शान्तिमय जीवनके लिये नादिर अपने इन सहिचारोंका भी त्यागकर रहा है। शान्तिके लिये वह इस समय पागल सा हो रहा है!



बारहवाँ परिच्छेद।

मृत्युके पूर्व नादिरशाहकी अवस्था ।

सुखी सोचता कुछ है और करनेवाला करता कुछ औरही है। इधर नादिरशाह अपने राज-काजके सारे भंभट-कमेलोंसे छुड़ी ले, जैसा कि पाठक बार-बार पढ़ चुके हैं, अपने जीवनका शेष भाग कलालगढ़के सुरम्य प्रासादमें शान्ति एवं सुख पूर्वक व्यतीत करना चाहता है। उधर उसे खबर मिलती है, कि ईरानका सुवेदार सरदार तकीर्खा नादिरशाहकी अधीनता भङ्गकर अपने एक स्वतन्त्र-राज्यके संस्थापनका प्रयत्नकर रहा है। साथही वह नादिरशाहपर आक्रमण करनेके लिये एक फौज भी तैयार कर रहा है। यहीपर वह स्मरण रखनेको बात है, कि सरदार तकीर्खा नादिरशाहका एक बहुतही विश्वास-पात्र अनुचर था। राज-काजकी सभी बातोंमें नादिरशाह उसकी सम्मतिको प्रधानता देता था और उसके आग्रहात्नुसार बहुत बार चलता भी था। तकीर्खा भी, सदा-सर्वदा उसकी जी-जानसे भलाई करना चाहता था। नादिरशाहकी आज्ञाओंपर मर मिटनेके लिये वह सदा तैयार रहता था। पर जब बुरे दिन आते हैं, तब मित्र भी बेटी बन बैठते हैं। अस्तु ; तकीर्खाकी बग़ायतकी बात सुन नादिरशाहकी हालत धक्कती हुई आगके अङ्गारेकीसी होगयी।

प्रचरद क्रोधानलसे प्रज्वलित होता हुआ वह विजुवका दमन करनेके लिये आगे बढ़ा । क्रोध मनुष्यको अन्याय बना देता है । रास्तेमें जितने सरदार मिलते गये, एक-एकको उसने कुत्ल करना शुरू किया । रास्तेपरफे सब गाँवोंको उसने उजाड़ना शुरू किया । लड़के-बच्चे, स्त्री-पुरुष और बूढ़े-जवान किसीका भी तनिक बिचार न कर, वह रास्तेके सभी गाँवोंके रहनेवालोंको कुत्ल करता गया । फलसख्य रास्तेके गाँवोंमें एक भी आदमी नहीं रहा । बहुतोंने अपनी जानके भयसे जङ्गल और पहाड़ोंकी शरण ली । सब तो यह है, कि नादिरशाह इस समय बिल्कुल पागल सा हो गया है । उसे अर्थ और अनर्थका तनिक भी ज्ञान नहीं है । उसकी ऐसी हालत देख, समाचरतः उसकी प्रजा भी उससे विगड़ने लगी । पर अभीतक उसके शासनका आतङ्क लोगोंके हृदयमें इतना अधिक जमा हुआ था, कि वे छुड़म-छुड़ा विगड़ उठनेका भी साहस नहीं कर सकते थे ।

इसी समय नादिरशाहको यह सूतरा समाचार दि
 सेनिस्तानमें भी परावतका आरुडा खड़ा हो गया और बलवाई
 लोग उससे मुक़ाबिला करनेके लिये आगे बढ़ रहे हैं । यह
 समाचार पाकर नादिरने अपने मतीजे अलीख़ाँको बलवाइयोंका
 दमन करनेके लिये एक अच्छी सेनाके साथ आगे भेज दिया ।
 अलीख़ाँके साथ उसने अपने एक बयोवृद्ध एवं अनुभवी सरदार
 तदमाशख़ाँको भी भेज दिया । अपने चाचासे विदा ले,
 अलीख़ाँ जब आगे बढ़ा, तब उसके हृदयमें नाना प्रकारके
 भाव उत्पन्न होने लगे । राज्य-होमने उसकी मनुष्यता और

सहृदयतापर अधिकार कर लिया। इतिहासके पाठकोंके लिये ऐसी घटना कोई नयी नहीं। राज्य-लक्ष्मीके लोभने किसके हृदयको कलुषित और विचारको भ्रष्ट नहीं किया? और विशेषकर मुसलमान बादशाहोंके इतिहासोंके तो एन्ने-पन्ने इस प्रकारके पद्यन्वोसे रूढ़े पड़े हैं। पिता द्वारा पुत्रकी हत्या, पुत्रके हाथों पिताका कून और भाईसे भाईकी हत्याके दृश्यों उदाहरण सदा-सर्वदा हमारे दृष्टिगोचर होते रहते हैं। फिर अगर अलीखाँ अपने चाचा नादिरशाहपर हाथ साफ़ कर, प्रशस्त साम्राज्यपर अपना अधिकार स्थापित करना चाहता, तो आश्चर्य ही क्या था?

निदान उसने अपना यह विचार, मार्गमें तहमाशखाँपर प्रकट करही दिया। एक दिन रास्तेमें तहमाशखाँको एकान्तमें बुलाकर बड़े गम्भीर भावसे उसने पूछा,—“सरदार तहमाशखाँ! क्या आपके हृदयमें अपनी उन्नति करनेकी अभिप्राया है?”

सरदार तहमाशखाँ, अलीखाँके इस प्रश्नका भाव ठीक-ठीक समझ न सका। इसलिये उसने अलीखाँसे कहा,—“आपके इस कथनका आशय मैं ठीक-ठीक समझ नहीं सका। आपके कहनेका अभिप्राय क्या है, छयाकर मुझे स्पष्ट शब्दोंमें बतलाइये।”

इसपर अलीखाने उत्तर दिया,—“मेरे कहनेका क्या अभिप्राय है? मैंने तो अपने हृदयका अभिप्राय स्पष्ट शब्दोंमें आपपर प्रकट कर दिया है। इतनेपर भी यदि आप नहीं समझ सके हों, तो ध्यान देकर सुनिये। चाचाने मुझे सेमिस्तानका बलवा दवानेके लिये भेजा है। चलिए, मैं वहाँका बादशाह बनता हूँ और आप वज़ीरे-आज़म बनें। चलिए, आपकी क्या इच्छा है?”

तहमाशखानि इसके उत्तरमें कहा,—“मेरे नामजद शाह-जादा ! आप यह क्या कह रहे हैं ? अपने हाथोंसे अपने पिता तुल्य चाचा नादिरशाहका खून ! तोबा कीजिये ! मेरी तो सम्भ-मेंही यह बात नहीं आती !”

फिर अलीखान बोला,—“तहमाशखान ! यह खून न मेरे हाथोंसे होगा और न आपके हाथोंसे । आपको मालूम है, कि सेमि-स्तानकी सारी प्रजा चागी बन गयी है । ऐसी हालतमें चाचा या तो उनका खून करेंगे या उन्हें फ़ैद करेंगे । फिर वे भी किसी-न-किसी प्रकार अपना घड़ला चुकायेंगे ही ! इस कामके लिये आपको ज़रा भी तकलीफ़ करनेकी ज़रूरत नहीं । अब आप बताइये, कि आपका क्या विचार है ?”

इसपर तहमाशखानका चित्त व्यग्र हो उठा और उसने कहा,—“शाहजादा ! ज़रा आप इस बातपर गौर कर लें, फिर ओ सम्भें, करें । इस बुरे कामका नतीजा क्या होगा, इसपर भी आप ज़रा ज़याल कर लीजिये । मुझे बड़ा आश्चर्य है, कि आपके हृदयमें इस महाकलुषित भावका समावेश कैसे हुआ ?”

इसका उत्तर अलीखानि क्रोध-भरे शब्दोंमें यों दिया,—“मैं अधिक नाद-विवाद करना नहीं चाहता । आप अपना अन्तिम निर्णय स्पष्ट शब्दोंमें बता दीजिये । कहिये,—हाँ या ना ।”

तहमाशखान बोला,—“शाहजादा ! कम-से-कम इस जन्ममें तो मुझसे ऐसा अधम कृत्य नहीं हो सकता । सम्भवतः आपसे भी ऐसा कुकर्म नहीं हो सकेगा ; पर यदि आप इसे करनेके लिये कसर कसही लेंगी, तो लाचार होकर मुझे आपको फ़ैद

करना पड़ेगा और इस समाचारको आपके चाचा नादिरशाहके पास पहुँचाना होगा। इसका फल क्या होगा, यह आपभली भाँति विचार कर सकते हैं। अगर मैं मान लूँ, कि इस काममें आपकीही सफलता होगी, तथापि आप याद रखें, कि इसका परिणाम कदापि सुख-दायक नहीं हो सकता। आप अभी जिस सुखका अनुमान कर रहे हैं, वह तो केवल बाहरी आभासमात्र है। उसके भीतर घोर सङ्घट छिपा हुआ है।

अलीशान,—“मैं अधिक दार्ते सुनना नहीं चाहता। इस सम्बन्धमें आपका अन्तिम उत्तर क्या है, मैं केवल यही जानना चाहता हूँ। ज्यूर्यकी बातोंसे क्या मतलब !”

तहमाशान,—“इस जन्ममें तो कम-से-कम ऐसी दृष्टि मेंरे इन हाथोंसे होही नहीं सकती—किसी हालतमें भी नहीं हो सकती। इतनाही नहीं,—बल्कि तुम्हारे द्वारा भी, जहाँतक मुम्कले हो सकेगा, मैं ऐसा कुकर्म न होने दूँगा।”

अब अलीशान जान गया, कि तहमाशान उसके यहकावेमें नहीं आ सकता। इसलिये उसने सेमिस्तानमें पहुँचकर उसे मरखा डालनेका विचार, मन-ही-मन निश्चित कर लिया। उसने यलवाइयोंसे मिलकर अपना यह विचार कार्ब्य-रूपमें परिष्कृत करना स्मि कर लिया, उसके सब सिपाही भी इस बातको जान गये। कुछ दिनों बाद वह सेमिस्तान पहुँचा। सेमिस्तान तथा उसके आस-पासके प्रदेशोंपर अधिकार कर वह वहाँका स्वतन्त्र राजा बन बैठा। पर इतनेसेही उससे सन्तोष नहीं हुआ। यह सारे ईरानका बादशाह बननेका हीसला

रखता था। पर जबतक नानिरशाह जीवित है, तबतक उसका यह हीसला खाममें भी पूरा नहीं हो सकता। अतएव उसने अब बहुत जल्द नादिरशाहका काम तमाम कर डालनाही ठीक समझा और इसके लिये उसने चार हत्यारे भी ठीक किये। उन्हें मुँह-भंगि रुपये दिये। साथ-साथ उन्हें यह भी विश्वास दिलाया, कि इस प्रयत्नमें सफल होनेपर, पुरस्कार स्वरूप उन्हें पूरी-पूरी जागीर-ज़मींदारी भी दी जायेगी।

इधर तो नादिरशाहके प्रति अपने भतीजे अलीज़ा द्वारा ऐसा विकट षडयन्त्र रचा जा रहा है, उधर नादिरशाह तथा उसके अधीनस्थ देशोंकी क्या हालत है, पाठक ज़रा उसे भी सुन लें। आप पहलेही पढ़ चुके हैं, कि नादिरशाह इन दिनों बहुतही चिन्तित है। उसके राज्यमें यत्र-तत्र बलवा उठ खड़ा होता है। नादिरशाह उन्हें दबानेके लिये, मोघान्ध हो, बड़वानलकासा भल्लूकर रूप धारण करता है। पर ये बातें दिन-दिन और भी बढ़ती ही गयीं। बलवा रुकनेके बदले आगकी चिनगारियोंकी तरह और भी इधर-उधर फैलता गया। इसका प्रधान कारण क्या है? क्या नादिरशाह निर्बल हो गया है अथवा उसकी राज्य-व्यवस्था डीली पड़ गयी है? इन सब बातोंका उत्तर, पाठक नीचेकी पंक्तियोंमें पढ़ें।

हमारी समझमें तो इन सारी अशान्ति और उपद्रवोंका मूल कारण यही है, कि लोभके बशीभूत हो नादिरशाहने अपने राज्यका प्रसार इतना अधिक कर लिया है, कि उसका सम्हालना उसके लिये अब बहुत कठिन हो रहा है। यद्यपि हिन्दुस्तान और

पुनः कति देगोंको जीतकर भी उसने अपने राज्यमें न मिलाया और एक प्रजा, बड़ी बुद्धिमानोंका काम किया, तथापि जो देश उसी एकके एक मौजूद है, उनका विस्तार भी थोड़ा नहीं है। एक ओर काफेगल है, तो दूसरी ओर अरब-समुद्र ! पश्चिममें यूकोटोड नदी है, तो पूर्वमें सिन्धु नदी ! मला ऐसे समयमें जब न रेलगा प्रचल है और न सेना-सञ्चालनके लिये अच्छे-अच्छे मार्ग हैं, तब जीन कह सकता है, कि यह राज्य छोटा है ? इन सब कठिनाइयोंके होते हुए भी यदि कोई ऐसे बड़े राज्यका प्रयत्न ठीकसे करना चाहे, तो एक जबरदस्त सेनाकी जरूरत है। साथ-ही-साथ शासन-सङ्गठनके योग्य बहुत बड़े मस्तिष्क और प्रवीण चार्ज-वर्ता भी होने चाहिये, जिसके लिये एक बड़ी खजाना भी जरूरत है। पर क्या नादिरशाहकी प्रजा इतनी बड़ी रकम देनेमें समर्थ है ? नहीं, कदापि नहीं। दरिद्र देशकी दुःखी प्रजाके पास इतना धन कहाँ ? और न इतना धन नादिरशाह अपने पाससेही लगानेके लिये तैयार है।

उधर सेनाकी हालत भी बहुत बुरी हो चली है। तेरह वर्षोंके अजिराम युद्ध और आक्रमणोंने उसे शिथिल कर दिया है। अब उसके बोद्धागण अपने शरीरको कुछ आराम देना चाहते हैं। पर नादिरशाहको यह बात पसन्द नहीं। इतने विस्तृत राज्यका अधिकारी होनेपर भी उसके हृदयसे लोभ नहीं गया। अब भी उसके हृदयमें नये राज्योंपर अधिकार करनेकी आकांक्षा पहलैकीही तरह बनी हुई है। इसके लिये वह अपने सैनिकोंको कोसता है। पर उन बेचारोंमें अब पहलैकी तरह उत्साह नहीं है। फलतः नादिर

शाहके डरके मारे कोई-न-कोई बहाना बता, सभी सैनिक सेनासे-हटते जाते हैं। इतनाही नहीं, नये लोग भी सेनामें भर्ती होनेके लिये अग्रसर नहीं हो रहे हैं। लाचार वह तातारियों और अफ़ग़ानियोंको सेनामें भर्ती करता है; पर वे भी कुछ दिनोंतक रहकर अपने घर वापस चले जाते हैं। इसका प्रधान कारण यह है, कि उन्हें ठीक समयपर तनख़्वाह नहीं मिलती और न मिलनेकी कोई भाशा ही दिखाई पड़ती है। कारण, जो रुपये नादिर हिन्दुस्थानसे लूटकर लाया था, उसे तो उसने इसलिये जमाकर रखा है, कि जीवनके शेष भागमें बैठकर उन्हीं रुपयोंको सुख और मौजसे उड़ायेंगे। उधर राज्यसे जो आमदनी होती है, उससे अधिक खर्चकी ज़रूरत होती है। ऊपरसे युद्धने राज्यके कोषका एक प्रकारसे दिवाळा निकाल दिया है। ऐसी हालतमें बढ़ते हुए खर्चको चलानेके लिये वह नये-नये करोंका विधान कर रहा है, पर गरीब प्रजा उसे अदा करनेमें असमर्थ हो रही है।

इन सब बातोंका परिणाम यह हुआ, कि नादिरशाहके प्रति प्रजाजनोंका असन्तोष दिन-पर-दिन बढ़ता गया। सेना भी उसका साथ छोड़ती गयी। उसके पुराने सरदार और साथी सभी, उससे अलग होते गये। उधर प्रजावर्ग भी नये-नये करोंको देनेमें असमर्थ हो, नादिरशाहके भयके कारण देश छोड़ बाहर भागने लगा। इस स्थितिका अनुभवकर उसके राज्यमें उपद्रव और विप्लवका भी आरम्भ हो चला। मिस्र-मिस्र प्रदेशोंके सुबेदार और सरदार, राज्यकी इस कमज़ोरीसे फ़ायदा उठा, अपने-अपने स्वतन्त्र राज्य संस्थापित करने लगे।

एतन्तु एतत्तारे परिवर्तनोका प्रभाव नादिरशाहपर कैसा पडा होगा, दिवालीक पाठक स्वयं इसका अनुमानकर सकते हैं। उसने आचार-विचारमें महाम् परिवर्तन हो गया। उसमें न धर पहलेकासा धैर्य रहा, न साहस। जिस यामनो बहुत बलवान्-पूर्वक, बड़े औरके साथ, वह शुरू करता, मानलिन दुर्बलता उसमें इतनी अधिक आगयी, कि थोड़ी देर बाद-हो उसपर वह अनेकानेक फसादाय करने लगता। अपने बड़े सिपाही सरदारोंपरसे भी उसका विश्वास उठ गया। किसी हालमें अब वह उनकी राय तक नहीं लेता। राय लेनेकी बात तो दूर रहे, उनकी स्थिति और पदकी तनिक भी परवाह न कर, बहुत बार ऐसा देखा गया है, कि वह उन्हें भरी समामें बेइज्जत कर बैठता है। इतनाही नहीं, जहाँ पहले वह घुरी तरह पराजित होनेपर भी तनिक नहीं बचता था, वहाँ अब साधारण-सामान्य हारपर अपना साहस, शान्ति और सहनशीलता सब जो बैठता है। अपनी सैन्य-शक्तिका तनिक भी ध्यान न रख, वह उन्हें असाध्य कार्योंको करनेकी आज्ञा दे डालता। पर जब उसके सिपाही और सरदार उसमें विफल हो जाते, तब वह उन्हें बेइज्जत करता तथा उनके प्रति अनेकानेक अपमान-जनक शब्दोंका प्रयोग करता है।

एक समयकी बात है, कि नादिर तातारियोंके साथ युद्ध कर रहा था। शत्रु पक्षवालोंने उसपर ऐसा भयङ्कर धार किया, कि उस बारसे उसकी जान बचनेकी आशा न थी। उसका एक सिपाही, जो उसकी बालमें खड़ा था, यह हाल देख रहा

था। राज-भक्तिके भावके वशीभूत हो, वह तुरन्त नादिरशाहके सामने बड़ आया और उस चारको अपनी छातीपर लेकर, मालिकका नमक अदा कर दिया ! पर वह भी नादिरशाहसे नहीं देखा गया। वह भट्ट बोल उठा,—“बैबकुक ! क्या तुने मुझे मामर्द समझ रखा है !” इन शब्दोंके सुनतेही उस बेचारे आहत, स्वामि-भक्त सेवकने अपना प्राण त्याग कर दिया। अपने प्राण-रक्षक मृत्युके साथ नादिरशाहका पैसा बर्ताब, उसका पागलपन नहीं तो और क्या कहा जा सकता है ?

इस मानसिक परिवर्तनका नादिरशाहके शरीरपर भी पूरा असर पड़ा। रात-दिन उसका बेहण चिन्ता, शोक तथा ग्लानिसे ढका हुआ देखा पड़ता था। जब कोई मनुष्य कभी उसके सामनेसे होकर गुज़रता था, तो मारे क्रोधके वह व्यग्र हो उठता था। जो नादिरशाह अपनी पुत्रावस्था तथा इसके बाद भी शायदही कभी बीमार पड़ा हो, वही इन सब कारणोंसे सदा रोग-ग्रस्त रहने लगा। जिस समय उसने भारतवर्षपर आक्रमण किया था, उसी समय उसे उदर-रोग होगया था, पर दिल्लीके एक शाही इक्रीमके इलाजसे उसका वह रोग उस समय दूर हो गया था। इस समय फिर उसी रोगने उसे आ बुधाय। अब उसके मुँहपर वह तेज नहीं, शरीरमें वह स्फूर्ति नहीं और न उसका चित्तही अब कभी प्रसन्न रहता है। उसकी कमज़ोरी भी बढ़ती जाती है। इससे उसके स्वभावमें कुछ चिढ़चिढ़ाहट भी आ गयी है। जो सरदार उसके परम हितैषी थे और जिन्हें वह जी-जानसे मानता था, वे भी अब

उसके स्वभावमें यह परिवर्तन देख, अत्यन्त दुःखित और चिन्तित रहा करने ही ।

नादिरशाहमें अविश्वासकी भावा भी अब वेहद बढ़ गयी है । दिन नौकर और सरदारोंपर वह अपने हृदयसे अधिक दिग्दान करना था तथा जो नौकर उसे प्राप्तसे भी अधिक प्यार सामान्ये से, उन्हीं सरदारों और नौकरोंको अब वह सन्दिग्धी दृष्टिले देखता है । फलतः वे सरदार और नौकर भी अब उससे डरते हैं । वे सदा उससे लावधान और सतर्क रहने लगे हैं । वे नादिरसे सामने जाने और दरवारमें बैठनेमें भय खाते हैं । एक-दो बार तो ऐसा भी देखा गया, कि दरवारमें बैठे हुए जिस सरदारकी ओर उसने अपनी तीव्र दृष्टि डाली, वह बेचारा अपनी नीम निफट डाल, दरवारकोही फेबल छोड़कर मही हट जाता था,—वरन् नादिरके राज्यसेही सदाके लिये अपना गाथा तोड़ लेता था । कहनेका अविश्राय यह, कि नादिरशाह इस समय बाबला हो गया है ! उसके हृदयमें अब एक भी खड्गिचार स्थान नहीं पाता !

उपर्युक्त बातोंसे प्रबल पाठकगण यह न समझ लें, कि इन मानसिक तथा शारीरिक परिवर्तनोंके साथ साथ उसकी आन्तरिक महद्दशाकांक्षामें भी कितनी प्रकारका परिवर्तन हो आया है, वरन् उसकी यह इच्छा ज्यों-की-त्यों बनी हुई है । विश्व-विजेता बननेका हीसला उसके हृदयसे अब भी दूर नहीं हुआ है । वह तुर्कोंको दूसरी बार परास्त करनेके प्रयत्नमें लगा हुआ है । इसके अतिरिक्त औरोंपर भी वह बड़े जोरोंसे आक्रमण कर आगे बढ़नेका

बिचार कर रहा है। इसी समय उसने सुना, कि राज्यमें चारों तरफ़ उपद्रव मच रहा है। उसका एक परम विश्वास-पात्र सरदार तकीर्जी उसके बिरुद्ध उठ खड़ा हुआ है। इतनाही नहीं, बल्कि वह एक भारी सेनाको अपने साथ ले, नादिरशाहके राज्यपर अधिकार जमानेके लिये आगे बढ़ रहा है। सेगिस्तानके लोग भी बलबार्द बन, नाना प्रकारके उपद्रव मचा रहे हैं। इस्फ़हानमें भी सर उड़ाया है। संक्षेपमें, नादिरशाहके अर्न्तगत जितने प्रदेश थे तथा उसकी नौकरीमें जितने सरदार थे, सब एक-एक करके उससे अलग हो गये।

ऐसे समयमें नादिरशाहके हृदयमें कैसे भावोंका संचार हुआ होगा, यह उसके स्वभावमें होनेवाले परिवर्त्तनोंको ध्यानमें रख, पाठक सहजमेंही अनुमान कर सकते हैं। चारों तरफ़से अशान्तिका समाचार पाकर नादिरकी मुखाकृति बिल्कुलही बदल गयी। साधारण रीतिसे गम्भीर तथा विचारशील नादिरकी मुख-मुद्रा अब बड़ी भयावह प्रतीत होने लगी! प्रलय-कालके सूर्यके सामने, क्षुब्ध महासागरके सामने अथवा विकट बड़वानलके सामने, सम्भव है, मनुष्य क्षण-भरके लिये स्थिर रह जाये; पर इस समय पृथ्वीतलपर एक भी ऐसा प्राणी नहीं, जो क्रोधान्ध नादिरके सामने एक पल भी ठहर सके! दुर्वासाका क्रोध अथवा परशुरामकी उग्रता संसारमें विख्यात है; पर नादिरकी उग्रता और क्रोधके सामने इस समय वे भी मात हैं। इस समय नादिरकी क्रोधाग्निके सामने बड़वानल और प्रलयकालका भयंकर दृश्य भी तुच्छ हो रहा है। परशुराम अथवा दुर्वासाका क्रोध

नादिर शाह



नादिरका काल और नर-मुर्खोंका मोतार ।

Deewan Press, Calcutta.

[४४—१६३]

तो उम्हेंकि लिखे था, जो सदाचार तथा धर्मके पथसे भ्रष्ट थे; पर नादिरने झोझने सामने तो दुराचारी और सदाचारी, दुर्जन और नृज्जन तथा अपराधी और निरपराध सभी समान हैं। क्रोधके जशीभूत होनेसे नादिरके हृदयसे सब प्रकारके सुविचार इस समय दूर हो गये हैं। जो कोई भी उसके सामने पड़ जाता, नादिर फ़ौरन उनका सिर, धड़से अलग कर, पृथ्वीपर गिरा देता है। जिस शहरमें बलया होनेकी खबर उसके पास पहुँचती, वह आग-दहका हो, उस्ती शहरमें जा पहुँचता तथा बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष तथा दोपी-निर्दोषका शक्ति भी विचार न कर, सारा शहर-का-शहर जलजल खाक कर डालता। उसकी इस हरकतसे बहुतेरी इगहोंकी प्रजा व्यथित बल और भयभीत होकर, अपनी जान ले और नादिरका राज्य छोड़कर भाग गयी। शहर-का-शहर बजाड़ हो गया। बस्ती-को-बस्ती धीरान बन गयी। न मालूम नादिरके हाथोंसे कितने सहस्र मनुष्योंका प्राण-नाश हुआ। लोगोंके हृदयमें भय उत्पन्न करनेके लिये नादिरने अपने राज्यके एक स्थानपर नर सुएडोंका मीनार बनवा दिया। तफ़्तीर्खा और अन्यान्य खरदारोंकी उसने ऐसी दुर्गति की, उनके वंशकी इस कूरताके साथ उसने विध्वंस किया, कि जिसकी बात सुनकर आज भी हृदय काँप उठता है!—ऐंगेड षड़े हो जाते हैं!

क्रोध पापका मूल है और पापसे मनुष्यका क्षय होता है। अब नादिरशाहके पापका घड़ा खर गया। अलक्ष्य प्रजाजनोके हाहाकारका नादिरपर अब असर पड़ने लगा। नादिरशाह ताड़ गया, कि उसका काल उसके सिरपर नाच रहा है! पल-पलपर

उसे अब अपने प्राणोंका भय होने लगा ! हा, कालका भी पता कितना भारी, ज़बर्दस्त और कितना मज़बूत होता है ! बड़े-बड़े योद्धा, साहसी, धीर और वीर भी इसके आगमनका आभास पाकर घबरा जाते हैं । उनका खून सूख जाता है । मृत्यु-कालमें अपनी सारी अहम्मन्यता और घमण्डको भूलकर वे संसारको निस्सार रूपमें देखने लगते हैं ! रण-धीर नादिरकी भी इस समय ऐसीही अवस्था हो रही है !

अस्तु; सन १७४७ ई० के जून महोनेकी बात है । नादिरशाह बलवाइयोंको शांत करनेके लिये मशहदसे खानः हुआ । फ़तहाबाद पहुँचते-पहुँचते सन्ध्या हो चली । सारी पल्टन नादिरशाहके साथ थी । उसका भतीजा अब्दीकुली तथा उसका लड़का अब्दी अकबर भी उसके साथ था । नादिरशाहका विचार था, कि पल्टनको अब्दीकुली और अब्दी अकबरके हवाले कर अपने कुछ आदमियोंके साथ आगेकी ओर बढ़ें; पर मार्ग-जनित अनेकानेक कष्टोंके झेलेने तथा महीनों लगातार युद्ध करते रहनेके कारण सब सिपाही थके हुए थे । सरदार और सिपहसालार सब भी थोड़ा आराम करना चाहते थे । यह बात नादिरशाहको मालूम हो गयी । उसने इसे स्वीकार कर लिया । इसलिये कुछ दिनोंतक फ़तहाबादमें रहकर, पूरा विभ्राम कर लेनेके बाद आगे बढ़नेका विचार खिर हुआ । फलतः सारी पल्टन वहींपर ठहर गयी । कोई काम-काज न होनेके कारण वे सब इधर-उधर घूम-घामकर अपना मन चहलाने लगी ।

इधर नादिरशाहके मस्तिष्कमें विचित्र-परिवर्तन हो आया ।

उसने अपने जीवनकालमें न मालूम कितने सूर्यास्त देखे होंगे ; पर आजका सूर्यास्त उसके लिये बड़ाही विचित्र और विलम्ब था । आजके सूर्यको जस्त होते देखकर वह सृष्टिके सारे पदार्थोंकी अनित्यता और निस्सारताका अनुभव करने लगा । सूर्यके उदय और अस्तसे उसे मनुष्यके भावोंके उदय और अस्त—उत्थान और पतनका बोध होने लगा ! उसके जीवनमें यह पहलाही अवसर है, जब उसका विचार संसारके भौतिक विषयसे विचलित हो, अध्यात्म-तत्त्वकी ओर भ्रमसर हुआ है ! यह अब समझने लगा है, कि प्रकल, प्रतापी, प्रखण्ड सेनाधारी, मार्तण्डका पतन अवश्यम्भावी है, तो इस तुच्छ मानव शरीरकी बातही क्या है ? इस विचारमें मग्न हो, सहसा वह एक बार काँप उठा ! उसके सारे शरीरमें कंपकंपी समा गयी ! वह बड़ाही भयभीत हो गया ! उसके होठ सूखने लगे । जीभ तालुमें सटने लगी । शरीर विलकल शिथिल हो गया । वह भीतर-ही-भीतर धैर्य धारण करनेका हाथ प्रयत्न और सादस करता है, पर उसकी सारी चेष्टाएँ बेकार होती हैं । तुसाह्व और सपहार भी उसके पास मौजूद हैं । शखाखसे सुसज्जित सिपाही सब भी उसकी निगरानी और रक्षाके लिये उसके तम्बू-के चारो तरफ़ चौकसी कर रहे हैं । पर ती भी नादिरका मय दूर नहीं होता—उसके शरीरका कम्पन दूर नहीं होता ।

नादिरशाहकी यह हालत देख, सभी लोग आश्चर्य-चकित हो गये ; पर जिसकी हिम्मत, जो उसके सामने खूँतक भी करे । अभीतक उसके रोष और बातझुका असर उनके दिलपर

इतना अधिक पढ़ा हुआ है, कि वे उसके स्वास्थ्यका हाल पूछनेका भी साहस नहीं करते। शेरफे दाँतोंको भी उखाड़ लेनेका साहस करनेवाले नादिरशाहकी यह दशा निस्सन्देह दयनीय है—यह किसी प्रलयकारी परिवर्तनका परिचायक है! निदान बादशाहोंके बादशाह नादिरशाहकी यह हालत देख, उसके पास बैठे हुए कर्मचारी इस बातका अनुमान करने लगे, कि सम्भवतः अब इनकी सृत्यु बहुतही निकट है। सम्भव है, मुसाहबोंका यह अनुमान ठीक हो, पर नादिरशाहसे यह बात पूछे कौन ?

धीरे-धीरे रात भी अधिक हो चली। राज्यके सभी कर्मचारी और सिपाही सब सोने चले गये। बज़ीर और सिपहसालार सभी अपने-अपने ज़ीमेमें आराम कर रहे हैं। अबतक भी नादिरशाहका भय, आतंक और कम्पन दूर नहीं हुआ। इसलिये उसने अपने एक नौकरको सिपहसालारके पास तथा दूसरेको बज़ीरके पास भेजकर उन्हें बुलवा भेजा। यद्यपि उक्त समय वे विश्राम कर रहे थे, गहरी नींदमें धराटे ले रहे थे, तथापि नादिरशाहकी आज्ञाको टालनेका उन्हें साहस न हुआ। विशेषकर जब, कि नौकरोंने उनके रोगकी वृद्धिकी बात कही, तब भला वे कैसे नहीं जाते? भट-पट अपने लिबास-पोशाक पहनकर वे फ़ौरन नादिरशाहके पास आये। उसे देखकरही वे समझ गये, कि इसके मस्तिष्कमें किसी प्रकारका भय प्रवेश कर गया है, जिससे यह इतना व्यग्र हो रहा है। बादशाहको अपना-अपना यथोचित आदर-सम्मान प्रदान करनेके बाद बज़ीर आजसने पूछा,—“जिनके नाममात्रके अवणसे बड़े-बड़े वीरोंका कलेजा

काँच उठता है, क्या कारण है, कि वेदो शाहों-के-शाह नादिरशाह आज कार्य-रत्ना अस्वस्थ हो रहे हैं ?”

उन्हे उत्तरमें नादिरशाहने बड़े मधुर शब्दोंमें यों कहा,—
 “मेरे बकादार और कुतुर्ग वजीर ! आपलोग आकर दूरपर क्यों बैठ गये ? आइये, छुपाकर मेरे पास आकर बैठिये । आप लोग मेरे इन शम्भनपर विराजमान होइये ।”

नादिरशाहके मुल्लसे आज फटले-पटल पेसे मधुर शब्दोंको सुन, बजाँर और लिपटसाळार अपने-अपने स्थानसे उठकर नादिरशाहके-पान्न आकर विछानचनपर बैठ गये । फिर नादिरशाहने उनसे कहन शुरु किया,—“आज सूर्यास्तके समयसे मैं हृद्से जिन्दाद, अन्तर्द्वय हूँ ; इतना भय, और आतंक मेरे जीवनमें आज फटले-पटल माहूम हुआ है । आज सूर्यास्त होनेके बादसे मेरे हृद्दमें ऐसी-ऐसी भावनाएँ उत्पन्न हुई हैं, जैसी मेरे जीवनमें कभी नहीं हुई थीं । उस समय मानों मुझसे कोई यह कह रहा था, कि—‘नादिर ! इस नाशवान्, धनित्य संसारमें कोई भी मनुष्य अमर-अमर होकर नहीं आया है । मनुष्यके शुभाशुभ कर्मोंके अनुसारही उसका यश और अवयश इस पृथ्वी-तलपर रह जाता है । मनुष्यको चाहिये, कि वह अपने इस अल्प और क्षण-भङ्गुर जीवनमें सदा सत्कार्य्य करे ; अन्यथा केवल उसकी अपनीचिंही यहाँ रह जाती है । इस तुच्छ जीवनकी अवधि पूरी होनेपर क्या सज्जन और क्या दुर्जन सभी इस संसारसे कुच कर जाते हैं । काल किसीको भी नहीं छोड़ता । काल-चक्रके फ़ौलादी धंजेसे कोई भी शरीर-

धारी प्राणी अपनी रक्षा नहीं कर सकता। उदयके पश्चात् अस्त तथा अस्तके पश्चात् उदय होताही रहता है। उन्नतिके बाद अवनति तथा अवनतिके बाद उन्नति होती है। दिनके बाद रात और रातके बाद दिन होती ही है। इसी प्रकार जीवनके बाद मरण और मरणके बाद जीवन होता है। यह तो सृष्टिका नियम है। इस नियमसे बाहर कोई भी मनुष्य नहीं हो सकता। सभी इस नियमके अधीन हैं। नादिर ! तुम्हारी आयु आज पूरी हो चुकी ! आज तुम्हारी जीवन-यात्रा समाप्त हो चुकी ! आज सूर्यास्तके साथ-साथ तुम्हारा भी मरण निश्चित है, इसे तुम बिल्कुल ठीक जानो ! मृत्युके इस आक्रमणको रोकनेमें तुम्हारी कोई भी सेना समर्थ नहीं हो सकती। इसलिये अब अपने जीवनके अन्ततक यदि तुम्हें परमात्माका नाम लेना हो, तो ले लो। मेरी दामा बज़ीर ! इसका क्या रहस्य है ? मेरी समझमें तो यह बात तनिक भी नहीं आती। धरन मेरा चित्त चञ्चल, व्यग्र और भयातुर हो उठा है। इसका कारण क्या है, यह भी मेरी समझमें नहीं आता !”

शाहन्शाहकी ये बातें सुनकर बज़ीर आजमने कहा,—“शाह-नशाह इरानके मुजसे ऐसे कायरतापूर्ण शब्दोंको सुनकर मुझे बड़ाही आश्चर्य हो रहा है ! विश्व-विजेता बननेकी महदा-कांक्षा रखनेवाले बादशाह ! बाप मृत्युके भयसे इतने भीत हो जायें, यह बात तो मैंने आजही सुनी है। मेरा तो यही अनुमान है, कि यह केवल आपकी अस्वस्थ प्रकृतिका परिणाम है। अनानस भयकी कल्पनासे भयभीत हो जाना कायरोंका

लक्षण है। वीरवर नादिरशाहके लिये ऐसा अभीर्त्तिक भाव कदापि शोभा नहीं दे सकता। जहाँपनाह ! मेरी गुस्ताफी माफ करें। बहादुर लोग मीतको सामने नाथी देखकर भी काम-से-काम एक बार तो अवश्यही डट जाते हैं। आप इया चिन्ताकर अपने मस्तिष्कपर बोझ न डालें। अपने भावोंमें किसी प्रकारका भी चिन्कार अवया विकलता उत्पन्न न होने दें। जिन बातोंके रहस्यके विषयमें आपने पूछा है, उनमें कोई भी विशेषता नहीं है। यदि आपके चित्तमें शान्ति नहीं है, तो दो बार नर्त्तक-नर्त्तकियोंको बुलाकर आप उनका नाच-रङ्ग देखें-सुनें। क्यों सिपहसालारजी ! आपका क्या विचार है ?”

सेनापतिने विनम्रतापूर्वक इसका उत्तर दिया,—“बज़ीर साहब जो कुछ फ़रमाते हैं, वह बहुत ठीक है। मेरा तो विचार है, कि बहुत दिनोंके युद्धके अनवरत परिश्रमसे बादशाह सलामतकी तबीयत खराब हो गयी है। इसी कारणसे मनमें ऐसे-ऐसे स्वर्धके चिन्तारोंका समागम हो आया है। मधुर गानोंके श्रवणसे तथा सुन्दर नृत्योंके अवलोकनसे, बहुत सम्भव है, बादशाहकी ये सारी चिन्ताएँ दूर हो जायें।”

बज़ीर और सिपहसालारकी इन बातोंसे नादिरशाह बहुत खुश हुआ। उसने उल्लास-भरे शब्दोंमें कहा,—“सायास ! मेरे प्यारे दोस्तो ! निस्सन्देह ये शब्द नादिरशाहकेही बज़ीर और सिपहसालारके मुखसे शोभा पाते हैं ! इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि आपके वाक्य बहुतही व्योञ्जपूर्ण और उत्साह-वर्द्धक हैं। पर यदि आप मेरे दिलकी यात पूछें, तो मैं यही कहूँगा, कि

न जाने क्यों मेरे मनमें एक विचित्र चिन्ताका समावेश हो आया है। लाख कारण ढूँढ़नेपर भी मैं इसका पता नहीं पा सका हूँ। मेरी असस्य प्रकृतिमें कुछ भी परिवर्तन होता नहीं देख पड़ता। आपकी बातोंसे प्रसन्न होनेपर भी मैं अपने हृदयमें सच्ची प्रसन्नताका अनुभव नहीं कर पाता। अस्तु ; यदि आपलोगोंकी मर्जी हो, तो गायक और गायिकाएँ बुलवायी जायें। महफ़िल सज जाये।”

सब इन्तजाम ठीक हो गया। महफ़िलकी तैयारी होने लगी। राज्यके उच्चपदस्थ कमेचारी नादिरशाहकी आज्ञा सुन, दीड़-दीड़कर उस महफ़िलमें आने लगे। पश्चात् नादिरशाह भी आकर एक बहुत फ़ीमली मज़मली गद्देपर बैठ गया। गाना शुरू हुआ। तवायफ़ोंके नाच और गाने होने लगे। उत्साहमें आकर तवायफ़ोंने भी अपनी कला-कुशलताका इतना अच्छा परिचय दिया, कि बादशाह मारे खुशीके मस्त होगया। जो गाने उसे अच्छे लगते, उन्हें गानेके लिये वह बार-बार फ़रमाइश करने लगा। इसी तरह बहुत रात बीत गयी। बादशाहको नींदने आघेरा। अब उसे सोनेकी क़्याहिश हुई। सरदार लोग भी उसके इस मनोभावको ताड़ गये। मिदान बादशाहके हुक्मसे महफ़िल धरझास्त की गयी। बादशाह अपने तम्बूमें, अपनी खास बेगम सिताराके साथ सोने चला गया। सरदार चंगीरद भी अपने-अपने छेरोंमें आराम करने चले गये।



सिताबा देवना ।

देहहवाँ परिच्छेद

नादिरशाहकी मृत्यु ।

पाठक्य पूर्व परिच्छेदमें यह पढ़ चुके हैं, कि नाच-गानके बाद नादिरशाह अपनी पैगम सिताराके साथ सोनेके लिये इरीमें चला गया ।

पाठकके ध्याये सिताराका नाम गत परिच्छेदमेंही पहले-पहल आया है, इसलिये उसका परिचय जाननेके लिये पाठक स्वभावतः उत्सुक होंगे । पाठक कित्ती पूर्व परिच्छेदमें नादिरशाहके भारत-आक्रमणकी बात पढ़ चुके हैं । उस परिच्छेदमें यह चर्चा भी हो चुकी है, कि नादिरशाहके दिल्लीपर विजय प्राप्त करनेके बाद, दिल्लीके तत्कालीन बादशाह महम्मदशाहने अनेकानेक चीजें इस नवीन चिल्लेताकी भेंट की थीं, उन्हीं मेंसे सितारा भी एक थी ।

सितारा एक राठोर-राजपूतकी कन्या थी । उसका असल नाम अहल्याबाई था । वह परमा सुन्दरी थी । जिस प्रकार उसे अपने रूपका अभिमान था, उसी प्रकार उसे अपने कुछ धीरे धर्मका भी गौरव था । उसकी अत्युत्तम सुन्दरताका समाचार किसी प्रकार महम्मदशाहके कारबोतक पहुँच गया । व्यसन-पिलासो महम्मद इस समाचारको सुनकर उसे प्राप्त करनेके लिये व्यग्र हो उठा । पहले तो उसने अनेक उपायोंसे उसके सम्यन्ध-

योंको अपने काबुमें कर वालिका अहल्याको अपने महलमें लाना चाहा । पर उसके ये सब छल-प्रयत्न और प्रयास विफल हुए । निदान उसने उस वालिकाके सम्बन्धियोंको मरवाकर बल-पूर्वक अहल्याका अपहरण करनेका निश्चय किया । इसी निश्चयके अनुसार उसने अपनी सेनाको उसके सारे सम्बन्धियोंको पकड़ लानेके लिये भेजा । उन राजपूत वीरोंने पहले मुगलिया सेनाका अच्छी तरहसे मुकाबिला किया ; पर कहीं इधर असांख्य मुगल-सेना और कहीं उधर मुहोभर राजपूत वीर ! निदान राजपूत-पक्षके सभी वीरोंने वालिकाके धर्मकी रक्षाके लिये अपने प्राण नर्वां दिये ! मुगलोंने ज़बर्दस्तीसे घर्में घुसकर अहल्याका हाथ पकड़ लिया । वह बलात् महम्मदशाहके पास दिल्लीमें लायी गयी । व्यवहारी महम्मद उसके अनुपम रूपपर मुग्ध हो गया । उसे इतनी प्रसन्नता हुई, कि जितनी इन्द्रलोकका राज्य प्राप्त करनेसे भी किसीको नहीं हो सकती । पहले तो उस राजपूत-काम्याने महम्मदकी दुर्दृष्टिका घोर विरोध किया । वह अपना जान देने और महम्मदकी जान लेनेपर भी उताह्र होगयो । पर बेचारी करही क्या सकती थी ?—लाचार थी ! अपनी जानभी न दे सकी ; चीवीसो घण्टे शाहके रक्षक उसके पास मौजूद रहते थे । अहल्याका वह धर्मा-हठ देखकर महम्मदशाह भी कुछ दिनोंतक बड़ी सावधानीसे उसके पास जाता था । अलगसे बातें करता, अपनी वासना परित्यक्त करनेके लिये तरह-तरहके प्रलोभन दिया करता और ज्योंही वह विगड़ उठती, त्योंही महम्मद शाह निराश्रय भावसे उसकी आँसूके आगेसे दूर

हुट जाता । कुछ दिनोंतक बार-बार निराश होने और चिड़-
कियाँ खानेपर भी महम्मदने अपना मनसूया नहीं छोड़ा । ठीक
है, कामियोंकी सर्वत्र यही हालत होती है !

संगतिका प्रभाव भी संसारमें कितना प्रबल होता है !
तिन्दुआ वंश भी गीदड़ोंकी संगतिमें रहकर और पलकर अपना
वंश-कीरत और पराक्रम भूलकर गीदड़सा बन जाता है । पाठक !
इसमें इरामें सन्देश न करें । जब महम्मदशाहने देखा, कि
अपने किये कुछ बन न पड़ा, तो कई धूर्त धायोंको उसने
बालिका अहल्याके वहकानेका काम सूपुर्व किया । पहले
कुछ दिनोंतक तो वह अपने आग्रहपर डटी रही । पर 'कीट—
भृङ्ग-भ्याय'के अनुसार, शनैः शनैः उसके स्वभावमें परिवर्तन होने
लगा । वह अपने आग्रहसे विचलित होने लगी । व्यभिचारी
मर्दों और वेश्या-वृत्तिकरनेवाली मुसलमान धायोंकी सङ्गतिमें
निरन्तर बीबीसो घण्टे रहकर भी वह जितने दिनोंतक अड़ी रही,
वही उसके लिये वही भारी पात थी । अन्तमें अपने धर्म, जाति
और सम्बन्धवाले लोगोंसे किसी प्रकारकी बाहरी सहायता
प्राप्त होते न देख, वह महम्मदशाहके प्रेमका शिकार बन गयी ।
महम्मदशाहकी और-और पटरानियोंकी तरह वह भी महलोंमें
रहने लगी ।

जब नादिरशाहने दिल्लीपर विजय प्राप्त की, तब महम्मदशाहने
नादिरशाहको प्रसन्न करनेके लिये, अन्यान्य वेगमोंके साथ
सिताराको भी उसकी भेंट की । सिताराकी सूरत देख, नादिर-
शाह उसपर लड्डू होगया । सर ऊँ रेखने अपने 'नादिर शाह'

नामक ग्रन्थमें लिखा है, कि पहले तो सितारा नादिरशाहको अपने पासतक फटकने नहीं देती थी; पर अन्तमें परचश और असमर्ह हो, उसे नादिरशाहका साथ स्वीकार करनाही पड़ा। कुछ काल बाद दोनोंमें बड़ा प्रेम हो गया। तबसे नादिरशाह राजिका समय सदा सिताराकेही साथ बिताया करता था। इसी लिये नादिरशाहकी अन्यान्य बेगमें सितारासे डाह भी करने लग गयी थीं। जब कभी नादिर बाहर जाता, तब सिताराको भी अपने साथ लिये जाता। उसी सिताराके साथ आज फतहाबादमें नादिरशाह अपने खोमोंमें सोने जाता है।

ज्योंही नादिरशाह सिताराके पास पहुँचा, त्योंही सितारा उसका मुस देखकर आश्चर्य-चकित होगयी। उसने पूछा,—“प्राणनाथ ! आज आपकी हालत ऐसी क्यों है ? आप इतने उदास क्यों देख पड़ते हैं ?” नादिरशाहने पहले तो उसकी बातको टाल देना चाहा। पर उसके बहुत आग्रह करनेपर नादिरशाहने कहा,—“प्रिये ! न मालूम क्यों, आज सन्ध्या समयसे मेरा चित्त बहुतही उदास है। हृदय भय और व्यग्रतासे भर गया है। रह-रहकर मेरी तबीयत बरग वढती है। हृदयमें बहुत टाढ़स लगना चाहता हूँ; पर दिल जैसाका तैसा बना रहता है। मालूम होता है, मेरी मृत्यु बहुतही निकट है।”

नादिरशाहके इन कातरता-भरे शब्दोंको सुनकर सितारा अबरा उठी। उसने कहा,—“प्राणनाथ ! आप यह क्या बक रहे हैं ? मौत आपके दुरमनको आये। आपपर उसका आक्रमण क्यों होने लगा ? चिन्ता और भय केवल मानसिक विकार

मात्र है। आप प्रसन्न मनसे यहाँ करें। आपकी तवीयत अभी ठीक हो जायेगी, नींद आजानेसे फिर प्रातःकाल किसी प्रकारका रोना अथवा रुष्ट आपके पास फटकने नहीं पायेगा।

सिताराके सान्त्वना देनेपर नादिरशाह उसकी गोदमें अपना सिर रखकर सो गया। सितारा उसके सिरपर अपना हाथ फेरने लगी। नादिरशाहको सोये अभी थोड़ीही देर हुई थी, कि वह एक-ब-एक छपराकर उठ बैठा। पहले तो हँसने लगा : फिर उसका मुख महा भयङ्कर देख पड़ने लगा! सितारा यह हाल देखकर बहुत डर गयी। उसने नादिरशाहसे प्रेम भरे शब्दोंमें छपराकर उठनेका कारण पूछा। नादिरशाहने कहा,—
 “प्रिये ! तुम मेरे लिये बेकार चिन्ता कर रही हो। मैं बार-बार तुमसे कह रहा हूँ, कि मेरी मृत्यु सन्निकट है। संसारमें मैं अब मिनटोंका मेहमान हूँ। अपने किये अन्तर्थाका—अन्याथोंका मैं आज फल भोग कर रहा हूँ। अभी मैंने जो स्वप्न देखा है, उससे भी तो मालूम होना है, कि आज रातको इस संसारसे मेरी विदाई होगी।”

सिताराने विनीत भावसे पूछा,—“नाथ ! आपने ऐसा क्या स्वप्न देखा है, जो इतना डर गये है !”

नादिरशाहने कहा,—“मैंने देखा है, कि मेरे राज्यकी सभी प्रजा विगड़ उठी है। सबने मेरे विरुद्ध बलवा कर दिया है। सबका कहना है, कि मैं महा अत्याचारी और अन्यायी शासक हूँ। मेरी शासन-नीति, मेरे एक भी प्रजाजनको पसन्द नहीं है। मेरे सभी सरदार, सुबेदार, बेटे तथा भतीजे भी मुझसे विगड़

उठे हैं। अलीकुली, जिसे मैंने हालमेंही सिपहसालार बनाया है, वह मुझे मरवा डालना चाहता है। उसकी इ्वाहिश है, कि मेरी मृत्युके बाद वही यहाँके राज-सिंहासनपर बैठे। वे सब मिलकर आज रातकोही मेरा काम तमामकर दिया चाहते हैं।”

वह ऐसी बातें करने लगा, जिनसे यही मालूम होता है, कि नादिरशाहकी हालत इस समय शेक्सपियरके ‘मैकबेथ’की सी हो रही थी। उसके चारों ओर विभीषिकामय दृश्य दिखाई दे रहे थे।

सिताराने कहा,—“नाथ ! यह सब आप क्या कह रहे हैं ? स्वप्न भी कभी सच्चा होता है ? एक अलीकुली क्या, यदि हजार अलीकुली आवें, तो भी वे आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। दुनियाँमें किसीको भी हिम्मत नहीं, कि आपकी मर्जोंके खिलाफ खूँ तक करे। कृपाकर आप तनिक भी न श्वरायें। आप निश्चिन्त होकर आरामसे मेरी गोदमें लो जाइये। डर किस बातका है ? फौजी सिपाही तो चारों तरफ़ पहरा दे ही रहे हैं।”

सिताराने इन शब्दोंका उत्तर नादिरशाहने इस प्रकार दिया,—“प्रिये ! तुम नहीं जानती हो। मेरा स्वप्न झूठा नहीं, बिल्कुल सत्य है। अलीकुली कई दिनोंसे मुझसे अलगाही रहता है। वह तो आज महफ़िलमें भी नहीं आया था। कई सरदार, जिन्हें मैं जानसे भी अधिक मानता था, मुझसे बहुत असन्युष्ट हैं और वे अलीकुलीका साथ दे रहे हैं। सारी सेनापर उन लोगोंने अपना प्रभाव जमा रखा है। कितनेही अफ़ग़ानी मुझे मार डालनेके लिये भर्ती किये गये हैं। मेरी हत्या करनेके बाद उन्हें इनाममें काफ़ी रक़म दी जायेगी।”

इसपर सिताराने कहा—“प्राणेश्वर ! यह सब प्रलाप-विलाप बेकार है । आप विश्वास रखिये, आपका कुछ भी नहीं होगा । इस समय आप धैर्य धारण करें, फिर प्रातःकाल इन सब बातोंका समुचित प्रबन्ध किया जायेगा । बहुत रात बीत गयी है । इस समय इन बातोंको छेड़नेसे शोर-गुल अधिक बढ़ जायेगा । चारों तरफ़ कोलाहल मच जायेगा । अतः आप सुष-पूर्वक निश्चिन्त हो विश्राम करें ।” इस प्रकार समझा-बुझाकर सिताराने अपनी स्त्री-सुलभ भाव-भङ्गियोंके सहारे शाहको कुछ सन्तुष्ट किया । शाह फिर उसकी गोदमें सो गया । सितारा थोड़ी देर तक जागी रही । शाहके सुषपूर्वक सो जानेपर उसके चिन्तमें भी कुछ शान्ति हुई । वह भी सो गयी ।

पाठक ! अब ज़रा बलीकुलीकी करामात सुनिये । उधर नादिरशाह तो आज सन्ध्या समयसेही बेचैन था । इधर बली-कुली उसकी हत्या करनेके प्रबन्धमें लगा हुआ था । उन लोगोंने चन्द अफ़ग़ानियोंको इस कामके लिये पहलेसे मुज़रर कर रखा था, कि आज रातको जब नादिरशाह अपने तम्बूमें सोनेके लिये जाये, तभीसे ये अफ़ग़ानी उसकी घातमें लग जायें । जब इस बातका पूरा पता मिल जाये, कि नादिरशाह नींदमें सोया हुआ है, तब वे उसके तम्बूमें घुस जायें और उसकी हत्या कर डालें । यदि वे इस काममें सफल-मनोरथ हुए, तो उन्हें पर्याप्त पुरस्कार प्रदान किया जायेगा । मीलाबख़्श तथा भशरफ़ज़ाँ, जो नादिर-शाहके दो परम प्रिय अनुचर थे तथा जो अब छिपे-छिपे नादिरके जानी दुश्मन बन बैठे हैं, इस बातका पता लगानेपर मुज़रर हुए ।

अस्तु; जब नादिरशाह सोनेके लिये महफ़िलसे उठकर चला गया, तब इतौने अलीकुलीसाँको इस बातकी ख़बर दी। अलीकुली, मीलाबख़्श, अशरफ़ख़ाँ आदि निश्चित हत्यारोंको लेकर नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर रवाना हुआ। अलीकुलीको पहलेही इस बातकी ख़बर लग गयी, कि नादिरशाह आज बेगम सिताराके साथ सोने गया है। अतएव वे लोग उसी ओर चल पड़े। ख़ीमेके पास जाकर सब एक ओर छिप गये। ख़ीमेमें जबतक रहता होता रहा, वे सब अपनी जगहपर बैठे रहे। जब उन्हें इस बातका विश्वास यहींपर बैठे-बैठे हो गया, कि नादिरशाह अब सिताराके साथ गाढ़ी नदीमें धराँटे ले रहा होगा, सब मीलाबख़्श अपनी जगहसे उठकर नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर देखने आया। उसने देखा, कि दोनों स्वामी-ख़ी सुप्तपूर्वक सोये हुए हैं। उसने भट्ट वह ख़बर अपने अन्यान्य साथियोंको दी। निदान सब-के-सब अब नादिरशाहके ख़ीमेकी ओर रवाना हुए।

मृत्युके मुजमें अभी-अभी पहुँचनेवाले नादिरशाहको निद्रा कहाँ ? ज्योंही हत्यारे ख़ीमेमें घुसना चाहते थे, त्योंही नादिरशाह जाग पड़ा। वह ताड़ गया, कि अब मेरा काल आ गया ! पासमें रखे हुए फावड़ेको उठाकर वह भट्ट अपने विछावनसे फुद पड़ा और सामनेके दो हत्यारोंका काम उसने क्षण भरमेंही तमाम कर दिया ! इतनेमें सिताराकी भी नाँद खुल गयी। वह भी एक तलवार लेकर आततायियोंपर दूट पड़ी ! नादिरशाहने उसे पेसा करनेसे रोकना चाहा। उसने कहा,—“सितारा ! तू अब यहाँसे जल्द भाग जा। मेरा तो बक़ अब पूरा हो चुका

तु क्यों अपनी जान देगी ? मेरी मुहब्बतको अब तू भूल जा । और अपनी रक्षाका कोई उपाय कर ।

नादिरशाह सिताराने यह कहती रहा था, कि इतनेमें एक तीसरे हत्यारेने वाकर उसकी गर्दनपर एक भयङ्कर वार किया । नादिरशाह उस वारको न देख सका था । बस, उसकी गर्दन धड़से अलग हो, पृथ्वीपर गिर गयी ! इस प्रकार अनेक देशोंके विजेता, अनेक बादशाहोंके बादशाह, असीम साहसी, महापराक्रमी, वीरवर नादिरकी संसार-लीलाका अन्त होगया !

नादिरकी यह अवस्था देख और उन हत्यारोंसे अपनी सतीत्व-रक्षा करनेमें अपनेको असमर्थ जान, सिताराने भी अपने हाथकी तलवारको गले लगा लिया और अपने पतिका अनुगमन किया !

नादिरशाहकी मृत्युके थोड़ीही देर बाद मौलायुश तथा अशरफ़ खाने उस ज़ीमेमें प्रवेश किया । अपने कार्यमें सफल होकर, वे सब परम प्रसन्न हुए । खबर पातेही अलीकुली भी घटना-स्थलपर आ जुटा । वहीं यह निश्चित हुआ, कि प्रातःकाल अलीकुली सिंहासनारूढ़ हो, नादिरशाहका ताज पहन, शासन-दण्ड अपने हाथोंमें ग्रहण करे ।

“ जमीं किसकी मकीं किसका, ये जयतक दमका फेरा है ।

ये हबहोशाम है और रोज़ रौशन है, सनेरा है ।

हुई जब कन्व खाँसें, जान ले चिड़िया बसेरा है ।

ये पुतले खाकके ! फिर मइल तेरा है न मेरा है ।

नादिरशाहका परिचय।

नादिरशाहका रूप और चरित्र ।

नादिरशाहका शरीर लम्बा और सुधील था। देखनेमें बड़ाही सुन्दर था। मुँह लम्बा, नाक लम्बी और कुछ ऊपरकी ओर उठी हुई तथा बाँहें बड़ी-बड़ी थीं। बदन गन्दा हुआ और नसों तनी हुई थीं। उसका रंग साँबला था। उसकी आवाज़ बहुत तेज़ और बलन्द् थी। कुछ फ़ासलेपर खड़ा हुआ मनुष्य, उसकी साधारणतया धोमी आवाज़को भी मली भाँति सुन सकता था। उसकी थोरियाँ सदा खड़ी हुई रहती थीं। उसके शरीरसे मस्ती और स्फूर्ती सदा टपकती रहती थी। उसके प्रथम दर्शन मात्रसे लोगोंके हृदयमें उसका भय छा जाता था।

ये सब बातें तो हुईं उसके शारीरिक सङ्गठनके सम्बन्धकी। अब हम यहाँपर उसके चरित्रकी भी कुछ चर्चा कर देना चाहते हैं। स्थूल दृष्टिसे विचार करनेपर उसका चरित्र फा-फापर कलंकित प्रतीत होता है और सब साधारणकी धारणा भी कुछ ऐसीही है। पर यह धारणा सर्वतोभावेन ठीक कदापि नहीं कही जा सकती। यों तो इस संसारमें बिल्कुल निष्कलङ्क चरित्र कदाचित्ही किसीका कहा जा सकता है। निष्कलङ्क तो केवल परमात्मा ही है। जब मर्यादा पुरुषोत्तम

रामचन्द्र या योगिराज कृष्णचन्द्र तक समालोचकोंके कुठार-प्रहारसे अपनेको नहीं बचा सके, तब संसारमें दूसरा ऐसा कौन पैदा हो सकता है, जिसपर कलङ्के दो-चार छींटे उसके जीवन-पटपर रास्तेमें चलते भी न पड़ जायें ।

नादिरशाह तो एक साधारण मनुष्य था और जिस प्रकार मनुष्यके मोतर भले-बुरे दोनों गुण रहते हैं, उसी प्रकार नादिरशाहके हृदयमें भी सद्वृत्त तथा दुर्गुण दोनों वर्तमान थे । मनुष्य होते हुए मनुष्यके सदृश हार्दिक तथा मानसिक दुर्बलता उसमें भी पायी जाती है । पर किसी मनुष्यकी परीक्षा उसके गुणोंकी बलतापर होती है । यदि किसी मनुष्यमें सद्वृत्तोंकी अधिकता है, तो उसके अन्दर कुछ अवगुणोंके रहनेपर भी वह भला मनुष्यही कहा जायेगा । इस बातको ध्यानमें रखते हुए हमारे विचारमें नादिरशाह उतना बुरा आदमी नहीं था, जितना लोग उसे समझते हैं । यदि सिकन्दरको इतिहास-लेखकोंने भला माना है, यदि नेपोलियनका दर्जा इतिहासमें अच्छा गिना जाता है, तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि नादिरशाह भी एक अच्छा आदमी था । पाठकगण ! आइये, हमलोग इसकी परीक्षा कर देखें, कि नादिर किस कोटिका मनुष्य था ?

नीतिकारोंका कथन है :—

‘उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी ।

दैवेन देयमिति कापुत्रया वदन्ति ॥’

इस नीतिवाक्यको सामने रख हम देखते हैं, कि नादिरशाह बड़ा भारी उद्योगी था—पुरुषसिंह था, इसमें तिल मात्र भी संशय

नहीं। उसके निरन्तर उद्योगका ही यह फल था, कि एक अदना, साधारण, सामान्य वरन् परम दरिद्र परिवारमें जन्म लेकर भी, वह एक दिन शाहोंका शाह बन गया। वह केवल ईरान और तुर्किस्तानकोही अपने कब्जेमें नहीं लाया, वरन् अफगानिस्तान, खल्लिस्तान, हिन्दुस्तान और अरबिस्तानका भी मालिक बन बैठा। बाल्यकालमें नादिरशाहकी जैसी पारिस्थिति थी, वैसी यदि सिकन्दर और नेपोलियनकी होती, तो उनके गुण-गानमें आज इतिहासके इतने फलने कदापि नहीं रंगे जाते। सिकन्दर और नेपोलियन वरके दरिद्र नहीं थे। उनके पास विद्या, बुद्धि और साधन भी थे। नेपोलियनने तो आधुनिक विज्ञानसे भी बहुत कुछ लाभ उठाया; पर यह सीमान्त और गौरव नादिरशाहको ही प्राप्त है, कि लिखने-पढ़नेसे कुछ भी सम्यन्ध न होनेपर भी उसने दरिद्रताको छात मार, अपने एक मात्र उद्योगसे इतने देशोंके राजा-महाराजोंको परास्तकर उनपर अपना सिक्का जमाया। हमारा तो यहाँतक विश्वास है, कि यदि इन दिनों नादिरशाह होता, अथवा यदि संग्रामके सारे आधुनिक साधन उस समय उसके पास मौजूब होते, तो जिस विश्व-विजयकी अभिलाषाको जर्मनीका कैसर अथवा फ्रांसका नेपोलियन पूरा न कर सका, उसे नादिरशाह अवश्यही करके छोड़ता। आज वह संसारके इतिहासमें विभव-विजेताके नामसे प्रसिद्ध होता; पर यद्यपि वह ऐसा नहीं हो सका, तथापि जो कुछ उसने किया, उतनाही नेपोलियन और सिकन्दरकी विजयोंसे किसी प्रकार कम नहीं है।

यह तो हुई नादिरके उद्योगकी बात। अब उसके पुरुषार्थकी

यात भी ले लीजिये । नादिरशाह परम पुरुषार्थी और वीर-केसरी था । जहाँपर उद्दटसे उद्दट योद्धाओंकी भी अल्लु कोई काम नहीं करती, वहाँपर, ऐसा अनेक बार देखा गया है, कि नादिरशाहने केवल अपना फावड़ा लेकरही समस्या हल कर दी है और अपनी अतुलित वीरता द्वारा हजारों विपक्षियोंका शिरच्छेदनकर दुश्मनोंके छक्के छुड़ा दिये हैं ।

इतनाही नहीं, उसके जीवन-कालके युद्धोंमें अनेक बार हमें ऐसी घटना भी मिली है, कि एक ओर विपक्षियोंकी असंख्य सेना सारे अस्त्र-शस्त्रोंसे सुसज्जित होकर नादिरशाहकी फ़ौजपर आक्रमण करनेके लिये आगे बढ़ी भा रही है और दूसरी ओर नादिरशाह अपनी मुद्दोभर सैनिकोंसे उनका मुक्काबिला करनेके लिये अड़ा खड़ा है । उसकी फ़ौज अपने आगे विपक्षियोंको असंख्य सेनाको देखकर घबरा उठती है और पीछेकी ओर लौटना चाहती है । पर वीरवर नादिरशाह अपनी उसी मुद्दो-भर सेनाको ललकारता हुआ आगे बढ़ाता है और सबसे पहले आपही दुश्मनोंपर टूट पड़ता है । शत्रु-दल गोलियों और तलवारोंका हजारों बार उसपर करता है ; पर पुरुषसिंह नादिर उन्मत्त गजराजकी तरह दुश्मनोंके केदली-वनको उजाड़ता और संहार करता हुआ, बार-बार बचकर फिर अपने दलमें आ मिलता है । तारीफ़ तो नादिरशाहकी इस बातमें है, कि अपने जीवन-कालमें, उसने जो सैकड़ों युद्ध किये, उनमें बराबरही वह अपनी सारी फ़ौजसे आगे रहा, उसपर दुश्मनोंके लाखों बार हुए ; पर किसी युद्धमें उसके शरीरपर एक घाव भी न लगा !

उदारताकी मात्रा भी नादिरशाहमें किसी प्रकारसे कम नहीं थी । न जाने अपने शासन-कालमें लूट-पाट तथा पराजित वाद-शाहोंके उपहारोंमें उसे कितने करोड़ रुपये मिले होंगे ? यदि उन्हें वह संचित करता चाहता, तो उन रूपयों और असबाबोंको रखनेकी भी जगह उसके पास नहीं होती । पर उसने ऐसा नहीं किया । केवल अपनी उदारताके बशीभूत हो, उसने उन सारे धन-रत्नोंको अपनी फ़ौज और नौकरोंमें बाँट दिया । अपने आदमियोंको वह समय-समयपर इनाम भी बहुत अधिक दे दिया करता था । एक दिनकी घटना है, कि वह अपने महलमें खानगी लिवासमें बैठा था । एक बूढ़े द्वारपाल, अपने सामान्य वेशमें उसकी लाबेदारीमें उसके पासही खड़ा था । नादिरशाहको उस द्वारपालकी अवस्था देखकर सहसा बड़ी दया आ गयी । उसने एक-व-एक बिना कुछ कहे-सुने, उसे एक हजार अशफ़ियाँ बख़शीश दे दीं । नादिरशाहके दानमें उस द्वारपालको एकही क्षणमें दरिद्रसे धनवान् बना दिया ! अपने मुसाहबोंके यह पूछनेपर, कि इतनी अशफ़ियाँ लेकर यह बूढ़े पुरुष क्या करेगा, नादिरशाहने उत्तर दिया, कि 'इसके मर जानेपर कम-से-कम इसके लड़के तो सुख-चैनसे अपनी ज़िन्दगी बसर करेंगे ।'

नादिरशाहकी स्मरण-शक्ति भी बड़ी तीव्र थी । वर्षों पेशतरकी बात वह क्षण भरमेंही स्मरण कर ले सकता था । अक्सर वह वर्षों पहलेकी बीती घटनाको भी समय पढ़नेपर ज्यों-का-त्यों सुहरा देता था । अपने हजारों नौकरोंमें प्रायः सबके नाम उसे याद रहते थे । प्रायः सभी सिपाहियोंके

नाम भी उसे याद थे। उसकी इस विलक्षण और अद्भुत स्मरण-शक्तिको देखकर उसके कर्मचारी चकित-विस्मित रह जाते थे।

एक समयकी बात है, कि वह दरबारमें बैठा हुआ था। एक अफ़ग़ानी सिपाही उसके पास आया और नौकरीकी प्रार्थना की। इसपर नादिरशाहने उससे पूछा,—“क्या इसके पहले तुम और कहीं नौकरी करते थे ?” सिपाहीने उत्तर दिया,—“हाँ, हुजूर ! इसके पहले मैं एक राजाके पास नौकरी करता था। मेरी सेवासे प्रसन्न हो, समय-समयपर वे मुझे बहुत इनाम दिया करते थे। नमक-हल्लाही और बफ़ादारीके साथ सदा मालिकका काम करनाही मेरा स्वभाव है। सिपाहीकी यह बात सुनकर नादिरशाह बोला,—“सन् १७३६ ई० में तुम मेरी फ़ौजमें सिपाहीका काम करते थे न ? एक दिन तुम्हारे किसी कामसे खुश होकर मैंने तुम्हें इनाम भी दिया था। क्या वह बात तुम्हें याद है, मिर्या अब्दुल्लाह !”

मिर्या अब्दुल्लाह अपने पुराने मालिकके मुँहसे अपना नाम सुनकर बहुत ताउजुबमें आ गया। वह इस बातपर बहुत आश्चर्य करने लगा, कि इतने बड़े बादशाहको मेरे जैसे तुच्छ सिपाहीके सम्बन्धकी, इतने दिनोंकी पुरानी घटना, आजतक याद है ! फिर हाथ जोड़कर वह सिपाही बोला,—“जहाँपनाह ! आपकी बात बिल्कुल ठीक है। यह मुलाम आपकी फ़िदमतमें था और आज फिर आपकी फ़िदमत करनेके लिये हाज़िर हुआ है।”

नादिरशाहने फिर पूछा,—“जो एक हजार रुपये मैंने तुमको दिये थे, क्या उस रक़मको अपने बाल-बच्चोंको खिलाने-

पिलानेमें तुमने खर्च कर डाला है ? मुझे तो प्रतीत होता है, कि उन रुपयोंके खर्च हाजानेपरही तुम मेरे पास फिर नौकरी करनेके लिये आये हो ।”

सिपाहीने उत्तर दिया,—“शाहशाह ! वे रुपये खर्च तो नहीं होयये ; पर खो ज़रूर गये हैं । एक दशावाज़ औरतसे मेरा काम पड़ गया । उसीके हाथों मैंने अपना सारा माल-असबाब छोड़ रखा था । एक दिन वह एक दूसरे पुरुषके साथ फँसकर और मुझे दरिद्र बनाकर कहीं भाग गयी है । इसलिये मैं फिर भी हुजूरकी ज़िदमतमें हाज़िर हुआ हूँ । मुझे पूरी उम्मीद है, कि हुजूर इस ख़ाकसारपर ज़रूरीही मिहरबानी करेंगे ।”

नादिरशाह और उस सिपाहीके बीच इस घात्खालापको सुनकर बर्होपर उपस्थित सारे दरबारी शाहकी इस अपूर्व स्मरण-शक्तिपर दातों उँगलियाँ काटने और कहने लगे,—“सन् १७३८ ईस्वीकी एक महज़ मामूली बात आज आठ वर्षोंके बाद भी शाहको बख़ूबी याद है ।

नादिरशाहमें और भी अनेक सद्गुण भरे पड़े थे । वह बड़ा भारी कर्त्तव्य-परायण मनुष्य था । उसके दैनिक जीवनमें कदाचित्ही कोई ऐसा समय व्यतीत होता हो, जब कि वह किसी-न-किसी काममें संलग्न न पाया जाता हो । व्याहार-विहार और आनन्द-प्रमोदमें चाहे जितना लवलीन क्यों न हो, पर यदि कोई राज-कार्य उसके सामने आकर उपस्थित होता, तो वह सबको हात मारकर फ़ौरन राज-काज देखनेमें लग जाता करता था । एक दिनकी बात है, कि वह राज-कार्यके सभी दैनिक शंभटोंसे

भुक्त हो, रात्रिमें नाच-गान सुन रहा था। उसी समय एक राज-कर्मचारीने उसके पास आकर किसी कामकी सूचना दी। नादिर तत्क्षण महफ़िलसे उठ गया और उस कार्यमें लग गया। चन्द मुसाहबोंने और कुछ देरतक महफ़िलमें ठहरनेकी प्रार्थना की; पर उसने किसीकी एक भी न सुनी। वह यह कहता हुआ महफ़िलसे बिदा हुआ, कि —“पहले मेरे सामने राज-काज है आमोद-प्रमोद तो छुट्टीके सामान हैं।” यदि ऐसा कर्तव्य-ज्ञान और ऐसी तत्परता नादिरशाहमें न होती, तो नादिरका नाम भी कोई न सुन पाता।

नादिरशाह अपनी न्यायप्रियताके लिये भी बहुत प्रसिद्ध था। न्याय करते समय, राजा-रड्ड, धनी-दरिद्र, सयको वह एकही दृष्टिसे देखता था। वह किसीके साथ किसी प्रकारका भेद-भाव नहीं रखता था। पक्षपात किस चिड़ियाका नाम है, यह कभी उसने जानाही नहीं। एकही प्रकारके अपराधके लिये वह जो दण्ड एक साधारण प्रजा-जनको देता था, राज्यके बड़े-बड़े कर्मचारियों और अपने सम्बन्धियोंको भी वह वही दण्ड देता था। इस तरह न्यायका तो वह एक प्रकारसे आदर्शही था।

नादिरशाह अपने वचनका बड़ाही सच्चा था। एक बार उसके मुँहसे जो बात निकल जाती, जी-जानसे उसका पालन करना, वह अपना फ़र्ज समझता था। वह कभी अपने वचनसे नहीं टलता था। फलतः वह यह भी चाहता था, कि उसके राज्यके सभी मनुष्य तथा उसके अधीनस्थ सभी व्यक्ति अपने वचनके अनुकूल आचरण करें। जब वह किसीको अपने वचनके

विपरीत काम करते देखता था, तब वह उस आदमीपर घुरी तरह विगड़ उठता था। वह उसे ऐसा कठिन दृष्ट देता था, कि लोग उसे सुन-ही-मन कूर, निर्दयी और ज़ालिम भी कह डालते थे।

नादिरशाह सादगीका तो मानों अवतारही था। वह सदा सादा वस्त्र पहनता और साधारण भोजन ग्रहण करता था। किसी प्रकारके शृङ्गार अथवा सजावटसे उसे बड़ी घृणा रहा करती थी। वह कहा करता था, कि 'अपने वदनको इन शृङ्गारों और सजावटोंसे सजना-धजना तो स्त्रियोंका काम है। पुरुषको परमात्माने इसके लिये पैदा नहीं किया है।' पर, स्नान-पानका शौक न होनेपर भी रात्रिमें थोड़ीसी शराब वह सदा पिया करता था और ऐसा वह इस लिये करता था, जिसमें दिन-भरकी थकावट-भाँदवी दूर होजाये। यह विचारकर कि ईरानके प्रायः सभी लोग मदिरा पान करते हैं, तथा मदिरा-पान वहाँ धर्म-संगत है, इसलिये नादिरशाहका यह अभ्यास वृथित नहीं कहा जा सकता।

रात्रिमें उसके दरबारे खासमें हमेशा महफ़िल बैठा करती थी। राज्यके बड़े-बड़े कर्मचारी उस महफ़िलमें इकट्ठा हुआ करते थे। नादिरशाह भी कुछ समय तक उस महफ़िलमें बैठता था और नाच-रङ्गमें शरीक हुआ करता था। सम्भव है, कुछ पाठक नादिरशाहके इस कामको घुरा समझें और कहें, कि जिसके हाथोंमें इतने बड़े साम्राज्यके शासनका उत्तरदायित्व था, जिसके लिएपर इतनी प्रजाके पावनका भार था, उसके

लिखे इस प्रकार नाच-रङ्गमें शामिल होना, कभी प्रशंसनीय नहीं कहा जा सकता। परन्तु बात यह है, कि जिसकी निम्नकी, दिन-चर्या बचाने लक्षों आदमियोंके भाग्यको उलट-पलट देनेवाली होती है, जिसके हृदयमें संसार-आसिनी आकांक्षार्ण होते हैं, वह यदि अपने इन्द्रियको विराम लेने न दे, तो वह अवश्यही विकृत हो जायेगा और वह किसी कार्यके योग्य भी नहीं रह जायेगा। नादिर भी इसी विचारसे नाच-रंगमें शरीक हुआ करता था। अतः नादिरशाहका यह कार्य भी राजनीतिक दृष्टिसे विशेष नहीं और अक्षम्य नहीं कहा जा सकता। हाँ, यह अक्षम्य तभी कहा जा सकता था, जब कि वह सदा भोग-विलासमेंही डूबा रहता भोग धरने राज-काजकी ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता बल्कि उनकी उपेक्षा करता।

ये बातें तो हुईं नादिरशाहकी प्रशंसाकी। अब पाठकोंको यह बताना देना भी हमारा कर्त्तव्य है, कि उसमें कोई दोष था अथवा नहीं। ऐसा अनुमान करना, कि उसमें कोई दोष नहीं था, सरासर गलत होगा; कारण, आझिरकार वह भी मनुष्यही था और संसारमें कोई भी मनुष्य ऐसा नहीं पाया गया है, जो सर्वतो-भावेन दोषोन्मुक्त हो। अतः नादिरशाहके चरित्रमें भी कुछ दोष और अयगुण अवश्य थे। जबतक उन दोषों और अयगुणोंका यहाँपर उल्लेख नहीं किया जायेगा, तबतक, हमारी समझमें, उसकी जीवनी अधूरीही रह जायेगी। अस्तु।

नादिरशाहमें अनेकानेक अनुपम सद्गुणोंके रहते हुए भी, उसमें कई अयगुण थे; परन्तु हमारे विचारसे तो उसमें एकही

बड़ा भारी और प्रधान अवगुण था। अन्यान्य अवगुण उसी एकके सहायक मात्र थे—बड़ प्रधान अवगुण था, नादिरशाहका क्रोध। वह जब कोई काम अपने मनके विरुद्ध होता देखता, अथवा किसीके अपराधकी बात सुनता, तब मारे क्रोधके अन्धा हो जाता था। भले-बुरे और यश-अपयशका विचार उसके हृदयसे जाता रहता था। परिणामकी तनिक भी परवाह न कर वह अपनी भोषणातिभीषण दण्डाज्ञा प्रदान कर देता था। उसकी आज्ञासे चारों ओर तहलका मच जाता था। सारी प्रजा 'बाहि! बाहि!' करने लग जाती थी। यदि नादिरशाहमें यह अवगुण नहीं होता, तो आज 'नादिरशाही फ़रमान' जैसे मुहावरेंकी सृष्टिही नहीं होती। यदि दयावान् होते हुए भी नादिरशाह 'महान् निर्दयके' नामसे इस संसारमें प्रसिद्ध है, तो वह केवल अपने भयंकर क्रोधकेही कारण। यदि नादिरशाहके भीतर यह अवगुण नहीं होता, तो आज उसकी गिनती शाह सुलेमान और राजा बिक्रमादित्यकी श्रेणीमें होती। इसीलिये हमारे शास्त्रकारोंने कहा है, कि 'क्रोध मनुष्यका हन्ता है।' एक मात्र इसी दुर्गुणके कारण नादिरशाह अपनी सारी सुखातियोंसे हाथ धो, आज संसारमें अपसयातिका पुत्र बना हुआ है।

अपने चाचाकी हत्या, पुत्रकी आँखें निकलवा लेना तथा दिल्लीके फ़तुलेआमकी बातें सुनकर, लोग, यह कह सकते हैं और कहते भी हैं, कि वह बड़ा भारी निर्दय और क्रूर-हृदय था। हम इस कथनका खण्डन नहीं करते। अपने चाचाकी हत्या करनेमें उसने केवल अपनी निर्दयता और अमानुषिकताकाही

परिचय नहीं दिया है, वरन् घोर विश्वासघात भी किया है। परन्तु यदि दूसरी दृष्टिसे देखा जाये, तो यही मालूम होगा, कि अपने चाचाकी हत्याकर नादिरशाहने, उसे, इतने दिनोंतक अपनी पैतृक सन्पत्तिपर अनुचित अधिकार जमा रखनेके अपराधका इण्ड दिया था। नादिरशाहके माँगनेपर भी वह उसे अपने पास फटकने नहीं देता था। नादिरशाहकी महद्कांक्षा बहुतही चढ़ी-बढ़ी थी। वह बादशाह बनना चाहता था और उसका चाचा उसके मार्गमें भारी बाधक था। इसलिये रास्तेके इस रोड़ेको हटाकर दूर फेंक देनाही नादिरशाहने उचित समझा और उसने अपने चाचाकी हत्या कर डाली। पर यहाँपर यह प्रश्न किया जा सकता है, कि नादिरशाहकी महद्कांक्षा क्या केवल हत्याके द्वाराही पूरी हो सकती थी? बात भी ठीक है। क्या अपने चाचाको क्रैदकर वह अपना काम पूरा नहीं कर सकता था? किसीको अपने घरमें निमंत्रितकर उसकी हत्या करना, विश्वासघात, अमानुषिकता तथा गद्दित कर्म नहीं तो और क्या कहा जा सकता है?


उसने अपने पुत्रकी हत्या भी इसी प्रकार क्रोधमें आकर कर डाली। सच है, जब मनुष्यके भीतर क्रोधान्नि प्रज्ज्वलित होती है, तब बेचारी बुद्धि, ज्वालासे विकल होकर, बाहर चली जाती है। क्रोधान्ध नादिरशाहने अपने पुत्रके भले-बुरेका, तनिक भी विचार नहीं किया और गुस्सेके प्रबल आवेशमें आकर, उसने उसको आँखें निकलवा डालीं। इसके परिणाम-स्वरूप उसे जीवनभर पश्चात्ताप करना पड़ा। इतनाही क्यों? हम

तो यहाँ तक समझते हैं, कि जिस दिन उसने अपने पुत्रकी बाँधें निकलवा डालीं, उसी दिनसे पापका भूत उसके सरपर सवार हो गया ! वह पागल और उन्मत्त हो गया तथा शेक्स-पियरके 'मैकबेथ'की तरह प्रलाप-विलाप करता हुआ, अन्तमें इस लोकसे बहुत बुरी तरह विदा हुआ !

देहलीके क़त्लेआमका काम भी किसी प्रकारसे उचित नहीं छूराया जा सकता । माना, कि दिल्लीवालोंने झूठी अफ़वाहें उड़ाकर नादिरशाहके कई सिपाहियोंको मार डाला और इसीके प्रतिशोध-स्वरूप नादिरने क़त्लेआमका हुकम जारी कर दिया । किन्तु यहाँपर यह विचारना है, कि क्या उस अफ़वाहमें दिल्लीकी सारी जनता मौजूद थी ? यदि नहीं, तो सिर्फ़ कई मनुष्योंके अपराधके लिये सारे शहरको उजाड़ डालना तथा वहाँके आबाल-बुढ़ बनिता,—सभी लोगोंका संहार करना क्या उचित था ? यदि यह कहा जाये, कि अपराधी और निरपराधका विचार करनेके लिये उसके पास समय कहाँ था, तो हम यह कहेंगे और आशा है, इसे सभी स्वीकार करेंगे, कि जल्दबाजीमें, बिना किसी प्रकारका विचार किये, उसने ऐसा काम क्यों कर डाला, जिसके लिये, केवल संसारही अनन्त कालतक उसकी विन्दा नहीं करेगा,—वरन् परमात्माके सामने भी यह सकृद गुनहगार साबित होगा ?

परिशिष्ट

“Lives of great men, all remind us,
We can make our life sublime,
And departing leave behind us,
Foot-prints on the sands of time.”

 महापुरुषोंकी जीवनियोंको आदर्श मानकर हमलोग भी अपने जीवनको उच्च बना सकते हैं और इस प्रकार इस असार संसारसे विदा होते समय अपना-अपना स्मृति-चिह्न काल अनन्तके पटपर अङ्कित कर जा सकते हैं।”

पाठक प्रवर ! नादिरशाहकी जीवनी, पिछले परिच्छेदोंमें समाप्त हो चुकी । आपने देख लिया, कि किस प्रकार एक साधारण और सामान्य व्यक्ति भी अपने निरन्तर उद्योग, अतुल साहस, असीम उत्साह, प्रबल परिश्रम तथा अचिराम कार्य्य द्वारा उस खान और अवस्थाको प्राप्त होगया, जिसके लिये बड़े-बड़े बादशाह भी लोभ्य और लालायित रहते हैं । यदि किसीको इस संसारमें महान् बननेकी अभिलाषा हो, तो बेसा होनेके लिये, उसे नादिर-शाहसे शिक्षा ग्रहण करना चाहिये । इस संसारमें किसी प्रकारकी सफलता प्राप्त करनेके लिये निरन्तर उद्योग और साहस,—येही दो परम प्रधान साधन हैं । जिस पुरुषमें ये दोनों

साधन सदा-सर्वदा वर्तमान रहेंगे, कहनेकी आवश्यकता नहीं, कि सफलता सदा उसकी दासी बनी रहेगी। इसी समयन्वमें गोस्वामीजीने अपनी सतसईमें कहा है:—

जिन हूँदा जिन पाइयों, गहरे पानी पैठ ।

में यौरी बून डरी, रही किनारे बैठ ॥”

निरुद्यम और निरुत्साह पुरुष इस संसारमें कोई भी कार्य नहीं कर सकते। यह संसार एक महान् समर-क्षेत्र है। इसमें अपनी अपनी स्थिति और स्मृतिकी रक्षाके लिये निरन्तर युद्ध होते रहते हैं। जो दुर्बल हैं, जो निरुद्यम हैं, जो आलसी और निरुत्साह हैं, ईश्वर और भाम्भके भरोसे जो हाथ पर-हाथ रख बैठे हुए हैं, वे सदा वृद्धिही नहीं बने रहेंगे,—इस संसारमें उन्हें सदा टोकरीं ६ नहीं मिलती रहेंगी—वरन् उनका अस्तित्व भी उनके मरनेके साथ-ही-साथ दुनियासे सदाके लिये लुप्त हो जायेगा। परन्तु जो परिश्रमी और उत्साही हैं, जिनमें बल और उद्योग है, भाम्भके बड़ले जो अपने उद्योग या प्रयत्नकोही प्रधान मानते हैं, लाख विपत्तियोंके सिरपर आनेपर भी जो तनिक भी घबराते नहीं,—वरन् साहस और धैर्यके साथ इस समर-क्षेत्रमें सभी वारों और प्रहारोंका सामना करते हुए और उनसे बचते हुए आगे बढ़ते जाते हैं, वैही माईके लाल विजय और सफलता प्राप्त करते हैं तथा विष्व-विजयीकी उपाधिसे विभूषित हो, इस संसारमें अपने नामको अजर और अमर बना जाते हैं। हमारे चरितनायक नदिरशाह भी ऐसेही पुरुष-पुङ्गवोंमें एक थे।

एक बात और है। मनुष्य अनेकानेक दुर्बलताओंका आकर

है। उसके स्वभाव और चरित्रमें बहुतेरी कमज़ोरियाँ रखा करती हैं। मनुष्य स्वभावतः अपनेको उन कमज़ोरियोंसे बचाना भी चाहता है। उसका जीवन-धर्म भी यही कहता है, कि वह अपनी इन दुर्बलताओंका दमन करे। परमात्माने इसीलिये मनुष्यको बुद्धि प्रदान की है और इसी बुद्धिको यदौलत मनुष्य पशुओंसे श्रेष्ठ समझा जाता है; परन्तु इस बुद्धिका विकास और परिमार्जन तभी होता है, जब मनुष्य सोच-समझकर काम करता है। बिना सोच-विचारे काम करनेवाले मनुष्य सदा ठोकरें खाया करते हैं। ये चोट भी सहते हैं और संसारमें अपना उपहास भी कराते हैं। इन उपहासों और ठोकरोसे अपनेको बचानेके लिये मनुष्यको अनुभवकी आवश्यकता होती है। ये अनुभव दो प्रकारके होते हैं। एकको व्यावहारिक अनुभव कहते हैं और दूसरेको काल्पनिक हैं। व्यावहारिक अनुभव तो संसारके व्यवहार-व्यवसाय तथा मिलन-समागमसे प्राप्त होता है और काल्पनिक अनुभव पुस्तकोंके पठन-पाठन और मननसे। हाँ, पुस्तकोंके निर्व्याचनमें मनुष्यको बड़ाही सावधान होना चाहिये। अच्छी पुस्तकोंके अध्ययनसे जिस प्रकार मनुष्य अपने जीवनको सार्थक और सफल बना सकता है, वसी प्रकार गन्दे और बोल्ले भावोंसे भरी पुस्तकोंका पठन-पाठन उसकी ज़िन्दगीको बिगाड़ और बेकार बना देता है।

प्रस्तुत पुस्तक कितनोंके जीवनको सुधारेगी, इसका तो हमें कोई अन्दाज़ नहीं; पर इतना हम ज़रूर कह सकते हैं, कि यह किसीके जीवनको भ्रष्ट कदापि नहीं कर सकती। तो भी यहाँपर

एक बार यह स्मरण दिला देना हम अपना परम कर्तव्य समझते हैं, कि नादिरशाहका जीवन यदि एक ओर—जैसा कि पहले कहा जा चुका है—बल, साहस और उत्साहका जाज्वल्यमान उदाहरण है, तो दूसरी ओर उसके जीवनमें कई कलङ्क-कालिमा-पूर्ण घटनाएँ भी पायी जाती हैं। नादिरशाह बड़ा भारी क्रोधी था। अपने स्वार्थ-साधनके लिये वह पूरा निर्दय बन बैठता था। 'Nothing is unfair in love and war'—अर्थात् प्रेम और युद्धमें किसी प्रकारका कार्य भी अनुचित नहीं, इस पाश्चात्य कथनका वह एक ज़ास्ता नमूनात्सा था और इसी प्रकारके कतिपय अन्याय दोष भी उसके जीवन-चरित्रमें पाये जाते हैं। आशा है, पाठक नादिरशाहके उन दोषोंसे अपनेको बचानेका प्रयत्न करेंगे। किसी विचार-शील मनुष्यने कहा है,— 'A man becomes wise by the follies of his ancestors.'—अर्थात् अपने पूर्वजोंकी कमजोरियों और गलतियोंको जानकर मनुष्य सावधान हो जाता है। इसलिये 'बीर-हीर-चिवेकी हंस'की सुनीतिका अवलम्बनकर पाठक इस पुस्तकके पाठ तथा मननसे लाभ उठावेंगे।





'वर्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्वोत्तम पुस्तकें ।

मूल्य केवल
१॥ ६०

कोहेनूर

दशमो जिल्द
२॥ ६५५

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास ।

यदि आपकी राजपूतों और तुसलमानीयों मयानक उदात्तोंका जीवन
पेना ही, यदि आप राठौर-बीर
"हर्गादास" और सनाट "शौरदुन्द"  
के इतिहास-प्रसिद्ध जीवन संशाम-
का स्वास्थादन करना चाहते हैं,
यदि आप उद्दयपुरके सुवराज "धनर-
सिंह" की बीरता, धीरता और इति-
हासका पूरा परिचय पाया चाहते
हैं, यदि आप "अरावली-उपत्यका"
में होने वाले रुचाभिन्न इतिहास और
और इतना सुसलमानीयोंका और
उपान देखा चाहते हैं, यदि आप
और-शिरमोचि "काका मराठ"
राजपूतोंका "कौरवीसिंह" आदि सुशो-
भय इतिहास औरोंका प्रसन्न सुसल-
मानीयोंका आश्चर्यजनक युद्ध इति-
हास देखा चाहते हैं, तो इसे पढ़कर बढ़िये । इसमें दूसरे दूसरे यौग्य हैं :



पेन्द्रजाति
सदनापूष

चालाक और

सचित्र आखूरी
उपन्यास ।

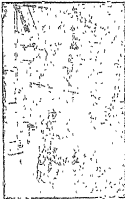
बातक । इसमें विद्यावतके एक ऐसे मयानक औरोंका कान्वासुखीसाहाय
लिखा गया है, जो वही वही धुम्बर आखूरीकी आखूरीमें चल पावधार दिन
बहाते देखते देखते आखूरी उपत्यका भाग उड़ा ले जाता था । इसकी चौर-
सिंह उपधार सारा इच्छाएँ उच्छल उठा था और सप हीन उसे ईच्छासिद्ध
और समझने लगे थे । इसमें २ पिल भी हैं । दाम केवल १॥, ६५५ ।

पता-आर, पल, वर्मन प्रेस को०, ३७१ अपर चौतपुर रोड, कलकत्ता ।

अधरना-पत्र

सचित्र जासूसी उपन्यास ।

इस उपन्यासमें, अधरना-पत्रिकी पारखरिद प्रकृताया वड़ा ही सुन्दर



पित्र खीचा गया है । "दाद वेनमोक" नामी एक सम्पन्न अधरना पत्रिक प्रकाशक इलाही पाकर अपनी पत्रिकाके सुन्दर को "खिनापेट्टा" उचित नामकरणके साथ पाये, जिस प्रकार उनकी प्रकाशकके नामके अधरना पत्रिका की उनका पीछा न छोड़ता, जिस प्रकार भारतमें पहली बार "अधरना पत्रिका" की प्रकाशकके साथ ही पाकर उनकी वड़ा ही, जिस प्रकार सुन्दरके पाकर दाद वेनमोकके दाद-नीकरा उनके हुए गये, जिस प्रकार इलाही प्रकाशकके दाद वेनमोककी नयायक खुशी मानकेमें गिरकर ही इलाही

पाना वड़ा, जिस प्रकार राखेके सुन्दरके जगन्नी उपपर नामकरण किया, जिस प्रकार उनकी को "खिनापेट्टा" सुन्दरके में ही गयी, जिस प्रकार पाकर रूपायके सुन्दरके सुन्दर उनकी खीचा पधार किया, जिस प्रकार वड़े वड़े जासूसीको मददके "दाद वेनमोक" को "दादवेन रिदाई किया। पादि हीराकी रिपणस्य घटनाओंका वर्णन है। (भाग २)।

जासूसके घर खुल

सचित्र जासूसी उपन्यास ।

इस उपन्यासमें विद्यावती सुप्रसिद्ध जासूस मिटर राबट बुंकाकी ऐसी ऐसी जासूसियां ही गयी हैं, कि मारे ताज्जुबके दांतों उंगलो काठनी बढ़ती हैं । सुन्दर सुन्दर २ चित्र.भी हैं । हाल सिर्फ १३, १४ । रंगमौ खिद २, २०

पता-आर, पल, वर्मन प्रेस की, ३७१ अफर चौतपुर रोड, कलकत्ता ।

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास ।

इस उपन्यासमें भारत-सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही कथा

रंजक घटनाओंका सचित्र वयान किया गया है। सम्राट अकबरकी प्राशये सेनापति "इस्कन्दर" का युद्ध भावसे "इंदलगाढ़-दुर्ग" पर घढ़ाई करना, भयानक घंघेरी रातके समय पचाप दुर्गपर अचिकार घना कर दुर्गाधिपति 'सोशानी' को कैद करकेको चेष्टा करना, सोशानीकी पौर-पत्नी "गुलशन" के अप्रपुत्र रूप-छावचयपर सुगंध ही कसब-विसुख होना, पतिप्रता गुलशनका इस्कन्दरको छोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इस्कन्दरका पीछा करना, सोशानीका पहाड़-घे गिर कर प्राण त्याग करना,



गुलशनको फरियाद पर अकबरके दरवारसे इस्कन्दरको फाँसीका मिलना, गुलशनकी सहायतासे इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, पालवाधिपति "बाजबहादुर" को युद्ध घातकके आक्रमणसे बचाना, बाजबहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाजबहादुरकी सुन्दर कन्या "रुबिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, दोनोंने विवाह होना आदि पद्युतहो अपूर्व घटनाये दो गथो हैं। मूल २), रेगमोजितद २॥) ब०

जासूसी कहानियाँ—यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास लिखे गये हैं—(१) साढ़ आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नोबाम-बरका रहस्य (४) चुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर और चतुर। दाम सिर्फ ॥३॥ आना।

पता—भार, पल, वर्मन प्रेस को०, ३७१ अवर चातपुर रोड, कलकत्ता।

✽ जासूसी कुत्ता

सचिव
जासूसी उपन्यास

पाठक ! हम दार्शनिक साधक हैं, कि भाष्यतक आपने ऐसा उपन्यास



न पढ़ा होगा । इसमें जासूसी नामक एक खासि-भास कुत्तेने कैसी कसौ करामाते दिखाने हैं और अपने गरीब स्वामीको "खास" जैसे बड़े बौद्धियर पदु'वा दिया है, कि पढ़कर तमिस्त कड़क उठती है । साथ ही इस उपन्यासके यह शिष्या भी खूब मिला सकते हैं, कि मनुष्य नेकपसन्नी और परिश्रमके फलपर कर्पांतक उपति कर सकता है । हमारा एखान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासके कुछ भी शोक न हो, तो भी प्राय इसे पसन्न पढ़ें, पाषण्डी पड़ताथा न परीना, क्योंकि इसकी खान्द-परिचित नखा ऐसा सुन्दर चित्र अद्वित किखा गया है, कि

पढ़कर निखरों मनुष्य की कुछ दिशानिं अपनी उपति कर सकते हैं । इसकी तीसरी छन्द सुन्दर ३ चित्र भी तिमि नथे हैं । मूल्य ११५, रैशमी प्रिण्ट १५ है ।

प्रमहेन्द्रकुमार

देखारी और तिलिस्मवा खूठा उपन्यास ।

देखारी और तिलिस्मी कैलधि करा हुआ, चाकरके व्यापारों और सोल-हर्मल बहनामोसि हुआ हुआ यह खूठा उपन्यास पढ़ने को योग्य है । इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी देखारियां कैली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक कड़क उठेंगे । इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकका खाना, पीना, सोना, बैठना बन्ध मुच जायगा । दतमपर भी १००० पैलके बड़े घोसेका दाम, सिर्फ ३, है ।

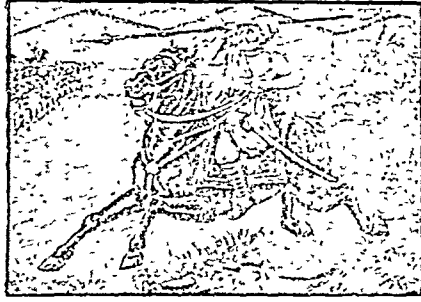
इला-आद, पल, धर्मन प्रेस को०, ३७१ अण्ड चौतपुर, पेट, कलकत्ता ।

'वर्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्वोत्तम पुस्तकें ।

दुर्गादास

वीर-रस-पूर्ण सचित्र ऐतिहासिक नाटक ।

पञ्च-साहित्यमें जिस नाटकको घूम मच गयी थी, वङ्ग-भाषामें कि:



नाटकके अनेकों संस्करण हुए हाथ बक गये थे, कहकहके वङ्गला थियेट्रोंमें जिस नाटकके खेलते समय दर्शकोंकी कान मिलना कठिन हो जाता था वही पुद्गुहाता हुआ वीर-रस प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें रूपकर तय्यार है ।

में यह नाटक नाटकाका 'सुगल नयि' है। इसमें "औरङ्गजेब" महाराजा राजसिंह, भीमसिंह, राजा उदयसिंह शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "गन्भाजी" और ग्राहजादे अकबर, राजा तथा कामबख्श प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध मौखिक युद्धोंका वयन बड़ी ही शोजस्विनी भाषामें किया गया है। सुगल-रमणियों और राजसूय खलनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही बारीकीसे खींचा गया है। इसमें और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक देखें और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहली बारकी रूपी कुछ कापियां मिल जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाकटके फोटोके रूपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गोंन चित्र भी दिये हैं जिन्हें देखकर पाप फड़क उठेंगे। दाम सिर्फ १।), रेगमी जिल्द बंधीका २) रुपया।

खुनी औरत

इसमें एक छाकरके मेसमेरिजम वा भौतिक-विद्याका वयन ऐसा विचित्र; तासी किया गया है कि पढ़कर रोंगटे खड़ हो जाते हैं। दाम सिर्फ १।),

पता-आर, एल, वर्मन प्रेसको०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता

डबल जासूस

-: सचित्र जासूसी उपन्यास :-

इसमें चरित्र और सुरेंद्र नामक एक ही सुरत-गल्ले की बान्नी जासूसीकी लीची पादार्थजनक शारदार्यवीका रूप दिया गया है, जिसकी पढ़नेसे अच्छे छंद हो पाते हैं। यह उपन्यास लम्बाया लम्बाना, शीतलका आकार की जासूसी करारवालीया अच्छा है। इसमें जासूसीकी किछ पहाड़रीके शीर्ष, एकाग्रताओं और अनिर्वाकी करफतार कर "सुश्रीका" और "मनी-का" बान्नी की संशान्त रमचिर्वाकी आशा है, कि सुंदर 'बाह बाह' परछा पढ़ती है। कलकत्ताका पोराके एकलौ पाल या बहुत रहस्य, नाम के जासूस और पोरीका मयानक अच्छा, दार्शनिकानमें भीय्य तमके बापी, एक हीरान संशुस्ती हुटीके लक्ष्मी विचित्र शिरफ्तारी, सुदांवरमें बिनानी आशका बहुत छुसे पढ़पाया गया, महीके सिनारे ही मसखी और ही मसखी जासूसीका एक सुत,— बापि बाते बहुत बाप इत न रह जावं तो बात ही क्या है? इसमें 'सुश्रीका' बाकी सुन्दरीका एक तिनरहा चित्र देखने ही योग्य है। इसके अलावा नीर तो सुन्दर सुन्दर २ चित्र दिये गये हैं। दाम १५) निरद बांधीका ३) ४-



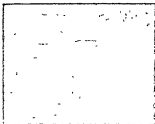
माथामहल

इसमें श्री-पुस्तकोंकी अपूर्व पैयारिची, पादार्थजनक तिलिस्मार्ता, मया-के कड़ाइवी और वचित्र प्रेमका बड़ाही सुन्दर चित्र खींचा गया है, दाम ६)

स्ता-जाट, पल, सम्मन परछा को०, ३७१ अण्डुचीतपुर रोड, कलकत्ता ।

—ॐ— इस्वीरञ्जली ठरु सखिन जासूसी उपन्यास

पाठक प्रतीकः । नामने प्रायः पुराने कथामिसे ध्यानना ठरौया दाठ



सुभा गीना । 'एत इतिहास
कथनी' से गणतन्त्रवादी
एन ठरौया गद्दा ही दोर-
दौरा वा । इना से मोर-
सुम्भसे उष समय सरमाय
गौर प्रजा दोना ही तखु पा
गदी छं । ठरौकि कड़े कड़े
एत शकसीठाठ-वाठ से दोरा
घरधे किरते छे गौर उनी
मोरुके सुसाफिरीया) कथना

(कथना) दर एउने कथीयमें से पाते छे । किन्तु ठम योग विभिन्न दृष्टी
क्याट से कटकेन पातलो दातमें एत खाँसो डेकर साया घन लूठ लेते छे ।

एत उपन्यास गद्दा ही रोषदा गौर जिज्ञासुद ही गौर दाकठोन मीठीको
गद्दी गडौ कर् हाथोंसे उनाकर खूबसी सजा दिया गया है । दाम सिर्फ ३०)

—ॐ— ऐदिकी करारनात —ॐ—

यह एक बडाही रहस्यपूर्ण सचित्र एडिटेडरिन उपन्यासही, एउनाके अग्रपत्र
दासूच मि. रावट एउमाने फ्रान्सकी प्रसिद्ध विद्वीही गौर एाङ्क "इमरो गैरक"
दो कितनी ही बार दडौ यदादुरीके छात्र गिरफ्तार किया था, पर फिर
वो गैरक कराकर उमदी आँखोंमें धूल खींच मानता रखा । इस छात्रुने सारे
दशेयमें इसचल तथा रखी छी । यदांतक, कि समय् गिहर गरीबको नौ
पई बार इससे खालित धीना पड़ा । अन्त में ठेकने किस तरह इस परतु
घर सजा दिखवाई, यह पढ़कर आप दख होजायेंगे—दाम १०) सखिनद २)

नकली रानी— इसमें एक डाकु-खलीकी वीरता, सुदिमाना, बालाकी
गौर दिल्ली आदिका वर्णन बडौ ही बारीकी से
किया गया है । सुन्दर-सुन्दर कई चित्र भी है, दाम सिर्फ १०) २०

पता-बारा, पल,वर्मन प्रेस को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

❀ आदर्श चाची ❀

शिक्षाप्रद सचित्र गार्हस्थ्य उपन्यास ।

हिन्दी-संस्कारमें यह पद्धत ही उपन्यास रूपा है, जिसमें समाज का शिक्षा साप्ताहिक उपकार ही उपलब्ध है। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, सभी इस उपन्यासमें मनोरंजनके साथ ही साथ आदर्श शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। प्रायः देखा गया है, कि स्त्रियोंकी मननमें पढ़-पढ़ें सुखी, पढ़-पढ़ाओ परिवार तृप्त-नरुप्त हो गये हैं, बाप बैठेसे उठ गया है, माई माईमें पिरगयता हो गयी है, चाचा मतौल्लिमें बेर जा गया है और बना बनाया शास्त्रका घर खाममें मिल गया है। यह उपन्यास इसी प्रकारकी छटनाओंकी सामने रखकर शिक्षा



दाया है। एकचार इस उपन्यासको पढ़ लेनेसे चापसके बेर-भाव और एरासक-वक्ता नाश ही जाता है। मूण केवल १), रजमो निबंद १॥)

इसमें ६ चीन चित्र हैं।

❀ राजसिंह ❀

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास ।

इसमें वीर-शिरोमणि महाराजा राजसिंह और सचाठ चोरकूजियके एक वीरव्य युद्धका वचन है, जिसमें साप्ताहिक वीरोंकी प्राणाहुति हुई थी। इस महायुद्धमें राजसिंहने दुर्दान्त चोरकूजियकी बड़ी बहादुरीसे पराजित कर 'कप-मगर' को राज-कन्या 'सखल-कुमारी' को बन्ध-रक्षा की थी। इसमें बाह-प्राची और राजपूतों वरानोंकी बह-बेटियोंके बहुरंगी चित्रोंकी दीप्तिकर तथियत कल्पक छठती है। दाम २) रंजीन निबंद २) रजमो निबंद ३) चीका २३)

पता-आर, पल, बस्सन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

शोषित-सर्जना घटनापूर्ण सचित्र काव्यमा उपन्यास ।

सन् १८५७ ई०के सिद्ध मजानक ‘गदर’ (पसुद) ने एरुपी दिन, एरु



पी समय और ७कपी हलमें एरु
“भारतवर्ष” में प्रथम विद्रोहात्मि
भैना ही थी, सिद्ध गदरने ‘पयसी
भौषणतासे वहे वद प्रतापी दारींके
दिश दफला दिये से, शिलने दिहो,
कागणर बिदूर, मेरठ, कागो पीर
एकर पादिकी सुविमाल ‘सम्भ-
दीश’ में परिगत कर दिवा घा,दिश-
नेभारत-सुरकारकी परिमाराश दिगी
कौशोंकी विद्रोपी बना दिवा घा,
सिद्ध भारतीय प्रथम विद्रोधान्त-
की विकट दुंकारने सुदरुप्यापी
“दहलेख” में भी भवानक दफणत
मया ही थी, उसी प्रसिद्ध “गदर”
या “सिपाही-विद्रोह” का इसरी
पूरा हाल दिवा गया है । साथ ही

पदर-सम्भन्धी सुन्दर सुन्दर ७ पि भी है । दाम २, सुनचली शिखर २१) ८०

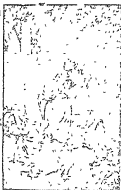
पीतलकी मूर्ति सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास ।

यह उपन्यास “लखन-रक्षक” के प्रख्यात नामा लेखक मिटर जाक
विलियम रेनासट्रकका लिखा है । इसमें “पीतलकी मूर्ति” नामक भवानक
तिथिसकया समुत्त रक्षक, रोमनदेशलिक प्रादिकियोंके भयङ्कर सथाचार, प्रेम,
पोषिमिया, ठकों, रक्षक-महक और कर्मन्धीकी भीषण सहाएयां, “बायसा”
और “सैतानी” का विलक्षण भेद, “सैतान” और पादिकी सभाटका
बायस्य जनक युद्ध, प्रादि वारीं वही खूबीसे लिखी गई है, साथ ही वही ही
बावपूर्ण ३० शिख भी दिये गये हैं । दाम ३ भागांका सिर्फ ७१) सचिन्द ८३)

पडा-आर, पल, सम्मन एण्ड को०, ३७१ अपर बीतपुर रोड, फलकता ।

❀ भीषण डकैती ❀

इस उपन्यास रस-साहित्यकी गौरवलाभ, जाम्बुसौ उपन्यासकी एक बात पर्यन्त प्रसिद्ध ‘जाम्बु पापकीड़ी है’ की विभिन्न श्रेणियोंका अश्लील प्रतिबिम्ब है । इसमें “मिटर रौटल गड” नामका एक अमेरिकन जाम्बुसकी अपूर्व चारैवाइयोंका ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पृष्ठका एकबार पठकर फिर छोड़नेकी रज़ा ही नहीं होती । इस उपन्यासकी अनेक परिच्छेद, अनेक पृष्ठ, अनेक पैराग्राफ, अनेक पंक्ति और अनेक अक्षरोंमें विपणनी और मनोरंजनात्ता झूठ झूठकर, बनी बनी है । साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं । इसमें इस उपन्यासकी गद्यान भाषिका ‘मिसेस लीबापपी’ का एक ऐसा ‘अपूर्व तिनरला चित्र’ दिया गया है, कि देखते ही मन पाश्चिमी निकल जाता है । राम सिंग १७) समिन्द २) ५-



❀ डाक्टर साहब ❀

सचिन
जाम्बुसौ उपन्यास

इसमें कथनकी विद्यातन्त्राभा अक्षय-चिकित्सक, अथवा समतायापी ‘डाक्टर क्यू’ की उस शोधन रसायन-विद्याका समस्कार है, जिसके द्वारा यह बातकी बातमें जिन्हे ही ‘सुदा’ और सुदेकी ‘विद्या’ बनाकर प्रथम अक्षित मतलब नाठ होता था । इस डाक्टरकी गुण अत्याचारीसे सारा बहुश्रेष्ठ ब्रह्म अठा था और उसे सोन “जाहू-विद्या” “भूत-विद्या” आदि समझने बने थे । अन्तमें यदाके विद्वान्त्रा अक्षिवाली सुमन्दिह जाम्बुस ‘मिटर बुंक’ से विश्व प्रकार लभका रस-मेदकर अथवा ‘डाक्टर क्यू’ की गिरफ्तार किया है, यह पढ़नेकी योग्य है । सुन्दर सुन्दर दो चित्र भी दिये गये हैं । राम सिंग १७)

पता-आर, पल्ल, धर्मन एण्ड को०, ३७१ अंपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

जासूसी चक्र सचित्र जासूसी उपन्यास

विषयकनी एष उपन्यासमें {यन्त्रोंको पारसी-समाजका बड़ा ही विषय



रहस्य खोजा है। कुछ दिन हुए बम्बईके 'हरमसजो' नामक एक घनाछा पारसी सज्जनके खजानेमें विषय रूपसे एक लाखकी चोरी हो गयी। साप ही खुली सड़कपर भाड़ागाड़ीमें एक पारसी युवक जानसे मार डाला गया। इन दोनों घटनाओंको लेकर बम्बईमें बड़ी हलचल पड़ गयी। खून और चोरीके इत्जाममें "रक्षमजो" नामक एक पारसी गिरफ्तार हुआ। इन दोनों घटनाओंको जांचते लिये सर्कारकी ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूमधामसे होने लगी, फिर कैसे चार दस जासूसोंने सुन्दरी 'रतनबाई'की सहायतासे पताचगावा, कैसे निरपराध रक्षमजोने अदासतण

छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय, भीषण व्यक्ति बजारोंमें गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें इस खूबीसे लिखी गयी हैं, कि बिना समाप्त किसे श्रमक छोड़नेको इच्छा ही नहीं होती। खून, चोरी, आल, जुआ-चोरी, सभो चार्स दिखलाई गयी हैं। हाफ्टोनके ५ चित्र भी हैं। मूल्य २॥ सजिन्द ३)

❖ सचित्र गो-पालन-शिक्षा ❖

इसमें गो बछड़ोंको पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बनानेवाले पदार्थोंको बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें मालामाल हो जा सकता है। गाय आदि पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये, २ चित्र भी दिये हैं। दाम केवल ॥) आना।

पता-आर, एल, वर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।



नराधम

सचित्र
जासूसी उपन्यास ।

इसमें एक मिनट्टोही डाकघरकी स्वायें-परताका बड़ा ही सुन्दर खींचा गया है। डाकघरका, मिनट्टोही खींचे हुए-प्रथम कर पन्तमें उसका खून करना, उपनी दूधरी प्रेमिकाके खूनको पालथीत करते समय डाकघरके मिनट्टा छिपकर सुनना और फिर उसे घमसाना, डाकघर और उसकी प्रेमिकाका मिनट्टो हीखा ईश्वर फाँसीपर लटकाना, मिनट्टोका ब्रह्म का प्रकाश मान्य हो जाना, दो चारोंका लेव खींच ईश्वर मय दिख-पाकर डाकघरकी घमसाना, डाकघरका एकको महीमें खींचकर नार छाडना, दुर्गा प्रार्थना एकाएक बिन्दा हो जाना, आदि बहुत आश्चर्यचालु पाठें लिखी गयी हैं, दाम सिर्फ १७ फिल्लर पंथीया ॥७॥



शशिबाला

शिक्षाप्रद
जासूसी उपन्यास

इसमें एक सचरिखा खींचे किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूर-दपनी कुपधमानी खामी और कितनीही मनुष्योंकी सुपधमानी बनाया है, बढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारखामोका तिलिखी मठ, प्रभुत चारुरी, वीरसेनकी निरालय वीरता, शशियालाकी अद्वितीय श्रुत्यादिका ज्ञानपढ़कर आप अवाकर रह जायेंगे। यह शिक्षाप्रद उपन्यास प्रथम, बड़े बड़े सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ १७ पाना ।

जासूसी पिटारा--

इसमें बड़े ही रहस्य जनक १ जासूसी
१--(१) गुप्तकारमचल, (२) पूर-वैभव, (३) विचित्र मौजरी, (४) अस्सी हजारकी बीरी, (५) खी है वा राबसी? दाम

पता--आर, पल, वर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर जीतपुर रोड, कलकत्ता

ऐय्यारी और
तिलिस्मका

पुतलीमहल

मशहूर
उपन्यास ।

कुंवर चन्द्रसिंहका अपने ऐय्यार हीरासिंहके साथ शिकार खेलने जाकर "पुतलीमहल" नामक तिलिस्ममें गिरपतार हो जाना, तिलिस्मकी बहुत सी कोठरियाँकी तोड़ना, तिलिस्मी दारोगाकी भाँजीका राजकुमारपर मोहित हो जाना, राजकुमारकी खोजमें उनके और चार ऐय्यारोंका तिलिस्ममें पहुँचना, तिलिस्मी शैतानका एकाएक जमीनसे पैदा होकर राजकुमार वगैरहकी 'तिलिस्म जालन्धर' में कैद कर देना । राजा वीरेन्द्रसिंहका बायाँपूरपर चढ़ाई करना । दोनों ओरकी वैशुमार फौजोंकी भयानक लड़ाइयाँ, राजा वीरेन्द्रसिंहकी विजय, कुमारके ससुर देवसिंहपर दुश्मनोंकी चढ़ाई, घनघोर संग्राम । किलेके पिछले हिस्सेका एकाएक उड़ जाना । वहीँके वीधोबीध लड़ाई होना, इत्यादि । दाम चारो भागका सिर्फ ३) रुपया



गुलबदन थियेट्रिकल उपन्यास ।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा । नव्याव सफदरगढ़ और जमशेदकी भयानक लड़ाइयाँ, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका धीपधे बाधा देना । जमशेदका गुलबदनकी उड़ा लेजाना, गुलका टूट जाना और गुलबदनका जदोंमें गिर पड़ना, आदि बातें लिखी गयी हैं । दाम सिर्फ १॥)



महाराष्ट्र-वीर

सन्धि ऐतिहासिक
उपन्यास ।

यदि आप महाराष्ट्र-कुल-भूषण कृतपति शिवाजी और सम्राट औरंगजेबका इतिहास-प्रसिद्ध भूषण संग्राम देखा चाहते हैं, यदि आप महाराष्ट्र शिवाजीके कैद होने और विलक्षण ढङ्गसे किलेसे निकल भागनेका अद्भुत समाचार जानना चाहते हैं, यदि आप महाराष्ट्र-रमणियोंकी वीरता, बुद्धिमत्ता और धार्मिकताका आदर्श चरित्र पढ़ना चाहते हैं, यदि आप औरंगजेबके दरबारका गुप्त-रहस्य जानना चाहते हैं, यदि आप राजनीतिकी बुद्धि और रहस्यजनक बातें सुनना चाहते हैं, तो इसे अवश्य पढ़िये । दाम १)

पला-आर, पल, वर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।

सञ्चामित्र ६ जिन्देकी लाश

यह उपन्यास बड़ा ही रहस्यमय, अत्यंत विद्याप्रद और हृदयवादी है। एक लघुनिबन्धन अपूर्व स्वार्थ-त्याग, कुटिलोंकी दुष्टता, पातितकी मर्ति और मुत्सेका की बला आदि बड़ी समस्त कथानों तिलो बनों हैं। दाम ॥२॥ या

जीवनमुक्त-रहस्य

शिवाग्रद लक्षिण सामाजिक नाटक ।

दान, भक्ति, वैराग्य, राजनीति, धर्मनीति और समाज-वीरिणे का (आर्योंकी पौर कोसमेवाला, कुटिलों, पैमानों और बालसाजों का खोदनेवाला, पातित-धर्मकी बला धरनेवाला और स्वार्थ-त्याग का बला हरे गेवाला यह नाटक इतना मनोहर, हृदयवादी, विद्याप्रद और अनन्य है, कि इससे यह प्रेमेसे बहुधा सैकड़ों कहकी सांसारिक दुःखोंमें आराम हो है। अनन्य बलिसे। दाम सिना सिद्ध ॥ एक स्थान सिद्ध वेदीय ॥ ५॥ एका ।

वीर-चरिताधरणी

एक ही निबन्धित वीर-वीरादगाओंकी १६ वीर-कथानिका ही मदी (१) वानो हुमायूनी, (२) वानी लक्ष्मीपति, (३) वानाएर पति, (४) वामद (५) वीर-वाली पता, (६) वीर-वालाय वीर वीर-नारी, (७) राधाकृष्ण (८) पृथ्वीराज, (९) बाकलचन्द्र, (१०) राघव, (११) सिद्ध वीर-रघुवीर (१२) लखौर, (१३) नारायण प्रतापसिंह, (१४) लखपति मिवाली, (१५) वामसिंह, (१६) राजपि उषा दसिंह प्रभृति। सुन्दर सुन्दर ४ विना हो है,

टिकेन्द्रजितसिंह

पाठकों! लखीचरी सरौलि अन्तमें "टिकेन्द्रजितसिंह" जैसा वीर-की पाठकवर्षमें इधरा नहीं कथा। इस वीरमें अपने बाहुपति ककड़ों वारे वीर पनीक दुष्टोंमें अब पति। अन्तमें यह वीर लखौरकी कुर्बानि हो, बड़ी वीरतासे हंसते हंसते जाँसी। पर चढ गया। दाम सि २) ५०

पता-भार, फल, धर्मन एण्ड कां०, ३७१ अवर सीतपुर रोड,

महाराजा
रणजीतसिंहका

पंजाब-केशरी

सचित्र
जीवन चरित्र ।

इसमें सिक्ख-धर्मके नेता "गुरु नानक साहब" "गुरु गोविन्दसिंह" और महाराजा "रणजीतसिंह"का जीवनचरित्र यज्ञी खूबीके साथ लिखा गया है। सुन्दर सुन्दर चित्र देकर पुस्तकको शोभा और नौ बढ़ा दी गयी है। दाम ३)

सचित्र यूरोपीय महायुद्धका इतिहास ।

जिस महायुद्धने सारे संसारमें खलबल मचा दी थी, जिस महायुद्धमें एशियाके सारे कारवार चोपट कर दिये हैं, उसी महायुद्धका सचित्र इतिहास एसा है यहाँ दो भागोंमें छपकर तय्यार हो गया है। इसमें युद्ध सम्बन्धी बड़े बड़े ६० चित्र तथा यूरोपका नक्शा दिया गया है। दाम दोनों भागका १०५) ५।

नव-रत्न

शिक्षाप्रद ६ कहानियोंका अपूर्व संग्रह ।

इसमें वर्तमान कालकी सामाजिक घटनाओंपर ऐसी सुन्दर, शिक्षाप्रद, भावपूर्ण और हृदयग्राही ६ कहानियाँ लिखी गयी हैं, कि जिन्हें पढ़कर मन सुग्घ हो जाता है और मनुष्य अपने घरोंसे उन बुराइयोंको दूरकर सच्चे संसार-सुखका अनुभव करने लगता है। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, सभीके पढ़ने योग्य है, दाम सिर्फ १५।

सचित्र लोकमान्य तिलक जीवनी

भारतके राष्ट्र सूत्रधार, देशके सर्वश्रेष्ठ नेता, राजनीतिके आचार्य, शक्य ही अवतार, ब्राह्मणोंके आदर्श, लोकमान्य, सर्व-पूज्य और परम आत्मत्यागी स्वदेशभक्त पं० बाबू गंगाधर तिलकको यह सचित्र जीवनी प्रत्येक देशभक्त के पढ़ने योग्य है। इसमें उनके जीवनकी समस्त सुख-सुखय घटनाओंका वर्णन है और आरम्भमें उनका एक दर्शनिय तिनरंगा चित्र दिया गया है। उसको सद्बुद्धिवादीका भी चित्र दिया गया है। पहली बारकी छपी २००० कापियां हाथोंहाथ बिक जानेपर दूसरी बार फिर छपी गयी है। इस बार बहुत बार्ते बढ़ा दी गई है! मूल्य १) देशमी जिल्द बंधीका १॥) रुपया

बता-आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ३

साहसी-सुन्दरी • समुद्री डाकू

रहस्यमय सचित्र जासूसी उपन्यास ।

जासूस-सम्राट मिस्टर ब्लेकफे जासूसी घटनाओंसे भरे उपन्यास सारे सप्ताहों में लिखते हैं और लोग उन उपन्यासोंको ऐन्द्रजालिक उपन्यास बताते हैं । वास्तवमें वह बात ठीक है, क्योंकि जो व्यक्ति दूसरों उनका कोई उपन्यास पढ़नेके लिये एक सेना है, वह पढ़ता-पढ़ता तन्मग्न हो जाता है और बिना पूरा पढ़े छोड़ही नहीं सकता । यह उपन्यास भी मि० ब्लेकफेको आश्चर्यजनक जासूसीमें भरा है । इसमें साहसी सुन्दरी जमेसिवाके ऐसे-ऐसे भयानक समुद्री डाकों और चतुर कार्म्य-कलापोंका हाल है, कि जिसके कारण केवल इतना-संस्कार ही नहीं, बल्कि ज्ञान, वर्मनो और जमेसिवाकी सरकारें भी बंग लागी थीं । उन्ही साहसी-सुन्दरीके भीषण दण्ड-जहाजको समुद्री-समुद्री वृम और बारम्बार नवी-नवी दिग्दिग्गोंमें फूटकर जासूस सम्राट मि० ब्लेकफे जिस सच्चाईसे गिरफ्तार किया है, कि फूट कर दारों बंगली काठनी फुटी है । खेरी, लक्ष्मी, उकेरी, जासूसानी, कु-दरायी आदि अनेक रोपू फूटकर देनैवाली लक्ष्मी इसमें आदिने अन्तक भरी हैं । अन्तही रव-दिग्गो सुन्दर-सुन्दर ६ चित्र भी दिये गये हैं । दाम १।।।, सचित्र १।।

* लाल-चिट्ठी *

सचित्र ऐतिहासिक जासूसी उपन्यास ।

आश्चर्यजनक ल्यागरोसे म्ता और लोमहर्षय भीषण कारकोंमें दृष्टा दुष्क-र्य उपन्यास इतना दिलचस्प, इक्ष्वाही और अत्यन्त है, कि पढ़ते-पढ़ते कभी पाठार्थान्वित, कभी रोमाञ्चित और कभी प्रकृत हो जाना पड़ता है । इसमें अन्त-अन्तमें वास्तव-वास्तव एक ऐसा भीषण पदपत्र लिखा गया है, जिसके कारण पन्थ सम्राट अक्षर, राजा वीरबल और राजको प्रायः सभी बड़े-बड़े वर्म-परी बन गये थे । "लाल-चिट्ठी"का ऐसा ऐत-अन्त रहस्य खोजा गया है, कि पाठ भी पढ़कर चकित, स्तम्भित और निमोहित होजाइयेगा । सुन्दर-सुन्दर ६ राष्ट्रीय चित्र भी दिये गये हैं । दाम बिना निन्द १।।।, रेकनी निन्द १।।। है ।

ॐ * रमणी-रत्न-मालाका १ ला रत्न * ॐ

हिन्दी-साहित्य-संसारमें युगान्तरकारी-

सावित्री-सत्यवान

१३ रंगीन चित्रोंसे सुशोभित होकर लोगोंको मुग्ध कर रहा है!

सावित्री-सत्यवान

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

खी पुरुषों, बालक-बालिकाओं और बड़े-बूढ़ोंके पढ़ने योग्य, अपूर्व, शिक्षाप्रद सचित्र और सर्वोत्तम ग्रन्थ रत्न है।

सावित्री-सत्यवान

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

में सती शिरोमणि सावित्री देवीकी वही पुण्यमय पवित्र कथा है, जो युग युगान्तरसे सती रमणियोंका आदर्श मानी जाती है।

सावित्री-सत्यवान

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

की कथा इतनी मनोरंजन, हृदयग्राही और शिक्षाप्रद है, कि जिसे पढ़कर स्त्रियोंका मन प्राण पवित्र हो जाता है।

सावित्री-सत्यवान

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

में ऐसे ऐसे छन्दर, मनोहर और दर्शनीय १३ रंग विरंगे चित्र दिये गये हैं, कि जिन्हें देखकर आँखें तृप्त हो जाती हैं।

सावित्री-सत्यवान

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

की प्रशंसामें कितनेही नामी नामी समाचार पत्रोंने अपने कालमके कालम रंगडाले हैं और मध्य तथा युक्त-प्रदेशके शिक्षा विभागोंने स्कूली लाइब्रेरियोंमें रखने और बालक बालिकाओंको पारितोषिक देनेके लिये मंजूर किया है। दाम विना जिल्द १॥॥, रेशमी जिल्द २॥॥

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड का०,

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

→ ❀ * रामणी-रत्न-मालाका २११ रत्न * ❀ ←
 ०००० * ०००००० * ००००

साहिबा-मनोरञ्जन-साहित्यका सिरमौर-

नूतन-दसयन्ती

→ १३ रंग-बिम्बे चित्रों सहित छपकर तैयार है ←

नूतन-दसयन्ती में परम-धार्मिक राजा पत और सती-विरोधक दसयन्तीकी यहीही इदवपाही पवित्र कथा है ।

नूतन-दसयन्ती कम्पनी-रत्न-पुस्तक-मालाकी शोभा है । जिस पर्ये पाठ पुस्तक नहीं, उसकी भी शोभा नहीं ।

नूतन-दसयन्ती में पाठक-पाठिका, ली-पुरुष और बूढ़े-बच्चे सबके लिये मनोरंजन और शिक्षाकी प्रचुर सामग्री है ।

नूतन-दसयन्ती पढ़कर डरर बीर, धीर, सयमी और सदाचारी होंगे और चित्रों पवित्रता तथा धर्म-परायणता बनेंगी ।

नूतन-दसयन्ती भाव, भाषा, लपार, सफाई और चित्रोंकी बहुलताके विचारसे हिन्दीमें नयी तथा अपूर्व पुस्तक है ।

नूतन-दसयन्ती में लेखकने पेशी कुशलता दिखायी है, कि पाठक विना पुस्तक समाप्त लिये छोड़ही नहीं सकते ।

नूतन-दसयन्ती का मूल्य केवल १।।, रंगीन चित्रवालीका २।। और इन्डरी रेपमी लिलद देवीका २। समा है ।

३३३ पता—धार. एल. वर्धन एरड की., ३
 ३३२, अपर धीतपुर रोड, कलकत्ता ।

ॐ "रमणी-रत्न-माला" का तीसरा रत्न ॐ

सचित्र सीता सचित्र

अद्भुत छटा और अनूठे रंग-ढंगसे
द्वारा छपकर तैयार है।

सक्ति— हिन्दू-बालक-बालिकाओं और गृहलक्ष्मियोंके पढ़ने योग्य अपने
ढङ्गका पहला और सर्वोत्तम ग्रन्थ है।

सक्ति— सारी रामायणका सार, उत्तमोत्तम शिक्षाओंका भांडार और
हिन्दी साहित्यका छल्लित शृङ्गार है।

सक्ति— की भाषा तथा रचनाशैली अति सहज, सरस, उच्चरित और
कविताकी भाँति मनोहर है।

सक्ति— के पढ़नेसे एकही साथ इतिहास, पुराण, काव्य, नाटक, उपन्यास
और नीति-ग्रन्थका आनन्द आता है।

सक्ति— प्रत्येक हिन्दू-रमणीके हाथमें रहने योग्य पुस्तक है और इसकी
शिक्षाओंका अनुकरण उनके लोक-परलोकको धनानेवाला है।

सक्ति— राजनीति, धर्मनीति, समाजनीति और गार्हस्थ्यनीतिको
कंजी है। इसे पढ़नेसे घर-घरमें सुख शान्तिका निवास होता है।

सक्ति— कागज, छपाई और चित्रोंकी बहुताकी दृष्टिसे हिन्दीकी अद्वि-
तीय पुस्तक है। इसमें १० बहुरंगे और ५ एकरंगे चित्र हैं।

सक्ति— बहू-चेटियों और बालक-बालिकाओंको उपहारमें देने योग्य
सर्वाङ्ग-सुन्दर अमूल्य ग्रन्थ-रत्न है।

सक्ति— का मूल्य केवल २१) २०, रङ्गीम जिल्द २१।) ५० और छानहरी
रामो कपड़ेकी जिल्द बंधीका केवल ३) ५० है।

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

३७१ अमर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

“रामणी-रत्न-माला” का ४ था खंड

साहित्य-संसारका सर्वोत्तम शृंगार !

जारी जगत्से प्रशंसित और रंग-बिरंगी चित्रोंसे सुसोभित

शकुन्तला

अनूठी सजधजसे दुबारा छपकर तैयार है।

शकुन्तला—संसार-प्रसिद्ध महाकवि कालिदासके अमर-व्यासों सम्पुट का अमूल्य उपनिषद्का उपाख्यान रूपमें हिन्दी-भाषान्तर है।

शकुन्तला—को पढ़कर जर्मनीके महाकवि “गेटे”ने मुक्तकमलसे कहा कि यदि स्वर्ग और मर्त्यकी समस्त बाधाएँ पृथ्वी स्थानपर देखनी हों, तो “शकुन्तला” पढ़ो।

शकुन्तला—उपाख्यानको एक-एक पंक्ति कवित्व और कल्पना-कौशलसे परिपूर्ण है, जिसे पढ़ते-पढ़ते चित्त रन्मय होजाता है।

शकुन्तला—शाम्पत्य-स्नेह, नारी-जंगल्य, सती-वर्त्मन और विद्ययात्रे में अमूल्य उपनिषद्का उपाख्यान दुबारा उल्लेख और समुत्पन्न रूप है।

शकुन्तला—हिन्दी-साहित्यका सर्वोत्कृष्ट-सुन्दर ग्रन्थ है। इससे उपनिषद् का अमूल्य उपनिषद् और कालिका ध्यानन्द एक साथ प्राप्त होता है।

शकुन्तला—प्रत्येक बालक वासिका, ली पुत्र्य और पढ़े-पूरेके पढ़ने वाले को अमूल्य उपनिषद्, हृदयप्रादी और शिक्षाप्रद पुस्तक है।

शकुन्तला—म ऐसे-वैसे सुन्दर, मानसुषां रचोन कित्त लगाये गये हैं, कि जिनमें देवकी पौराणिक कालकी समस्त चरित्रों का एक-एक भाँति आदर्शके सामने मानने लायकी है।

एकता होनेपर भी नृपय १) लुनीन विन्द २) और रेणुमी जिल्द ३) ४)

पता—आर० एल० वर्त्मन एण्ड को०,

३०१ अण्डर वीत्तपुर रोड, कलकत्ता।

“रमणी-रत्न माला” का ५ वाँ रत्न

हिन्दी-महिला-साहित्यकी मुकुट-मणि

→ पतिव्रता रमणियोंकी प्यारी पुस्तक ←

चिन्ता

अनेक तिनरंगे, दुरंगे और एकरंगे चित्रोंसे
सुशोभित हो दुवारा प्रकाशित हुई है।

चिन्ता- देवलोक और मर्त्य-लोकका प्रत्यक्ष चित्र दिखलानेवाली
शिक्षाप्रद, सुललित और हृदयग्राही अपूर्व कथा है।

चिन्ता- में सती शिरोमणि “चिन्ता” और न्यायपरायण धर्मात्मा
“नृपति श्रीवत्स”को सुगमययी कथा पढ़कर मनुष्यको सुखके
समय आनन्द और दुःखके समय शांति प्राप्त हाती है।

चिन्ता- की कश्यप-कथा सुनकर धर्म-राज “युधिष्ठिर”को “चिन्ता”
दूर हुई, मनमें धैर्य बढ़ा और वनवासका दुःख न व्याग।

चिन्ता- के अपूर्व धर्मानुराग, उज्वल यतोंत्व और अविचल धैर्यकी
कथा पढ़कर आत्मामें अलौकिक बलका सञ्चार होता है।

चिन्ता- की अद्भुत कथा प्रत्येक पतिव्रता बहू-बेटी, कुल-नारी और
कुमारी-कन्याके पढ़ने तथा अनुकरण करने योग्य है।

चिन्ता- की भाषा बड़ीही रसीली और ऐसा सरल है, कि छोटे-छोटे
बच्चे और कम पढ़ी-गलवा स्त्रियाँ भी उसे समझ सकती हैं।

चिन्ता- का मूल्य केवल १॥ ६०, रङ्गीन जिल्दका १॥॥ रुपया और
सुनहरी रेयामी कपड़ेको जिल्दका २) रुपया है।

पता—आर० एल० वम्मन एराड को०,

३७१ अपर चाँतपुर रोड, कलकत्ता।

ॐ रमणी-रत्न-मालिका इति रत्न ॐ

शहर-प्रिया, गरुड-जननी, भगवती-

सती-पार्वती

१२ चतुर्गे चित्रों सहित बड़ी सज-धजसे छपकर तय्यार है।

सूक्ती-पार्वती—में शहर-प्रिया, गरुड-जननी सती-पिरोमणि भगवती
के दोनो अवतारोंकी कथा बड़ीही सरल, सरल, सुन्दर और सुमधुर भाषामें लिखी गयी है।

सूक्ती-पार्वती—के पहले अवतारमें सतीका वाचप-काल, सतीकी शिक्षा, सतीकी तपस्या, सतीका शिव-दर्शन, सतीका स्वयंवर, सतीका विवाह, दक्षप्रजापतिके यज्ञमें सतीका शरीर-त्याग, शिवके हृत्में द्वारा यज्ञ-विध्वंस और शिवका शोक-प्रकाश आदि कथाएँ हैं।

सूक्ती-पार्वती—के दूसरे अवतारमें "पार्वती" का जन्म, पार्वतीका बाल्यकाल, पार्वतीका शिव-पूजन, नन्दन-भ्रम, पार्वतीकी तपस्या, पार्वतीकी प्रेम-परीक्षा, शिव-पार्वतीका विवाह और गरुड तथा कार्तिकेयकी उत्पत्ति आदि कथाएँ विस्तार पूर्वक लिखी गई हैं।

सूक्ती-पार्वती—शिवपुराण, देवीभागवत, कुमारसम्भव और पद्म-पुराण आदिके आधारपर लिखी गयी है और उपमो-त्तम कठना-पूर्ण (२ चित्र देकर इसकी घोभा सौशुनी बड़ा दी गयी है।

सूक्ती-पार्वती—बासक-वासिकाओं और बहु-वेदियोंको उपहारमें देने तथा कन्या-पाठशालाओंमें पढ़ाने योग्य अपूर्व पुस्तक है, क्योंकि इसके पढ़नेसे श्री-धर्मकी पूरी शिक्षा मिलती है। मूल्य केवल २, रंगीन जिल्द २) और सुन्दरी रेशमी जिल्द २।) है।

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

३७१ अपर जीतपुर रोड, कलकत्ता।

सती बेहूला

१३ खूब-बिरङ्गे चिन्तों सहित उपकार वैचार है।



इसमें भारतवर्षके मृतकालकी दो सतियोंके पवित्र चरित्र यदीही सुन्दरताके लिये लिखे गये हैं। इसमें पहली सती "ममसा देवी" हैं, जो देवादिदेव महादेवकी मानसिक पुत्री, महर्षि-वत्सलरूपी धर्म-पत्नी और नाग-लोककी शासन-कर्त्री हैं। इसकी कठिन तपस्या, प्रगाढ़ पति-भक्ति और अद्भुत-आत्म-त्याग देखकर अवाक रह जाना पड़ता है। दूसरी सती—इस उपाख्यानकी प्रधान नायिका "सती बेहूला" हैं, जिनका जीवन-वृत्तान्त यदीही अन्तः, धारण्य-सतक, कीबहुल-वर्षक, कल्याण-पूर्ण और चिन्तार्थक है।

सती-विरोधिये "सावित्री"की अति बेहूलाने भी अपने मरे हुए पतिको जिला लिया था। परन्तु "सावित्री" और "बेहूला" की कार्य-प्रयालीमें बहुत अन्तर है। "सावित्री देवी" ने अपने कठोर पातिव्रत-धर्मके प्रतापसे एकही रातमें स्वयं यमराजको बरास्तकर अपने पतिका प्राण-दान पाया था और "बेहूला" अपने मृत-पतिका शरीर कदली-खम्भके पेड़पर रख, नदीमें बहती-बहती छ महीने बाद स-शरीर स्वर्गमें पहुँची थी और वहाँ उसने तैलीस कोटि देवताओंको अपने अद्भुत नाच-गानसे प्रसन्नकर पतिकी प्राण-भिज्ञा पायी थी! नदीमें बहते-बहते उसके पतिकी लाश लड़ गयी थी, इसमें कीड़े पड़ गये थे और अन्तमें मांस गल-गलकर गिर गया था! परन्तु हतनेपर भी "बेहूला" ने उसे न छोड़ा! उसने पतिकी हड्डियाँ धो धोकर अँधेरे में बांधलीं और अन्तमें देव-लोकसे पतिको जिलाकर ही लौटी! यही नहीं, बल्कि वह अपने पहलेके मरे हुए छ बेटोंको भी जिला लायी और इस प्रकार उसने अपनी छहों विधवा जिदानियोंको पुनः सभवा बना दिया! जिस लीने ऐसी महान सतीके अविनाश चरित्रसे कुछभी शिक्षा न ग्रहण की, उसका जीवनही व्यर्थ है। (१५-विंसे १६ चित्र भी हैं, दाम २५), रंगीन चित्र २५) रंगीनी चित्र २५।) १

आर० एल० बर्मन एण्ड को०, ३६१ अपर सीतपुर राड, कलकत्ता।

रमणी-रत्न-मालाका ८ वाँ रत्न

हिन्दी-साहित्य-संसारका गौरव-रवि

हरिश्चन्द्र-शैल्या

उत्तमोत्तम २६ रंग-विरमि चित्रों सहित छपकर लैष्यार है ।

हरिश्चन्द्र-शैल्या हिन्दुओंका कीर्ति-स्तम्भ, सती स्मृतियोंका सौ-

हरिश्चन्द्र-शैल्या माय्य सूय और ब्राह्मण-वात्सिकाओंका विद्या पुत्र है ;

में परम प्रतापी, सत्यवादी, राजा "हरिश्चन्द्र" और

हरिश्चन्द्र-शैल्या सती-विरामाश्रय 'शैल्या'की ऐसी सुन्दर, चित्ताग्र,

कथा लिखी गयी है जैसी आज तक किसी पुस्तकमें नहीं मिलती ।

हरिश्चन्द्र-शैल्या में हरिश्चन्द्रके पूर्व-जन्मोंका पूरा हाल, सन्धि वि-

धामित्रकी घोर तपस्या, महाराज स्वयं सत विघ्नो

का लक्ष्मीर स्वर्ग गमन आदि कथाएँ सही ढंगके साथ लिखी गयी हैं ।

हरिश्चन्द्र-शैल्या में राजा "हरिश्चन्द्र" और रानी 'शैल्या'का पालन

जीवन, पुत्र-प्राप्ति, विधामित्रका कोप, हरिश्चन्द्रका

स्वर्ग-दान, हरिश्चन्द्र शैल्याका पुत्र सहित मिलानी बेचमें काटी

जाना, शैल्याका ब्राह्मणके हाथ और राजा हरिश्चन्द्रका पागडालके

हाथ पिककर विधामित्रकी वृत्तिया चुकाना, सर्गवासने रोहितारव-

ली मृत्यु । उसका मृतक शरीर लेकर रानी शैल्याका मनबदल जाना,

सत्यवादी हरिश्चन्द्रका अपने आधा कपल माँगना, महाराज इन्द्र विधा-

मित्र और वसिष्ठका प्रकट होकर रोहितारवको मिसाना और हरिश्च-

न्द्रसे जमा माँगकर उन्हें पुनः सत्यप्राप्तिका वरदान देना आदि कथाएँ

ऐसी सुनोते लिखी गयी हैं, कि वृत्तेही बकता है । साथ ही सुन्दर-सुन्दर

रंग-विरमि १६ चित्र देकर पुस्तकको पूरा वायस्करोप बना दिया गया है ।

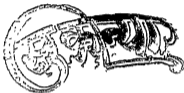
मूल्य २॥ ६० रंगीन जिल्द २॥॥ और रेडमी जिल्द ३) ६० ।

आर०पब० बर्मन एण्डको०, ३७१ अपर जीतपुररोड, कलकत्ता

छप गया !

छप गया !!

हिन्दी साहित्यका शृंगार !
भारतीय महिलाओंका कण्ठहार !
रमणी-रत्न-मालाका ६ वाँ खण्ड



रंग-विरंगे = चित्रों सहित, बड़ी सज्जवजसे
छपकर हाथोंहाथ विक रहा है ।

इस पुस्तकमें सूर्यवंशीय महाराजा शर्याल्लिकी
सावित्री-समा कन्या सुकन्याकी अपूर्व, आश्चर्य-जनक कथा
उपन्याससे भी अधिक चित्ताकर्षक रूपमें लिखी गयी है ।

यह कथा क्या है, मानो करुण-रचनाका दर्शनीय
स्रोत, अज्ञानरुत अपराधका हृदय-विकम्पी प्रार्थाघट और
पातिव्रत-बलके दुर्दमनीय प्रभावका अद्भुत समत्कार है ।

पुस्तक उपहार और प्राइज़में देने योग्य है । मूल्य
साढ़ी जिल्द १।) रमणी जिल्द १।) रेशमी जिल्द १।।) व०

पता—आर० एल० बर्मन एण्ड को०.

३७१, अमर बीतपुर रोड, कलकत्ता ।

हिन्दी-संसारका जगमगाता हुआ हीरा



रंग-विरंगे २० चित्रों सहित छपकर तैयार है

यदि आप मायाकी झबोली छटा, धर्मानकी धनधोर घटा और पुस्तक प्रतिमाकी मध्य भेष-भाषा देखना चाहते हैं, यदि आप प्राम्दल-प्रेम, निर्मल ज्ञान, एकान्त अदुराग और अतुल उपदेशका आगार सूटना चाहते हैं, तो इस पुस्तकको अवश्य पढ़िये।

जो भक्ति बिकट गिरि-गुहाओंमें ज्पाद खगानेसे, जो ज्ञान धर्मों साधु-महारमाओंको सद्गति करनेसे और जो कर्म अनेकानेक कर्म-वीरोंका पूज्य करनेसे भी कठिन्तासे प्राप्त हो सकता है, वह केवल इस पुस्तकका पाराशय करनेसे सहजही मिल सकता है।

धर्म-धर्म, आचा-विचार, रीति-नीति और नप-नप आदिके गूढ़ तत्वोंको समझाने लिये यह पुस्तक अद्वितीय है। क्या राज-धर्म, क्या प्रजा-धर्म, क्या पितृ-धर्म, क्या पुत्र-धर्म, क्या पति-धर्म, क्या पत्नी-धर्म, सबका निचोड़ इस पुस्तकमें भर दिया गया है।

यदि आप दौपहीसी वीर रमणी, सावित्रीसी पतिप्राया नारी, दम-वन्गीसी पतिव्रता स्त्री, मैत्रेपीसी मङ्गवादिनी महिषा और सीतासी सती देवीका अनुपम आदर्श एकही मन्थी-वज्रमें देखना चाहते हैं, तो बिना विलम्ब "महासती महात्म्या" रंगा देखिये।

यह पुस्तक उपन्यासकी तरह रोचक, धर्म-शास्त्रकी तरह उपादेश, कर्म-शास्त्रकी तरह आचरणिक और नीति-शास्त्रकी तरह पठनीय है। श्री-पुरुष, शासक-कुल, परिदल-मूर्ख सभी हस्तसे अन्धका साथ उडा सकते हैं। शासक-शासिकाओंको उपहारमें देने और कन्या-पारदाशास्त्रोंमें पढ़ानेके लिये यह पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है। रंग-विरंगे सुन्दर-सुन्दर २० चित्र भी दिये गये हैं। वाम-१॥), रंघीन विन्दका २) और रेखमी विन्दका सिर्फ १।) ६० आर० पल० बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चौतपुर रोड, कलकत्ता।

→ ❁ सादर प्रत्य-मालाया रत्ना प्रत्य ❁ ←

हिन्दी-काव्य-जगत्का उज्ज्वल नक्षत्र-



वीर-रत्न-पूर्ण शिक्षाप्रद लक्ष्मि चरित-काव्य है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ बड़ी अर्थ, सुन्दर, लक्ष्मि और मुर्दोमें भी नयी जान
 ❁-+3117-18-+ ❁ कालनेवाला शिक्षाप्रद चरित काव्य-ग्रन्थ है, जिसकी
 उच्चता हिन्दी-संसारने मुद्रणमाझे स्वीकार की है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ की प्रत्येक कविता देश-भक्ति, धर्म-प्रोत्ति और वैदिक
 ❁-+3097-20-+ ❁ हृदयकी समीच चिन्ता देनेवाली है। इसकी कविताएं
 स्या है, गिरे हुए देशको उठानेवाली मुजाफ है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ के पहले समी प्रारंभ: स्वतन्त्रीय, वीर फेरी, लक्ष्मि-
 ❁-+3108-22-+ ❁ कुल-तिलक "महाराजा प्रतापसिंह" की वीरता, हृदय
 और स्वदेश-हितेपिताका जीता-आमता चित्र है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ के दूसरे रत्नमें वीर-वालकों, तीसरेमें वीर-समर्थियों,
 ❁-+3114-24-+ ❁ चौथेमें वीर-माताओं और पांचवेंमें वीर-पत्नियोंको
 धरिता और आदर्श कार्योंका सुख गान है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ ही एकमात्र ऐसी पुस्तक है, जिसे पञ्चर देशकी प्राचीन
 ❁-+3120-26-+ ❁ वीरत्व गौरव मनुष्यकी आंखोंके सामने वाचने लगता,
 उसे कर्तव्य-पथमें प्रवृत्त होनेको उरसाहित करता है।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ में मोटे वैदिक पेपर पर छपे हुए ३२६ पृष्ठ, रत्न-चित्रों
 ❁-+3126-28-+ ❁ २१ चित्र और वीर-वीराङ्गनाओंके २६ जीवन-चरित्र हैं।

कीर्ति-पञ्चरत्न - ❁ का मूल्य बिना जिल्द २।।।) ६०, रत्नीन जिल्द ३) ६०
 ❁-+3132-30-+ ❁ और सुन्दरी रेशमी जिल्द बँधीका ३) स्या है।

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

हिन्दू-जातिका गौरव-स्तम्भ, सचित्र, हिन्दी

महाभारत

२२ रंग-चित्रों से सुशोभित होकर हिन्दी-संस्कारों

→ विमोहित कर रहा है ←

महाभारत का विशेष परिचय देना ज़रूरी है, क्योंकि यह हमारा प्राचीन इतिहास है-हिन्दू-जातिका जीवन-साहित्य है, नीतिशास्त्र है, धर्म-ग्रन्थ है और पञ्चम-वेद है।

महाभारत की विशेष शारीक कला सुर्व्यको दीप्त दिखाना है; क्योंकि जगत् भरके साहित्य-शास्त्रके मध्य काजिदे, पर कहीं भी ऐसा अनुपम रत्न न मिलेया।

महाभारत के अठारहों पर्वोंका सम्पूर्ण कथा-भाग इन्में उड़ी ही सरल, सरस, छन्दर, हृदयवाही और मनोरंजक भाषामें उपन्यासके रूपपर लिखा गया है।

महाभारत का इतना छन्दर, सरल, सचित्र और सुजीला संस्करण प्राप्तक नहीं हया। इसीसे समस्त हिन्दी-संस्कारमे मुक्त कबठसे इसकी प्रशंसा की है।

महाभारत में ऐसे ऐसे छन्दर हृदयवाही और भावपूर्ण २२ चित्र लगाये गये हैं, कि जिन्हें देखकर "महाभारत" का ज़माना 'वाचस्कोप' की भांति आँसोंके सामने

मन्त्रमे समता है। मुख्य रंगीन चित्र ३) रु० और रेखनी चित्र ३) रु०

३०१ पता—धार० एल० वर्धन एगड को०,

३०१, अपर बीतपुर रोड, कलकत्ता।

हिन्दी-उपन्यास-जगतका सुकुट-साथि-

११ चित्र

११ रंग-द्विरंगे चित्रों सहित छपकर तय्यार है ।

कर्मक्षेत्र फ्रांसके द्वितीय बर्दिनचन्द्र स्वनामग्रन्थ वायु रामोदर मुद्रोपाध्यायके मर्मसंग्रहे सामाजिक उपन्यास बहता "वर्मक्षेत्र" का मूल, छन्द और मनोमुग्धकर हिन्दी-अनुवाद है ।

कर्मक्षेत्र श्रीमद्भगवद्गीताके पुने हुए उच्च आदर्शोंपर लिखा गया है, अतः वे सामाजिक दुरीतियोंका सुधार, सेवा-धर्मना प्रचार, ग्राह्यजन जीवनका चमकदार, आदर्श चरित्रोंका भावपूर्ण चित्रण उपरोक्त निजाओंका अनुपम आगार है ।

कर्मक्षेत्र में कृषिशास्त्री कृषिशास्त्र, राजनीतिका गुरुत्व, अज्ञानताओंकी दूरारण्य, मरकादी वर्मचारियोंकी स-कृपाच-रिता, मूल्योंकी चान्दनाजियों आदिका पूरा विगृहणन कराना गया है ।

कर्मक्षेत्र को एकवार आचाराणांत पद लेनेसे न-पुत्रको अन्त-रान्ता शुद्ध होजाती है और नीचसे नीच मनुष्य भी कर्मक्षेत्रपत्र होकर समाजका सच्चा सेवक बन जाता है ।

कर्मक्षेत्र श्री- रघु, वृद्ध कर्म सभीके पढ़ने योग्य अज्ञाही मनो-रञ्जक और हृदयवाही अपूर्व उपन्यास है । रंग चित्रों सहित-११ चित्र देखर इसकी शोभा सौगुनी पदा दी गयी है ।
 नाम विना निलद ३। २०, सनहरी-नेयमी कपड़ेको निलद ३॥ २०

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

३७१, अपर चीनपुर रोड, कलकत्ता ।

✦ आदर्श-ग्रन्थ-मालिका ४ था ग्रन्थ ✦

हिन्दी-साहित्यका सर्वोत्तम ग्रन्थ-रत्न-

श्रीराम-चरित्र

३० रंग-चित्रों सहित नये रङ्ग-डङ्ग और मजूड़ी
सज-धजसे छपकर तय्यार है ।

श्रीराम - चरित्र में सारी वास्तविक-रामायणकी कथा, हिन्दीकी
बड़ीही सरल, सरस, सुन्दर और समृद्ध भाषामें
उपन्यासके रंगपर बड़ीही मनोरञ्जकताके साथ लिखी गयी है ।

श्रीराम - चरित्र को पढ़वार आद्योपान्त पढ़ लेनेसे फिर किसी
रामायणके पढ़नेकी जरूरत नहीं रहती, क्योंकि
इसमें भगवान् रामचन्द्रका आदिसे लेकर अन्ततकका जीवन-
चरित्र सब ज्ञान-बोध और विस्तारके साथ लिखा गया है ।

श्रीराम - चरित्र हिन्दी-ग्रन्थ-साहित्यका सर्वोत्तम महान्, चम्पक
हार, शालका मञ्जरी और उत्तमोत्तम उपदेशोंका
आधार है । इसमें काव्य, उपन्यास, नाटक, इतिहास, नीति-
शास्त्र और जीवन-चरित्र, सबका आनन्द एकसाथ मिलता है ।

श्रीराम - चरित्र बालक-बालिका, छोटे-बड़े सबके पढ़ने
योग्य अनुपम ग्रन्थ-रत्न है और इसमें ऐसे-ऐसे
रंग-चित्रों ३० चित्र दिये गये हैं, कि प्राचीन कालके मनोरंजन रूपक
एकत्र वाचस्वरोपकी भाँति आँसोंके सामने लाने समते हैं ।

श्रीराम - चरित्र की छूट-संख्या ५०० है और मूल्य रंगीन चित्रोंका
केवल ३०), समूहरी रंगीन चित्रोंका ६), १० है ।

पता—आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

३४१, अमर बीतपुर रोड, कलकत्ता ।

श्रीकृष्ण-चरित्र

[लेखक—'भारतमित्र-संगपादक' पं० लक्ष्मणनारायण गद्दे]

—३१-६१-७५-१६—

इसमें भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रका सम्पूर्ण जीवन-चरित्र, हिन्दोली सरल, रे-गौर सप्तधर भावार्थमें बड़ेही कच्चे ढंगसे लिखा गया है। यह ग्रन्थ १५ अध्यायोंमें विभक्त किया गया है। पहले अध्यायमें कृष्णवतारके पूर्वकी राज्य-वृत्ति, मत्स्यकी इनत-धीति, श्रीकृष्णका बच-परिचय, श्रीकृष्णका जन्म, कृष्ण-ल्लामका धारण-जीवन और राजसौंके उदवात आदिका वर्णन है। दूसरे अध्यायमें पल्लव-राज्यका धारण, पट्टयन्त्रोंका प्रारम्भ, कंस-धव, उपसेनका राज्यारोहण और श्रीकृष्ण-वल्लरामके गुरु-हृल-प्रवास तककी कथा है। तीसरे और चौथे अध्यायमें पट्टयन्त्रोंकी धम, जरासन्धका आक्रमण, कृष्ण-वल्लरामका अज्ञात-वास, राजसन्धका नाग-मर्दन, हारका-नगरीकी प्रतिष्ठा, शर्मिष्ठा-स्वधर, काल-वन्की चढ़ाई, शर्मिष्ठी-हरण, स्थमन्तक मणिकी कथा, जामवन्तीको प्राप्ति, गदक-मिलन, जमदा-हरण और कृष्ण-सदाना सम्मिलनका वर्णन है। पाँचवेंसे आठवें अध्याय तक श्रीकृष्णका दिग्विजय, जरासन्ध, मिथुपाल और शाक्य-धव, शैलीका पट्टयन्त्र, जयका दरवार, द्रौपदी-सद्य-हरण, पाण्डवोंका वन-वास और जय-स्थापनकी तय्यारोंका वर्णन है। नौवें, इसमें अध्यायमें कौरवों-पाण्डवोंके युद्धकी तय्यारी, श्रीकृष्णकी मलयस्थिता और सन्धि-सन्देशकी कथा है। ग्यारहवें अध्यायमें सम्पूर्ण अठारहवें अध्याय श्रीमद्भगवद्गीता पढ़ीही सुन्दरता और सरल-ताके साथ सच्चिद्रूपमें लिखी गयी है। बारहवें अध्यायमें महाभारतके युद्धका बड़ाही मनोरञ्जक दृश्य दिखलाया गया है। तेरहवें अध्यायमें धर्म-राज्यकी स्थापना, आत्मीयोंका उपकार, धन-शय्या-शायी महात्मा भीष्मका अन्तिम पण्डेय, अनिरुद्धका विवाह, स्वमी-धव और सत्यताकी ससार-विजयिनी शक्ति का गद्दे वर्णन है। चौदहवें अध्यायमें चित्तासिद्धाका विषमय परिणाम, मय-पान-होत्व और पाण्डवोंके संसारकी रोमाण्यकारी घटनाएँ हैं। पन्द्रहवें अध्यायमें गौतम-समासिका हृद्य-विदारक दृश्य दिखलाया गया है। इसके बाद बहुत बड़ा धार है, जिसमें श्रीकृष्ण-चरित्रका महत्व आलोचनात्मक ढंगसे लिखा गया है। सारांश यह, कि इसमें श्रीकृष्णके जीवन-कालकी सभी मुख्य-मुख्य-घटनाएँ जोशके साथ लिखी गयी हैं। यह-बड़े नामी चित्रकारोंके बनाये दृश्यों की रचना भी दिये गये हैं, इस रत्नोत्तम जिस ४१) रु० और १५०) जिस ४०) ।

आर, पल्ल, धर्मन पर ६ को, ३०१ अपरजोतपुर, रोड, कलकत्ता ।

